आज़ादी का अमृत महोत्सव

मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 10 |अप्रेल, 2022| पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

शिक्षा एक महत्वपूर्ण साध्य

सूर्य संवेदना पुष्पैः, दीप्ति कारुण्यगंधने।
लब्धवा शुभम् नववर्षेअस्मिन् कुर्यात्सर्वस्य मंगलम्।।

(जिस प्रकार सूर्य प्रकाश देता है, संवेदना करूणा को जन्म देती है, पुष्प सदैव महकता रहता है, उसी प्रकार नूतन वर्ष आपके लिए हर दिन हर पल मंगलमय हो।)

चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर नवसंवत्सर 2079 की समस्त शिक्षा परिवार को बहुत-बहुत बधाई। इस दिन से आरंभ नवरात्रि के नौ दिन में हम देवी दुर्गा माँ की आराधना कर शक्ति का संचय करेंगे। यह समय शीत ऋतु की शीतलता एवं ग्रीष्म ऋतु की तपन का मध्य बिंदु है। नए पुष्प प्रकृति का शृंगार कर सृष्टि के प्रत्येक जीव को उत्साहित एवं उर्जित कर रहे हैं।

इस माह में गृह परीक्षाएँ, आठवीं एवं पाँचवी बोर्ड की परीक्षाएँ भी आरंभ होनी है। सत्र पर्यन्त आपने जो भी पढ़ा-सीखा है उसको अच्छे से लिखित और मौखिक अभ्यास करें। निश्चय ही आप परीक्षा में स्वयं को बेहतर साबित कर पाएंगे।

किसी भी राज्य की समृद्धि एवं विकास में शिक्षा महत्त्वपूर्ण कारक है। राज्य सरकार ने सदैव ही शिक्षा को प्राथमिकता दी है। माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी ने विधानसभा में बजट घोषणा वर्ष 2022 में 3828 माध्यमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नयन के साथ ही बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बालिका विद्यालयों के क्रमोन्नयन का ऐलान किया है। इसके साथ ही अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के लिए शिक्षकों का पृथक से काडर बनाने की घोषणा की है। सरकार के इन प्रयासों से यकीनन शिक्षा के सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ गुणात्मक सुधार भी होंगे।

हम 14 अप्रेल को भीमराव अंबेडकर एवं महावीर जयंती मनाएंगे। प्रसिद्ध समाज सुधारक, स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री एवं भारतीय संविधान के जनक बाबा साहब को पुस्तकों से बहुत लगाव था। एकाग्रता के विशिष्ट गुण के कारण जिस पुस्तक को वह पढ़ लेते थे, उन्हें सदैव ध्यान रहता था कि कहाँ क्या लिखा है। उनकी यह खूबी सभी विद्यार्थियों को अपने अंदर विकसित करनी होगी। जैन धर्म के 24वें तीर्थकर महावीर स्वामी ने लोगों को सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। पर्व, उत्सवों एवं महापुरुषों के संदेशों से हम भावी पीढ़ी के जीवन को नई दिशा दे सकते हैं। स्वस्ति।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

“माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी ने विधानसभा में बजट घोषणा वर्ष 2022 में 3828 माध्यमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नयन के साथ ही बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बालिका विद्यालयों के क्रमोन्नयन का ऐलान किया है। इसके साथ ही अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के लिए शिक्षकों का पृथक से काडर बनाने की घोषणा की है। सरकार के इन प्रयासों से यकीनन शिक्षा के सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ गुणात्मक सुधार भी होंगे।”

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

मेरा संदेश

शिक्षा प्रगति की धुरी है

यह सर्वविदित हैं कि देश और समाज की असली प्रगति के मापदंड शिक्षित नागरिकों से ही तय होते हैं। अगर कहा जाए कि शिक्षा के माध्यम से ही उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं तो गलत नहीं होगा। शिक्षा के मूल में इसका व्यापक अर्थ यह है कि एक शिक्षित व्यक्ति खुले दिमाग से सही और गलत का फैसला कर सकें। केवल किताबी ज्ञान से शिक्षा के उद्देश्य पूरे नहीं होते इसलिए सरकार सहशैक्षिक गतिविधियों को विद्यालयों का अभिन्न हिस्सा बनाए जाने के लिए प्रतिबद्ध है।

सामाजिक गतिशीलता, आपणी लाडो, कला किट सहित और भी अनेक विद्यार्थी केन्द्रित योजनाएँ हैं, जिनसे संबद्ध होकर विद्यार्थी शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में बेहतर तालमेल कर सकता है। आगामी दो महीने विद्यार्थियों के लिए परीक्षा का समय है। निश्चित रूप से परीक्षा विद्यार्थियों की हैं लेकिन उससे भी बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है। हमें इस बात का गर्व है कि हमारे सम्माननीय शिक्षक हमेशा ही अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाते रहे हैं और विद्यालयों में बच्चों को घर जैसा वातावरण उपलब्ध कराकर सुयोग्य नागरिक बनाने में अपना योगदान देते हैं।

संस्थाप्रधानों से मेरा आग्रह है कि विद्यालयों में स्थापित पुस्तकालयों को समृद्ध करने की कोशिश व्यक्तिगत रुचि लेकर करे तथा बालकों को पाठ्यक्रम के साथ ही अन्य साहित्यिक किताबों से जोड़े जाने हेतु प्रयास करें।

साथ ही मेरा यह भी आग्रह है कि विद्यालयों में खेल सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, अतः उनका सदुपयोग भी विद्यार्थियों के हित में होना चाहिए। बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि शैक्षणिक गतिविधियों के साथ खेलकूद गतिविधियों में भी उनके रुझान को विकसित करने की दिशा में प्रयास करने चाहिए।

शुभकामनाओं सहित.....

Zahida
(जाहिदा खान)

“निश्चित रूप से परीक्षा विद्यार्थियों की हैं लेकिन उससे भी बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है। हमें इस बात का गर्व हैं कि हमारे सम्माननीय शिक्षक हमेशा ही अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाते रहे हैं और विद्यालयों में बच्चों को घर जैसा वातावरण उपलब्ध कराकर सुयोग्य नागरिक बनाने में अपना योगदान देते हैं।”

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

काना राम
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

त्योहारों एवं पर्वों से मिलती है हमें सीख एवं सकारात्मक ऊर्जा

मानव जीवन अनेक विविधताओं से भरा हुआ है। अपने जीवनकाल में उसे अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों व दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है। इनमें वह प्रायः इतना अधिक व्यस्त हो जाता है कि उसके लिए स्वयं एवं समाज के लिए समय निकालना भी कठिन हो जाता है।

इन परिस्थितियों में त्योहार उसके जीवन में सुखद परिवर्तन लाते हैं तथा हर्षोल्लास व नवीनता का संचार करते हैं। त्योहार और पर्व सामाजिक मान्यताओं एवं परंपराओं व पूर्व संस्कारों पर आधारित होते हैं। जिस प्रकार प्रत्येक समुदाय, जाति व धर्म की मान्यताएँ अलग-अलग होती हैं; उसी प्रकार इन त्योहारों को मनाने की विधियों में भी भिन्नता होती है। प्रत्येक त्योहार में अपनी विधि एवं परंपरा के साथ समाज, देश व राष्ट्र के लिए कोई न कोई विशेष संदेश निहित होता है। इसी प्रकार हम महापुरुषों की जयंतियाँ मनाते हैं। इन सभी को मनाने का उद्देश्य एकमात्र यही है कि देश की भावी पीढ़ी संत-महात्माओं एवं महापुरुषों के संदेशों को हृदयंगम कर अपने जीवन को उज्ज्वल बनाकर उनके संघर्षों से प्रेरणा प्राप्त कर सके तथा भारतीय रीति एवं संस्कृति से अवगत हो सके। ये जयंतियाँ समाज और व्यक्ति को जीवंत करती हैं तथा विविधता में एकता की अनुभूति होती है।

2 अप्रेल को चेटीचण्ड, नव संवत्सर 2079, वासंती नवरात्रि पर्व का आगमन होगा जो हमारे जीवन में नवीन ऊर्जा का संचार करेंगे। 10 अप्रेल को मनाए जाने वाला त्योहार रामनवमी हमें भगवान राम के आदर्श जीवन, सदाचार, सहनशीलता, सहृदयता और मैत्री भाव का संदेश देता है। विश्व को अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश देने वाले जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी अहिंसा के मूर्तिमान प्रतीक थे, उन्होंने दुनिया को पंचशील के सिद्धांत बताए- 'सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा और ब्रह्मचर्य।' 14 अप्रेल को भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती हमें सदा प्रेरणा देने वाली होती है। बाबा साहेब का कथन 'बुद्धि का विकास मानव जीवन के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।' यह भी विद्यार्थियों को आत्मसमत करना होगा। प्रेम और करुणा का संदेश देने वाले प्रभु यीशु की याद में हम सब 15 अप्रेल को गुड फ्राइडे मनाएंगे।

मार्च माह में राज्य के विद्यालयों में हर्षोल्लास के साथ वार्षिक उत्सव मनाए गए। मुझे सुखद जानकारी प्राप्त हुई है कि इन उत्सवों में जनमानस, जनप्रतिनिधियों, पूर्व विद्यार्थियों एवं भामाशाहों ने विद्यालयों के विकास एवं बच्चों की हौसला अफजाई में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इन उत्सवों के सुखद परिणाम जल्द ही विभाग को प्राप्त होंगे। सभी का आभार।

मंगलकामनाएँ.....

आपका अपना

(काना राम)

"भावी पीढ़ी संत-महात्माओं एवं महापुरुषों के संदेशों को हृदयंगम कर अपने जीवन को उज्ज्वल बनाकर उनके संघर्षों से प्रेरणा प्राप्त कर सके तथा भारतीय रीति एवं संस्कृति से अवगत हो सके। ये जयंतियाँ समाज और व्यक्ति को जीवंत करती हैं तथा विविधता में एकता की अनुभूति होती है।"

Rajasthan Education Department

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 10 | चैत्र-वैशाख २०७९ | अप्रेल, 2022

प्रधान सम्पादक
काना राम

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
मनीष कुमार गहलोत

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

मेरा संदेश
- शिक्षा प्रगति की धुरी है 3

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- त्योहारों एवं पर्वों से मिलती है हमें सीख एवं सकारात्मक ऊर्जा 4

आलेख
- राजस्थान बजट 2022-23 के मुख्य बिंदू 7
  सुनीता चावला
- नवसंवत्सर का महत्त्व 9
  मधुसूदन व्यास
- राष्ट्र के महानायक डॉ. भीमराव अंबेडकर 10
  पितराम सिंह काला
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर : सामाजिक एवं राजनीतिक सफर 11
  डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी
- बैसाखी महापर्व 13
  सीमा धींगड़ा
- भगवान महावीर के संदेश : आज के परिप्रेक्ष्य में 14
  राजेन्द्र कुमार गोलछा
- विश्व पृथ्वी दिवस 16
  मनोज साँखला
- स्वास्थ्य जागरूकता 17
  देवेन्द्र प्रसाद डाबी
- फाल्गुन के रंगों में रंगा साहोड़ी का सरकारी स्कूल 21
  राजेश लवानिया
- बालमन का हितैषी हो विद्यालय परिसर 22
  डॉ. सत्यनारायण व्यास
- English for Communication at School 32
  Dr. Ram Gopal Sharma
- Telecast Schedules of PM e-Vidya 33
- रंगमंच-अभिनय से यथार्थ तक 34
  योगेश कुमार सैन
- समावेशी शिक्षा एवं जेंडर 35
  कृष्ण बिहारी पाठक
- विद्यालयों में दान का पारदर्शी माध्यम 37
  विमलेश चन्द्र

रपट
- माननीय शिक्षा मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह 18
  संगीता टाक
- निदेशक महोदय के आतिथ्य में मनाया वार्षिकोत्सव 19
  दीपाराम सीरवी
- मेरी बेटी- मेरा सम्मान 31
  त्रिभुवन चौबीसा

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!
- भीलवटा : हमारा विद्यालय 39
  दीपक पंड्या

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : अप्रेल, 2022 23-30
- बाल शिविरा 42-43
- शाला प्रांगण से 44-45
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 46-50
  श्याम सुंदर भट्ट
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 41
- ये शब्द मेरे (साझा काव्य संकलन)
  सम्पादक : व्यास योगेश 'राजस्थानी'
  समीक्षक : **डॉ. नमामीशंकर आचार्य**
- सुहाणो सफर
  लेखक : राजेश अरोड़ा
  समीक्षक : **नदीम अहमद नदीम**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

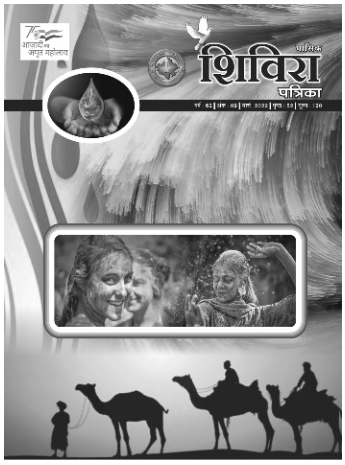

▼ चिन्तन

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति
विज्ञाय चार्थं भते न कामात्।
ना संपृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थे
तत् प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य।।

-विदुर नीति

भावार्थ- जो व्यक्ति उससे कही हुई किसी बात को यद्यपि शीघ्र समझ लेता हो परन्तु उसे देर तक सुनने का धैर्य भी उसमें हो तथा उस व्यक्ति का मंतव्य जान कर बिना किसी कामना के उसका आदर करता हो और न ही जानबूझ कर उसकी संपत्ति को अपने अधिकार में लेने के उद्देश्य से उससे बातचीत करता हो, ये सभी प्रमुख लक्षण एक विद्वान व्यक्ति के होते हैं।

पाठकों की बात

- परीक्षा एवं फागोत्सव को आलोकित करने वाला विविध सामग्री से परिपूर्ण 'शिविरा' के मार्च माह के अंक को समय पर उपलब्ध कराने के लिए शिविरा प्रभाग को साधुवाद, अंक के प्रारंभ में माननीय मंत्री महोदय एवं निदेशक महोदय का आलेख विषयवस्तु के साथ-साथ सुन्दर लेखन के महत्त्व को प्रदर्शित कर प्रेरणादायक है। ओमप्रकाश सारस्वत द्वारा प्रस्तुत आलेख शिक्षकों तथा बालकों को निरंतर स्वाध्याय की प्रेरणा देता है। डॉ. जाकिर हुसैन साहब को समर्पित यह आलेख विशेष रूप से पठनीय है। सुमेधा ने शिव को आध्यात्म से परे शिक्षक के रूप में पहचानने का स्तुत्य प्रयास किया है। 'जल है तो कल है' एक समसामयिक आलेख है। लक्ष्मी चौबीसा का आलेख दांडी यात्रा जोश का संचार करने वाला है तथ निष्ठा से कर्म की प्रेरणा देता है। अनिता चौधरी द्वारा प्रस्तुत आलेख आर.जी.एच.एस. ज्ञानवर्धक एवं प्रक्रिया से अवगत कराने वाली जनोपयोगी रचना है। डॉ. महेश चन्द्र शर्मा तथा अरविन्द शर्मा के आलेख शिक्षकों तथा छात्रों के लिए उपयोगी है। सुन्दर आवरण वाले शिविरा के अंक के लिए बधाई।

शांति लाल सेठ, बाँसवाड़ा

- मार्च, 2022 का शिविरा अंक का मुखावरण विभिन्न रंगों के साथ बालिकाओं की मुस्कान यह प्रदर्शित कर रही है कि हम भी किसी से कम नहीं है। आज हर क्षेत्र में महिलाएँ अग्रणी रहती हुई, कदम से कदम मिलाती हुई, देश के विकास में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। दिशाकल्प में हमारे परम आदरणीय निदेशक महोदयजी ने बालिका शिक्षा हेतु सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को बताते हुए कहा कि इसका सकारात्मक परिणाम सरकारी विद्यालयों में नजर आ रहा है। राज्य सरकार द्वारा बालिका शिक्षा हेतु किए जा रहे प्रयासों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। अपनों से अपनी बात में आदरणीय शिक्षा मंत्री जी की सारगर्भित बातें छात्रों के हित में ज्ञानप्रद थी। शिविरा पत्रिका में आलेख म्हारा राजस्थान, जल है तो कल है एवं परीक्षा में उत्तर पुस्तिका का प्रस्तुतीकरण ज्ञानप्रद, प्रेरणादायक था। राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना की सम्पूर्ण जानकारी सभी के लिए लाभान्वित साबित होगी। शाला प्रांगण में समाचारों के साथ रंगीन फोटो हो तो पत्रिका में एक नयापन एवं मन मोहक लगेगी। महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) प्रारंभ करना अपने आप में शिक्षा के क्षेत्रों में मील का पत्थर साबित होगी। लेकिन मेरा इसके सम्बन्ध में एक छोटा-सा सुझाव है कि ये विद्यालय मॉडल स्कूलों की तरह अलग से नया भवन बनाकर प्रारंभ किया जाए तो सोने पे सुहागा होगा।

नृसिंहदास वैष्णव, जालोर

- फाल्गुन मास के रंगीन उत्सव होली की आहट के बीच विविध साहित्यिक रंगों से भरपूर मार्च 22 का शिविरा अंक पढ़ने का सौभाग्य मिला। दीपक जोशी का विज्ञान शिक्षण, प्रजापति का रीडिंग कैम्पेन, शिवजी गौड़ का RTE और डॉ. रामगोपाल शर्मा अंग्रेजी भाषा संबंधित लेख ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय लगे।

प्रवीण रावल, डूँगरपुर

- माह मार्च 2022 की शिविरा पढ़ने का अवसर मिला। शिविरा पत्रिका का कवर पृष्ठ आकर्षक एवं समयानुकूल था। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने परीक्षा के तनाव भरे माहौल को हल्का एवं अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को उतरपुस्तिका पर प्रश्न हल करते समय ध्यान रखने योग्य उपयोगी सलाह बहुत ही अच्छी लगी। दिशाकल्प में निदेशक महोदय का यह कथन कि परीक्षाओं को सकारात्मक अवसर मानते हुए इसमें सफल होने का संदेश वास्तव में प्रेरणास्पद है। शंकरलाल माहेश्वरी ने अपने आलेख जल है तो कल है में जल के महत्त्व और उसकी प्रत्येक बूंद के उपयोग का संदेश वास्तव में ज्ञानवर्धक था। डॉ. डी.डी. गौतम लिखित आलेख कोविड काल में शिक्षा की निरन्तरता में सोशल मीडिया की प्रासंगिकता बेहद उपयोगी था। महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के लिए डॉ. रामगोपाल शर्मा द्वारा लिखित English For Communication At School की शृंखला भी प्रत्येक विद्यालय के लिए लाभकारी है। शिविरा पत्रिका के संपादक मंडल को अच्छे आलेख संकलन के लिए साधुवाद।

सुमन तंवर, बीकानेर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

शिक्षा बजट

राजस्थान बजट 2022-23 के मुख्य बिंदु

❒ सुनीता चावला

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत ने बुधवार 23 फरवरी, 2022 को वित्त मंत्री के रूप में वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए राजस्थान का **पहला पेपरलेस बजट** विधानसभा में पेश किया। इस बजट घोषणा में महत्त्वपूर्ण यह भी था कि राज्य में **प्रथम बार कृषि बजट** अलग से पेश हुआ।

बजट एक नजर में

- 02,14,977 करोड़ 23 लाख की राजस्व प्राप्तियाँ।
- 2 लाख 38 हजार 465 करोड़ 79 लाख का राजस्व व्यय।
- 23 हजार 488 करोड़ 56 लाख राजस्व घाटा।
- 58 हजार 211 करोड़ 55 लाख (जीएसडीपी का 4.36 प्रतिशत) राजकोषीय घाटा।

इस बजट के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी ने प्रत्येक वर्ग को संबलन देने का प्रयास किया है। युवाओं के लिए 1.00 लाख सरकारी नौकरी देने के साथ ही 01 जनवरी 2004 या इसके बाद भर्ती हुए सरकारी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन देने के ऐलान से सभी कार्मिको को सुकून मिला। 19 वर्ष बाद पुरानी पेंशन स्कीम बहाल होने से कार्मिकों की एनपीएस में कटौती बंद हो जाएगी और प्रतिमाह प्राप्त वेतन में इजाफा होगा। इस योजना से 3 लाख से अधिक कार्मिक लाभान्वित होंगे। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने चिरंजीवी योजना में पंजीकृत 1.33 करोड़ महिलाओं को मुफ्त मोबाइल और डाटा देकर महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया है। इस बजट में स्कूल शिक्षा एवं खेलकूद में की गयी मुख्य घोषणाएँ निम्नानुसार है-

1. हमारे प्रयासों से राज्य के सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर में गुणात्मक सुधार हुआ है। यह संतोष का विषय है कि वर्ष 2018 की तुलना में वर्ष 2021 में राज्य में 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों का सरकारी स्कूलों में नामांकन लगभग 20 प्रतिशत बढ़ा है। इस कारण राजकीय स्कूलों को निरंतर Upgrade करने की आवश्यकता महसूस हो रही है। इसको ध्यान में रखते हुए राज्य के समस्त 3 हजार 820 सैकेण्डरी विद्यालयों को सीनियर सैकेण्डरी विद्यालयों में क्रमोन्नत किए जाने की घोषणा की गई।
2. आज के वैश्विक परिदृश्य में हमारे प्रदेश के विद्यार्थी देश ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के योग्य बन सकें, इसके लिए उन्हें अंग्रेजी भाषा में भी निपुण होना आवश्यक होता जा रहा है। इसको ध्यान में रखते हुए हम 5 हजार से अधिक की आबादी वाले समस्त गाँवों में 01 हजार 200 महात्मा गाँधी अंग्रेजी विद्यालय स्वीकृत/प्रारंभ करने जा रहे हैं। इन विद्यालयों की लोकप्रियता एवं इनमें प्रवेश हेतु अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की माँग को देखते हुए आगामी वर्ष में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में एक-एक हजार महात्मा गाँधी English Medium स्कूल और शुरू किए जाएंगे।
3. अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सभी विषयों के अंतर्गत English Medium शिक्षकों का पृथक से काडर (Cadre-within-cadre) बनाने की घोषणा की गई है। इन विद्यालयों में, प्रथम चरण में लगभग 10 हजार अंग्रेजी माध्यम के शिक्षक भर्ती किए जाएंगे।
4. प्रदेश के ग्रामीण एवं दूरदराज के क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा के सुदृढ़ीकरण एवं विकास हेतु-

i. प्राथमिक विद्यालय से वंचित ग्राम पंचायतों पर प्राथमिकता से प्राथमिक विद्यालय खोले जाएंगे।

ii. रेगिस्तानी जिलों-जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, जोधपुर में दूरदराज ढाणियाँ बसी हुई हैं। इन क्षेत्रों के जन प्रतिनिधियों से नए प्राथमिक स्कूल खोलने के काफी संख्या में प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इन क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के व्यापक विस्तार को ध्यान में रखते हुए नियमों एवं मानकों में शिथिलन देते हुए प्रथम चरण में 200 प्राथमिक स्कूल खोले जाएंगे।

iii. ग्राम पंचायत मुख्यालयों पर स्थित प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे सीनियर सैकण्डरी विद्यालयों में शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार एवं यथा आवश्यकता क्रमोन्नत किया जाएगा।

iv. बालिकाओं को घर के समीप शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने एवं विद्यालयों में ड्रॉप आउट कम करने की दृष्टि से राज्य में संचालित माध्यमिक स्तर के 389, उच्च प्राथमिक स्तर के 1 हजार 846 व प्राथमिक स्तर के 115 बालिका विद्यालयों (Girls Schools) को वरीयता के क्रम में चरणबद्ध रूप से क्रमोन्नत किया जाएगा। साथ ही, आवश्यकतानुसार कक्षा-कक्षों के निर्माण सहित आधारभूत ढांचे का विस्तार किया जाएगा।

5. राजकीय विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं के विकास हेतु 3 हजार 800 से अधिक Class rooms, laboratories, आर्ट एवं क्राफ्ट, कम्प्यूटर रूम आदि का निर्माण, 20 नवीन भवन निर्माण एवं 100 विद्यालयों में वृहद् मरम्मत इत्यादि के कार्य करवाए जाएंगे। इन पर लगभग 200 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।
6. जयपुर के जवाहर लाल नेहरु (JLN) मार्ग पर स्थित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं को समन्वित कर 'Education Hub' के रूप में विकसित करने की घोषणा की गई है।

Rajasthan Education Department

इस हेतु आगामी 2 वर्षों में 400 करोड़ रुपये का प्रावधान प्रस्तावित है, जिसमें से-

i. Mahatma Gandhi Institute of Governance and Social Sciences (MGIGSS) पर 225 करोड़ रुपये,
ii. राजा रामदेव पोद्दार Residential School of Excellence पर 100 करोड़ रुपये तथा
iii. राधाकृष्ण लाइब्रेरी एवं कोचिंग सेंटर पर 75 करोड़ रुपये व्यय किया जाना प्रस्तावित है।

7. मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के अंतर्गत इस वर्ष 7 हजार से अधिक छात्र-छात्राओं ने लाभ प्राप्त किया है। आगामी वर्ष इस योजना का दायरा बढ़ाते हुए इसके अंतर्गत 15 हजार विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जाना प्रस्तावित है। साथ ही, कोचिंग के अलावा अच्छे माहौल में अध्ययन की सुविधा हेतु प्रत्येक जिले में 50-50 लाख रुपये की लागत से सावित्री बाई फूले वाचनालय स्थापित किए जाने की घोषणा की गई है। इन वाचनालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु Self Study करने वाले युवाओं को आवश्यक पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें, Computer, Internet इत्यादि की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाएंगी। सुमेर पब्लिक लाईब्रेरी, जोधपुर का लगभग 42 करोड़ रुपये की लागत से पुनः निर्माण करते हुए आधुनिकीकरण किया जाएगा।
8. भरतपुर स्थित श्री हिन्दी साहित्य समिति का पुस्तकालय अपने आप में अनूठा है। वर्तमान परिस्थिति में इसका संरक्षण एवं संवर्द्धन आवश्यक है। वर्ष 2013-14 के बजट में 50 लाख रुपये का अनुदान इस संस्था के लिए स्वीकृत किया था। अब इस पुस्तकालय को सरकारी संरक्षण में लेते हुए, संवर्द्धन के साथ-साथ आधुनिकीकरण के लिए 5 करोड़ रुपये का अनुदान दिया जाना प्रस्तावित किया गया है।
9. पैरा खिलाड़ियों को उच्च तकनीकी प्रशिक्षण, ट्रेनिंग उपकरणों व अभ्यास हेतु जयपुर व जोधपुर में 20-20 करोड़ रुपये की राशि से आवासीय पैरा खेल अकादमी स्थापित की गई है। साथ ही ओलंपिक पदक विजेताओं को निःशुल्क 25 बीघा कृषि भूमि आवंटित किए जाने वाले प्रावधान को, पैरालंपिक खेलों के पदक विजेताओं के लिए भी लागू करने की घोषणा की गई है।
10. राज्य में खेल सुविधाएँ विकसित करने हेतु-

i. भरतपुर में कुश्ती/कबड्डी जैसे पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से स्टेडियम का विकास किया जाएगा। साथ ही, नावां-नागौर एवं रावतभाटा-चित्तौड़गढ़ स्टेडियम के विकास कार्य करवाए जाएंगे। इन पर 12 करोड़ रुपए व्यय होंगे।
ii. टोंक में Multipurpose Indoor स्टेडियम बनाया जाएगा।
गिर्वा-उदयपुर, केरू (लूणी)-जोधपुर, हिण्डौन-करौली, धोद-सीकर, परबतसर-नागौर, परसरामपुरा (नवलगढ़)-झुंझुनूं, बानसूर-अलवर, रूपवास (बयाना), उच्चैन (नदबई)-भरतपुर, तारानगर-चूरू तथा बगरू-जयपुर में खेल स्टेडियम बनाए जाएंगे।
iv. जोधपुर में शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय का विस्तार एवं उन्नयन कराया जाएगा तथा खेल विभाग के अंतर्गत Rajasthan State Sports Institute की स्थापना की जाएगी। इन पर 15 करोड़ रुपये का व्यय होगा।
v. जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम के अनुरूप ही जोधपुर में 10 करोड़ रुपये की लागत से Rajasthan High Performance Sports Training and Rehabilitation Centre बनाया जाएगा।
vi. सवाई मानसिंह स्टेडियम-जयपुर व महाराणा प्रताप खेलगाँव-उदयपुर में सिंथेटिक एथलेटिक ट्रेक का निर्माण करवाया जाएगा, जिस पर 15 करोड़ रुपये खर्च होंगे।
vii. राजगढ़ (सादुलपुर)-चूरू में कबड्डी अकादमी तथा श्रीगंगानगर में एथलेटिक्स अकादमी के भवन का निर्माण किया जाएगा।
viii. चौरासी-डूँगरपुर में खेल छात्रावास का निर्माण किया जाएगा।

10. ऐसी महिलाएँ जो 'Work From home' कर अपने परिवार की आजीविका में योगदान दे सकती हैं, उनके लिए मैं 'मुख्यमंत्री Work from Home- Job Wrok योजना' प्रारंभ करना प्रस्तावित करता हूँ। आगामी वर्ष 20 हजार महिलाओं को इस योजनान्तर्गत लाभान्वित किया जाना प्रस्तावित है। इस पर लगभग 100 करोड़ रुपए का व्यय होगा।
11. सरकार भर्तियों को पूर्ण पारदर्शिता के साथ समयबद्ध रूप से कराने के लिए कटिबद्ध है। इस हेतु REET सहित अन्य विभिन्न भर्तियों के लिए द्विस्तरीय (पात्रता एवं चयन) नियुक्ति प्रणाली अपनायी जानी प्रस्तावित है। हाल ही में गोपनीयता भंग होने के कारण REET परीक्षा रद्द करनी पड़ी। अब जुलाई 2022 में REET की परीक्षा करवाया जाना प्रस्तावित की गई है। नए सिरे से होने वाली इस परीक्षा के लिए पुराने अभ्यर्थियों से आवेदन शुल्क नहीं लिया जाएगा तथा पूर्व में REET परीक्षा के समय अभ्यर्थियों को दी गई समस्त सुविधाएँ भी पुनः उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, हमने युवाओं को अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दृष्टि से आगामी REET परीक्षा में पदों की संख्या 32 हजार से बढ़ाकर 62 हजार की है।
12. भर्ती परीक्षाओं में हो रही अनियमितताओं को रोकने के लिए SOG में Anti Cheating Cell का गठन किया जाएगा।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा घोषित ऐतिहासिक बजट राज्य के विकास में क्रांति लाएगा। सभी वर्गों को राहत संबलन देने का प्रयास किया है। निस्संदेह इन प्रयासों से राजस्थान के समग्र विकास को एक नयी राह मिलेगी।

वरिष्ठ संपादक-शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Department

नवसंवत्सर का महत्त्व

❒ मधुसूदन व्यास

साधारणतया अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार नया वर्ष 1 जनवरी को मनाया जाता है, परन्तु भारतीय नव वर्ष चैत्र माह की प्रथम तिथि अर्थात चैत्र प्रतिपदा को मनाया जाता है। यह प्रतिवर्ष मार्च के अंत या अप्रैल माह में आता है। भारतीय नववर्ष के इसी प्रथम दिवस को नव संवत्सर एवं विक्रम संवत भी कहते हैं। हमारे देश भारत में लोक मान्यताओं और स्थानीय रीति रिवाज़ों में भिन्नता होने के कारण यह अलग-अलग दिन से भी आरंभ होना माना जाता है।

अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार मनाए जाने वाले नव वर्ष पर कड़ाके की ठंड होती है, वहीं भारतीय नव वर्ष पर मौसम सुहावना होता है। वसंत ऋतु का आरम्भ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है। इस मौसम में मन की निराशा भी पतझड़ की तरह समाप्त हो जाती है, वृक्ष पर नई कोपले आने से प्रकृति में भी नव सृजन का आगाज़ होता है। नवसंवत्सर का स्वागत रात्रि के अंधकार मे नही, बल्कि सूर्य की पहली किरण से किया जाता है, जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंध से भरी होती है। फसल पकने का प्रारंभ, किसानों की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

दुनियाभर में मुख्यतः 96 प्रकार के कैलेंडर हैं। भारत में 36 प्रकार के कैलेंडर या पंचांग हैं। इनमें से 12 आज भी चलन में हैं, जबकि 24 चलन से बाहर हो चुके हैं। दुनिया में जितने कैलेंडर इस समय चलन में हैं, इनमें से ज्यादातर के नए साल की शुरुआत फरवरी से अप्रैल के बीच होती है, फिर भी पूरा भारतीय समाज चैत्र माह से ही नववर्ष को मनाता है।

भारतीय नववर्ष का महत्त्व-भारतीय नववर्ष या हिंदू पंचाग के महत्त्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है, कि आज भी हमारे समाज मे व्रत एवं त्यौहार हिंदू कैलेंडर और हिंदू तिथियों के आधार पर ही मनाते हैं। घर में शादी या फिर कोई और शुभ कार्य सभी कुछ हिंदू कैलेंडर या पंचांग देखकर ही किए जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि इसी दिन सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना शुरू की थी, भगवान राम का राज्य अभिषेक भी इसी दिन हुआ था। इसी समय शक्ति की आराधना का पर्व चैत्र नवरात्र प्रारंभ होता है। अत्याचारी विदेशी शकों एवं हूणों को पराजित कर उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य ने विक्रम संवत प्रारंभ किया था। यह संवत 57 ईसा पूर्व शुरू हुआ था। सिंधी लोग इसी दिन चेटीचंड के रूप में नववर्ष मनाते हैं। इस दिन की विशेशता का अंदाजा इस बात से भी लगा सकते है कि सिख संप्रदाय के दूसरे गुरु श्री अर्जुनदेव जी का जन्म चैत्र प्रतिपदा को हुआ था। और 1857 की क्रांति के प्रणेता महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना भी इसी दिन की गई थी।

भारतीय महीनों के नाम उस महीने की पूर्णिमा के नक्षत्र के नाम पर पड़ते हैं, जैसे इस महीने की पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र में हैं तो इस मास का नामकरण चैत्र हुआ। श्री मद्भागवत के द्वादश स्कन्ध के द्वितीय अध्याय के अनुसार जिस समय सप्तर्षि मघा नक्षत्र पर थे उसी समय से कलियुग का प्रारम्भ हुआ, महाभारत और भागवत के इस खगोलीय गणना को आधार मान कर विश्वविख्यात डॉ. वेली ने यह निष्कर्ष दिया है कि कलियुग का प्रारम्भ 3102 बी.सी. की रात दो बजकर 20 मिनट 30 सेकण्ड पर हुआ था। क्रान्ति वृन्त पर बारहों महीने की सीमाएँ तय करने के लिए आकाश में 30-30 अंश के 12 भाग किए गए और नाम भी तारा मण्डलों के आकृतियों के आधार पर रखे गए। जो मेष, वृष, मिथुन इत्यादि 12 राशियाँ बनी। चूंकि सूर्य क्रान्ति मण्डल के ठीक केन्द्र में नहीं हैं, अत: कोणों के निकट धरती सूर्य की प्रदक्षिणा 28 दिन में कर लेती है और जब अधिक भाग वाले पक्ष में 32 दिन लगता है। प्रति तीन वर्ष में एक मास अधिक मास कहलाता है। भारतीय काल गणना इतनी वैज्ञानिक व्यवस्था है कि सदियों-सदियों तक एक पल का भी अन्तर नहीं पड़ता जब कि पश्चिमी काल गणना में वर्ष के 365-2422 दिन को 30 और 31 के हिसाब से 12 महीनों में विभक्त करते है। इस प्रकार प्रत्येक चार वर्ष में फरवरी महीने को लीप ईयर घोषित कर देते है फिर भी नौ मिनट 11 सेकण्ड का समय बच जाता है तो प्रत्येक चार सौ वर्षो में भी एक दिन बढ़ाना पड़ता है तब भी पूर्णांकन नहीं हो पाता है। अभी 10 साल पहले ही पेरिस के अन्तरराष्ट्रीय परमाणु घड़ी को एक सेकण्ड स्लो कर दिया गया फिर भी 22 सेकण्ड का समय अधिक चल रहा है। यह पेरिस की वही प्रयोगशाला है जहाँ की सी जी एस सिस्टम से संसार भर के सारे मानक तय किए जाते हैं। रोमन कैलेण्डर में तो पहले 10 ही महीने होते थे। किंग नुमापा जुलियस ने 355 दिनों का ही वर्ष माना था। जिसे जुलियस सीजर ने 365 दिन घोषित कर दिया और उसी के नाम पर एक महीना जुलाई बनाया गया उसके 1 सौ साल बाद किंग अगस्ट्स के नाम पर एक और महीना अगस्ट भी बढ़ाया गया चूंकि ये दोनों राजा थे इसलिए इनके नाम वाले महीनों के दिन 31 ही रखे गए। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी यह कितनी हास्यास्पद बात है कि लगातार दो महीने के दिन समान है जबकि अन्य महीनों में ऐसा नहीं है। यही नहीं जिसे हम अंग्रेजी कैलेण्डर का नौवां महीना सितम्बर कहते है, दसवा महीना अक्टूबर कहते है, ग्यारहवां महीना नवम्बर और बारहवां महीना दिसम्बर कहते है। इनके शब्दों के अर्थ भी लैटिन भाषा में 7,8, 9 और 10 होते है। भाषा विज्ञानियों के अनुसार भारतीय काल गणना पूरे विश्व में व्याप्त थी और सचमुच सितम्बर का अर्थ सप्ताम्बर था, आकाश का सातवां भाग, उसी प्रकार अक्टूबर अष्टाम्बर, नवम्बर तो नवम्बर और दिसम्बर दशाम्बर है। सूर्य सिद्धान्त और सिद्धान्त शिरोमाणि आदि ग्रन्थों में चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार का दिन ही सृष्टि का प्रथम दिन माना गया है। संस्कृत के होरा शब्द से ही, अंग्रेजी का आवर (Hour) शब्द बना है। और इस जैसे असंख्य वर्ण अभी भी यूरोपियन शब्दावली में हैं ! इसमें कोई संशय नहीं रह जाता की विश्व का प्रथम दिवस यही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा है और यही विश्व के नव वर्ष का भी प्रारंभ है

भारत मे प्रत्येक उत्सव की रचना में ऋषियों ने स्वास्थ्य को भी बहुत महत्त्व दिया है, आयुर्वेद में एक श्लोक का उल्लेख मिलता है :

'रोगानां शारदी माता, पिता च कुसुमाकर:'

अर्थात रोग की माता शरद ऋतु तथा बसंत ऋतु पिता के समान होती है। इसलिए चैत्र प्रतिपदा को नीम की पत्तियाँ और मिश्री खाने का प्रचलन भी है। यहाँ हमें नीम की पत्तियों व मिश्री के इस ऋतु मे खाने का महत्व भी जानना आवश्यक है:-

नीम की पत्तियों के फायदे- यह एंटी माइक्रोबियल, एंटी-वायरल, और एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर होती हैं और इस प्रकार यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करती हैं। यह मौसम बदलाव के दौरान पाचन तंत्र को ठीक रखने में मदद करती है। यह आंतों में अतिरिक्त विशाणु को नष्ट करती है और कोलन को साफ करती है। शरीर की प्रकृति को ध्यान मे रखते हुए प्रतिदिन 4 से 6 पत्तियां नीम की स्वास्थ्य के अनूकुल होती है। भारतीय नव संवत्सर पर कामना है कि यह पर्व सभी के जीवन में सुख, शांति एवं समृद्धि लाए। हमें संकल्प लेना चाहिए कि देश को एकता के सूत्र में पिरोकर नयी चेतना के साथ नववर्ष की शुरूआत करेंगे।

वरिष्ठ सहायक
कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर
मो: 9602729522

Rajasthan Education Department

अंबेडकर जयन्ती विशेष

राष्ट्र के महानायक डॉ. भीमराव अंबेडकर

❒ पितराम सिंह काला

1. जीवन परिचय :– डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में महू छावनी, मध्यप्रदेश में पिताजी पूजनीय रामजी सकपाल एवं पूजनीय माता जी भीमा बाई की कोख से हुआ था; चौदहवें रत्न थे।

2. शिक्षा:– भीमराव ने सातारा भाहर में राजा बाग चौक पर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल में 7 नवम्बर, 1900 को अंग्रेजी की प्रथम कक्षा में प्रवेश लिया था। महाराष्ट्र सरकार 7 नवम्बर को विद्यार्थी दिवस के रूप में मनाती है। अंबेडकर ने M.A., M.Sc., D.Sc., Ph.D., LLB, D. Lit., Bar at Law तक शिक्षा प्राप्त की थी। उस समय के वे विश्व के चौथे बड़े विद्वान थे। अम्बेडकर ने बड़ौदा रियासत के सयाजी राव गायकवाड़ की छात्रवृत्ति प्राप्त कर विदेश में अध्ययन किया था।

3. महाड़ सत्याग्रह पृथ्वी, जल, अग्नि तथा सूर्य की ऊर्जा प्रकृति प्रदत्त है। जिस पर मानव एवं पशु-पक्षियों का समान अधिकार है। 1927 में महाड़ नगरपालिका में एक प्रस्ताव पारित किया था कि सार्वजनिक तालाबों में पानी पीने पर प्रतिबंध नहीं रहेगा। महाराष्ट्र के महाड़ के चवदार तालाब में अछूतों को पानी पीने के लिए 20 मार्च, 1927 को महाड़ सत्याग्रह कर पानी पीने का अधिकार प्रदान करवाया था। यह विश्व का महानतम सामाजिक सत्याग्रह था।

4. कासाराम मंदिर प्रवेश मनुस्मृति के विधान के अनुसार शूद्रों को मंदिर प्रवेश पर प्रतिबंध था। डॉ. अम्बेडकर ने संघर्ष कर शूद्रों का कासाराम मंदिर में प्रवेश कराने के लिए संघर्ष किया तथा धार्मिक समानता का अधिकार प्रदान करवाया।

5. साइमन कमीशन 1917 में ब्रिटिश सरकार ने साउथ वरो कमीशन का गठन किया था। जिसका प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश भारत में शूद्रों, अति शूद्रों की पहचान कर उन्हें हर क्षेत्र में अलग-अलग प्रतिनिधित्व दिया जाए। ब्रिटिश सरकार ने प्रथम भारत कानून 1919 बनाया था। जिसमें शूद्रों एवं अति शूद्रों को राजनीतिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समानता के अधिकार प्रदान किए थे। इन अधिकारों की लागू होने की समीक्षा हेतु साइमन कमीशन 1928 में भारत आया था। इसका देशभर में तत्कालीन नेताओं तथा धार्मिक, सामाजिक संस्थानों ने भारी विरोध किया था। कहा था- 'गो बैक साइमन'। डॉ. भीमराव अम्बेडकर, शिवदयाल चोरसिया तथा सर छोटूराम ने साइमन कमीशन

को देश में ज्ञापन सौंपे थे तथा देश की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया था।

6. पूना पैक्ट विलियम कमीशन के तहत भारत के अछूतों को Saprate Elecrate System के अन्तर्गत दो वोट का अधिकार डॉ. अम्बेडकर ने लेकर दिए थे, लेकिन तत्कालीन नेताओं, राजनीतिक पार्टियों एवं सामाजिक संगठनों ने अछूतों के दो वोट के अधिकार का भारी विरोध किया था। 24 सितम्बर, 1932 को पूना पैक्ट हुआ। जिससे अछूतों के दो वोट के राजनीतिक अधिकारों को समाप्त कर दिया गया था एवं कॉमन निर्वाचन प्रणाली में राजनीतिक अधिकार प्रदान किए थे। यह पूना पैक्ट अनुसूचित जातियों, जनजातियों के विकास में बाधक रहा।

7. विधान परिषद् में निर्वाचन: डॉ. अम्बेडकर ने जैसोर कुलना से भारी विरोध के बावजूद निर्वाचित होकर विधान परिषद् में पहुँचे। डॉ. अम्बेडकर को संविधान ड्राफ्ट कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया था। डॉ. अम्बेडकर ने 395 अनुच्छेद तथा 10 अनुसूचियों को लिखा तथा संविधान सभा में भारत गणराज्य का संविधान पारित करवाया गया था। डॉ. अम्बेडकर भारत गणराज्य के संविधान के रचयिता है।

8. डॉ. अम्बेडकर ने भारत गणराज्य के संविधान में राष्ट्र के नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता, समता तथा बंधुत्व के समान अधिकार प्रदान किए थे। 2500 वर्षों से पीड़ित भारत के नागरिकों को मूलभूत अधिकार प्रदान किए है। जिसमें समानता, स्वतंत्रता, शिक्षा, धार्मिक स्वतंत्रता एवं संवैधानिक उपचारों का अधिकार शामिल है। 2500 वर्षों से पीड़ित, उपेक्षित, शोषित सभी वर्गों की महिलाओं को शिक्षा के समान अधिकार प्रदान किए है। डॉ. अम्बेडकर भारत में नारी उद्धारक हैं।

9. भारत गणराज्य के संविधान में सदियों से पीड़ित, शोषित, उपेक्षित धार्मिक एवं सामाजिक अधिकारों से वंचित अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गों के उत्थान एवं विकास के लिए तथा राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए अनुच्छेद 15(4), 16(4) एवं 315 में सामाजिक एवं शैक्षणिक पिछड़ेपन के आधार पर राष्ट्रीय भागीदारी प्रदान की है। जिसमें यह वर्ग राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल हो सके। सभी नागरिकों को समानता के आधार पर वोट का अधिकार प्रदान किया है। संविधान में सभी नागरिक समान है।

10. संगठनों का निर्माण : डॉ. अम्बेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा, समता सैनिक दल, डिप्रेस्ड वलसिज एज्युकेशन सोसायटी, पीपुल्स एज्युकेशन सोसायटी, भारतीय बौद्ध महासभा, शेड्यूल्ड कास्टर फेडरेशन, स्वतंत्र लेबर पार्टी, भारतीय रिपब्लिक पार्टी का गठन किया था। सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ आर्ट्स एवं साइंस 1946 की स्थापना की थी।

11. पत्रकारिता : डॉ. अम्बेडकर ने मूकनायक 1920, जनता 1930, बहिष्कृत भारत 1927, समता 1927 एवं प्रबुद्ध भारत 1956 में प्रकाशित किए थे। ये सभी पत्रकारिता मराठी भाषा में प्रकाशित किए थे।

12. डॉ. अम्बेडकर के गुरु– डॉ. अम्बेडकर ने अपने तीन गुरु तथागत बुद्ध, संत कबीर तथा महात्मा ज्योतिबा फूले को माना था।

13. बौद्ध न्याय का अंगीकरण : डॉ. अम्बेडकर ने 1935 में हिन्दू धर्म से दुखी होकर कहा था कि मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूँ

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पर यह मेरे बस में नहीं था लेकिन हिन्दू धर्म में रहकर मरूंगा नहीं।

14. 14 अक्टूबर 1956 में नागों की राजधानी नागपुर में अपने बुजुर्गों के मानवता के कल्याणकारी बौद्ध धाम को अपने 10 लाख अनुयायियों के साथ अंगीकार किया था। यह संसार में धार्मिक इतिहास में अद्वितीय घटना हैं। अम्बेडकर भारत में धार्मिक क्रांति के जनक माने जाते है। भारत में द्वितीय बुद्ध शासन का सूत्रपात किया हैं। भारत विश्व गुरु एवं सोने की चिड़िया बौद्ध धर्म संस्कृति धार्मिक एवं सामाजिक समानता के आधार पर मौर्य काल में महान सम्राट अशोक ने बनाया था। विश्व में डॉ. अम्बेडकर के जीवन दर्शन को व्यापक स्तर पर अपनाया जा रहा है।

15. रिजर्व बैंक की स्थापना The Problem of the Rupee : Its origin and its solution लिखी थी। इस थिसिस डी. एससी. की उपाधि मिली थी। डॉ. अम्बेडकर की इस थिसिस पर ब्रिटिश सरकार ने असेम्बली में इसे भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम-1934 पारित किया था। अम्बेडकर की सिफारिश पर 01 अप्रैल 1935 को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना हुई जो भारत का केन्द्रीय बैंक है।

16. डॉ. अम्बेडकर को मरणोपरांत 1992 में भारत रत्न प्रदान किया गया था। अम्बेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था। वहाँ विश्वविद्यालय की स्थापना के 300 वर्षों में उत्कृष्ट छात्रों का सर्वे कराया गया था। अम्बेडकर को सिम्बल ऑफ नालेज से सम्मानित किया गया। अमेरिका के राष्ट्रपति ने उन्हें सूर्य कहा था। कोलंबिया विश्वविद्यालय ने उनकी प्रतिमा स्थापित कर उस पर सिम्बल ऑफ नॉलेज लिखा गया।

17. रचना– द बुद्धा एंड हिज धम्मा, जाति प्रथा का विनाश, रिडल्स इन हिंदुइज्म, एसेज ऑफ भगवत गीता, हू वर द शुद्राज, अनटचेबल्स आदि।

18. डॉ. अम्बेडकर का जीवन दर्शन– शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो में समाहित है।

19. डॉ. अम्बेडकर का परिनिर्वाण 6 दिसम्बर 1956 को हुआ था। उनका अंतिम संस्कार चैत्यभूमि में किया गया था।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी,
झुंझुनूं (राज.)
मो: 9413723045

अंबेडकर जयंती विशेष

डॉ. भीमराव अम्बेडकर : सामाजिक एवं राजनीतिक सफर

❒ **डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी**

बाबा साहेब के नाम से दुनियाभर में लोकप्रिय डॉ. भीमराव अम्बेडकर समाज सुधारक, दलितोद्धारक, राजनेता, महामनीषी, क्रांतिकारी योद्धा, लोकनायक, विद्वान, दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजसेवी एवं धैर्यवान व्यक्तित्व होने के साथ ही विश्व स्तर के विधिवेत्ता व भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार थे। डॉ. अम्बेडकर विलक्षण एवं अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे, उनके व्यक्तित्व में स्मरण शक्ति की प्रखरता, बुद्धिमत्ता, ईमानदारी, सच्चाई, नियमितता, दृढ़ता, प्रचंड संग्रामी स्वभाव का मणिकांचन मेल था। वे अनन्य कोटि के नेता थे, जिन्होंने अपना समस्त जीवन समग्र भारत की कल्याण-कामना, संतुलित समाज रचना में उत्सर्ग कर दिया। खासकर भारत के अस्सी प्रतिशत दलित सामाजिक व आर्थिक तौर से अभिशप्त थे, उन्हें इस अभिशाप से मुक्ति दिलाना ही डॉ. अम्बेडकर का जीवन संकल्प था। वे भारतीय राजनीति की एक धुरी की तरह थे, जो आज दुनियाभर के लिए एक महान दलित मसीहा एवं संतुलित समाज संरचना के प्रेरक महामानव है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू में एक गरीब परिवार में हुआ था। भीमराव अम्बेडकर रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की 14वीं संतान थे। उनका परिवार मराठी था जो महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में स्थित अम्बावडे नगर से सम्बन्धित था। उनके बचपन का नाम रामजी सकपाल था। वे हिंदू महार जाति के थे जो अछूत कहे जाते थे। उनकी जाति के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। एक अस्पृश्य परिवार में जन्म लेने के कारण उनको अपना बचपन कष्टों में बिताना पड़ा। संघर्ष एवं कष्टों की आग में तपकर उन्होंने न केवल स्वयं का विकास किया वरन् भारत के समग्र विकास का वातावरण निर्मित किया। वे नई मानव सभ्यता एवं संस्कृति के प्रेरक एवं पोषक थे। वे हमारे युग के महानतम नायक थे, उनके क्रियाकलापों में किंचित मात्र भी स्वार्थ नहीं था। मानव जाति के इतिहास में कभी कोई ऐसा युग नहीं गुजरा, जब किसी ने अपने तर्क, कर्म एवं बुद्धि के बल पर तत्कालीन रूढ़िवादी मान्यताओं, जातीय भेदभाव एवं ऊँच-नीच की धारणाओं पर कड़ा प्रहार न किया हो। मनुष्य सदैव सत्य की तलाश में निरंतर प्रयासरत रहा और उनको नेतृत्व देने के लिए डॉ. अम्बेडकर जैसे व्यक्तित्व भी प्रकट होते रहे हैं। भारत के लोग कभी इतने भयंकर दौर से नहीं गुजरे, जैसे वे स्वतंत्रता संग्राम के समय गुजरे। वे अपने आपको नितांत बेबस, असहाय और आस्था विहीन महसूस कर रहे थे। गुलामी की मानसिकता एवं पहले से चली आ रही जातीय भेदभाव एवं ऊँच-नीच की विभीषिकाओं ने उनकी मानसिकता कुंठित कर दी और वे अपने आपको दिशाविहीन समझ रहे थे, ऐसे दौर में डॉ. अम्बेडकर एक रोशनी बनकर प्रकट हुए। उनके नेतृत्व में धन सम्पन्न एवं ऊँची जाति के लोगों द्वारा बड़ी क्रूरता से अपने पैरों तले रौंदा हुआ दलित एवं मजदूर वर्ग समूचे भारत में संगठित होकर एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरा। डॉ. अम्बेडकर के पिता भारतीय सेना की महू छावनी में सूबेदार के पद पर रहे थे। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने और कड़ी मेहनत करने के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया। अपने भाइयों और बहनों में केवल अम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए और इसके बाद बड़े स्कूल में जाने में सफल हुए। अपने एक ब्राह्मण शिक्षक महादेव अम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे, उनके कहने पर अम्बेडकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अम्बेडकर जोड़ लिया। अत्याचार और लांछन की तेज धूप में टुकड़ा भर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

बादल की तरह भीम के लिए वे शीतल छाँव एवं छुआछूत, ऊँच-नीच एवं जातीय भेदभाव को समाप्त करने के लिए अग्नितप की तरह महान क्रांतिकारी पोषक थे। सन् 1927 में डॉ. अम्बेडकर ने छुआछूत के खिलाफ एक व्यापक आंदोलन शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलनों और जुलूसों के द्वारा पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी लोगों के लिए खुलवाने के साथ ही अछूतों को भी हिंदू मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। बाबा साहेब वर्गहीन समाज गढ़ने से पहले समाज को जातिविहीन करना चाहते थे। उनका मानना था कि समाजवाद के बिना दलित मेहनती इंसानों की आर्थिक मुक्ति संभव नहीं। डॉ. अम्बेडकर की रणभेरी गूंज उठी और उसका स्वर था कि समाज को श्रेणीविहीन और वर्णविहीन करना होगा क्योंकि श्रेणी ने इंसान को दरिद्र और वर्ण ने इंसान को दलित बना दिया। जिनके पास कुछ भी नहीं है, वे लोग दरिद्र माने गए और जो लोग कुछ भी नहीं है वे दलित समझे जाते थे। बाबा साहेब ने व्यापक संघर्ष करते हुए आह्वान किया कि छीने हुए अधिकार भीख में नहीं मिलते, अधिकार वसूल करना होता है। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने भीमराव अम्बेडकर को मेधावी छात्र के नाते छात्रवृत्ति देकर 1913 में विदेश में उच्च शिक्षा के लिए भेज दिया। उन्होंने अमेरिका में कोलंबिया विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान, दर्शन और अर्थ नीति का गहन अध्ययन किया था। वहाँ पर भारतीय समाज का अभिशाप और जन्मसूत्र से प्राप्त अस्पृश्यता की कालिख नहीं थी। इसलिए उन्होंने अमेरिका में एक नई दुनिया के दर्शन किए। डॉ. अम्बेडकर ने अमेरिका में एक सेमिनार में 'भारतीय जाति विभाजन' पर अपना मशहूर शोध-पत्र पढ़ा, जिसमें उनके व्यक्तित्व की सर्वत्र प्रशंसा हुई।

डॉ. अम्बेडकर विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त की तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किए थे। अपनी आर्थिक जरूरतों के लिए जीवन के आरंभिक भाग में वे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे एवं वकालत भी की। उनके भीतर अंगड़ाई ले रहे राष्ट्रीय व्यक्तित्व ने उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय कर दिया और तब अम्बेडकर भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार और चर्चाओं में शामिल हो गए। उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं को न केवल प्रकाशित किया वरन् उनमें क्रांतिकारी लेखनी से समाज को झकझोरा, राजनीतिक अधिकारों और दलितों के लिए सुधार, सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत और भारत के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. अम्बेडकर धार्मिक विचारों के व्यक्तित्व थे। सन् 1956 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया उनका यह धर्म परिवर्तन में कोई क्रोध में लिया गया फैसला नहीं था। यह देश के दलित समुदायों के लिए एक नए तरीके से जीवन को देखने की प्रेरणा थी, यह हिंदू धर्म का एक पूर्ण रूप से बहिष्कार था और निचले स्तर पर होने वाले अत्याचारों और प्रभुत्व को चिह्नित करना था। नासिक में आयोजित सम्मेलन में उन्होंने कहा था, कि वे एक हिन्दू के रूप में तो पैदा हुए, लेकिन उसी रूप में मरेंगे नहीं। उनके अनुसार, हिंदू धर्म मानव अधिकारों को सुरक्षित रखने में विफल तथा जाति भेदभाव को जारी रखने में सफल रहा है।

डॉ. अम्बेडकर की बढ़ती लोकप्रियता और जनसमर्थन के चलते उनको 1931 में लंदन में आयोजित दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। 1936 में उन्होंने लेबर पार्टी की स्थापना की जो 1937 में केन्द्रीय विधानसभा चुनावों में 15 सीटें जीतने में सफल रही। उन्होंने अपनी पुस्तक 'जाति के विनाश' भी 1937 में प्रकाशित की जो उनके न्यूयॉर्क में लिखे एक शोधपत्र पर आधारित थी। इस लोकप्रिय पुस्तक में अम्बेडकर ने हिंदू धार्मिक नेताओं और जाति व्यवस्था की जोरदार आलोचना की थी। उन्होंने अस्पृश्य समुदाय के लोगों को गाँधीजी द्वारा रचित शब्द हरिजन पुकारने के कांग्रेस के फैसले की भी कड़ी निंदा की थी। वे सच्चे अर्थों में एक महान क्रांतिकारी युगपुरुष थे, जिनके जीवन का सार है कि क्रांति लोगों के लिए होती है, न कि लोग क्रांति के लिए होते हैं। जब 15 अगस्त, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार बनी तो उसमें डॉ. अम्बेडकर को देश का पहला कानून मंत्री नियुक्त किया गया। 29 अगस्त, 1947 को डॉ. अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के लिए नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। डॉ. अम्बेडकर ने मसौदा तैयार करने के काम में सभी की प्रशंसा अर्जित की। 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया। 1951 में संसद में अपने हिन्दू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के बाद डॉ. अम्बेडकर ने केन्द्रीय मंत्रीमंडल से इस्तीफा दे दिया था। इस मसौदे में उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गई थी। डॉ. अम्बेडकर वास्तव में समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे और कश्मीर के मामले में धारा 370 का विरोध करते थे। 1990 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। डॉ. अम्बेडकर मधुमेह से पीड़ित थे। 6 दिसंबर 1956 को उनकी मृत्यु दिल्ली में नींद के दौरान उनके घर में हो गई।

वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय वैशाली नगर,
अजमेर (राज.)
मो: 9950568653

अनुरोध

प्राय: पाठकों/सदस्यों से सूचना प्राप्त होती है कि उन्हें मासिक शिविरा पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। जबकि कार्यालय द्वारा शिविरा नियमित रूप से प्रेषित की जाती है। शिविरा पत्रिका का प्रकाशन हर माह की 02 तारीख़ एवं 05-06 तारीख को साधारण डाक से प्रेषण होता है। अत: समस्त पाठकों/सदस्यों से आग्रह है कि शिविरा पत्रिका की अप्राप्ति की स्थिति में वे माह के प्रथम सप्ताह में निकटस्थ डाकघर/पोस्टमैन से सम्पर्क पश्चात वरिष्ठ संपादक, शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर-334011 अथवा ई-मेल: Email: shivira.dse@rajasthan. gov.in पर अवगत करवाएं ताकि शिविरा पत्रिका सही पते पर भिजवाई जा सके।

वरिष्ठ संपादक

Rajasthan Education Department

बैसाखी महापर्व

❒ सीमा धींगड़ा

मानव आदिकाल से उत्सव प्रिय रहा है, उत्सव, त्योहार, हमारे जीवन में कटुता कम कर समरसता, माधुर्य व नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं, ऐसा ही एक त्योहार है बैसाखी, जिसे वैशाखी भी कहा जाता है।

यह वैशाख सौर मास का प्रथम दिन होता है, बैसाखी के दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, इस कारण इस दिन को संक्रांति भी कहते हैं। बैसाखी पारंपरिक रूप से प्रतिवर्ष 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है। बैसाखी की तिथियों में यह अन्तर इस कारण है कि बैसाखी के पर्व का दिन सौर कलैण्डर के अनुसार तय किया जाता है।

हिन्दू धर्म के अनुसार बैसाखी के दिन माँ गंगा का धरती पर अवतरण हुआ। हिन्दू धर्मानुसार इस दिन नदियों व सरोवरों में किए गए पवित्र स्नान से मनुष्य जीवन में किए गए समस्त पापों का विनाश होता है तथा शारीरिक दुःख दर्द क्षीण हो जाते हैं।

धार्मिक महत्त्व के साथ-साथ कृषि का उत्सव भी है, बैसाखी। सूर्य की स्थिति परिवर्तन के कारण इस दिन के पश्चात धूप तेज होने लगती है व ग्रीष्म ऋतु आरंभ होती है तथा सूर्य की तेज किरणों से रबी की फसल पक कर तैयार हो जाती है, किसानों की मेहनत रंग लाती है। किसान जब भूमि में बीज बोते हैं तो वे केवल बीज ही नहीं बोते, बीजों के साथ-साथ भविष्य के सपने भी बोते हैं। इस अवसर पर उनके सपनों की फसल लहलहा उठती है और उनका मन स्वतः ही प्रफुल्लित हो उठता है, इसका परिदर्शन होता है बैसाखी के दिन ढोल की थांप पर थिरकते कदमों द्वारा। देश भर में किसान इस दिन फसल काटने का जश्न मनाते हैं। बैसाखी भारत के भिन्न-भिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से जानी जाती है। प्रत्येक प्रान्त में इसे मनाने के तरीकों में विविधता के साथ-साथ एकता के भी दर्शन होते हैं, जो हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है। ये त्योहार असम में रंगोली बीहू, ओडिशा में महाविश्व संक्रांति, पश्चिम बंगाल व त्रिपुरा में पोहेला बोशाखा या नाबा बरसा, आंधप्रदेश व तेलंगाना में उगाड़ी, उत्तराखण्ड में बिखू या बिखौती, तमिलनाडु में पुथडू व केरल में विशु आदि नामों से जाना जाता है। इसमें से कुछ स्थानों पर उत्सव बैसाखी के दिन तो कुछ स्थानों पर एक दो दिन के अंतराल से मनाया जाता है।

प्रत्येक त्योहार की भांति बैसाखी का भी एक इतिहास है। मुख्य सिख त्योहारों में से एक माने जाने वाला यह त्योहार मूलरूप से एक हिन्दू त्योहार है। सिख गुरु अमरदास जी ने इसे सिखों के लिए चुना। हिन्दू धर्म की भाँति बैसाखी सिख धर्म में नववर्ष के प्रारंभ का प्रतीक है। यह दिन सिखों के लिए धार्मिक रूप से भी विशेष है। इस दिन को गुरु तेग बहादुर के उत्पीड़न और बलिदान के पश्चात सिख आदेश के रूप में देखा गया, जिन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब के आदेशानुसार इस्लाम कबूलने से इंकार कर दिया।

गुरु तेग बहादुर की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र गोविंद सिंह को अगला सिख गुरु बनाया गया। गुरु गोविंद सिंह ने धर्म को मजबूत बनाने के लिए व मुगलकाल में धर्म विरोधी घटनाओं का डटकर मुकाबला करने के लिए खालसा पंथ की शुरूआत की। गुरु गोविंद सिंह ने 1699 में युवाओं को देश, धर्म के लिए आगे आने के लिए प्रेरित किया। गुरु गोविंद सिंह के प्रोत्साहन से पाँच पुरुषों ने उनके विचारों में दिलचस्पी दिखाई। गुरु गोविंद सिंह ने इन्हें भगवा वस्त्र प्रदान कर 'पंज प्यारे' की उपाधि दी। 'पंज प्यारे' का अर्थ है कीमती पाँच पुरुष जो ईश्वर को प्रिय है। गुरु गोविंद सिंह ने इसी दिन 13 अप्रैल 1699 को खालसा पंथ की स्थापना की। खालसा का अर्थ है खालिस अर्थात शुद्ध।

शुद्धता के प्रतीक खालसा पंथ की स्थापना दिवस के रूप में इस त्योहार को मनाया जाता है। आगे चलकर यही बैसाखी का त्योहार 13 अप्रेल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड का साक्षी बना। अमृतसर में निहत्थे लोगों पर जनरल डायर द्वारा गोलियां बरसाई गई। परंतु निर्दोष लोगों की यह शहादत व्यर्थ नहीं गई, इसने ब्रिटिश राज के अन्त की इबारत लिखी।

बैसाखी के दिन गाँव-गाँव में मेले सज उठते हैं, अन्नदाता का आनंद पूरी प्रकृति का आनंद बनकर झूम उठता है। पंजाब व हरियाणा के साथ पूरे भारत में यह पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। जब फसल कटने लगती है तो किसानों की आत्मा भी उत्सव के रंग में रंगने लगती है, कहीं ढोल की थांप सुनाई देती है तो कहीं गिद्दा, कहीं भंगड़ा मचल उठता है। सारे आलम में 'जट्टा आई बैसाखी' के सुर गूँज उठते है।

जगह-जगह गुरुद्वारों में होती अरदास, कड़हा प्रसाद पाते हाथ, लंगर चखती संगत व पंथ की स्थापना को पूजती आत्मा आदि सच जुगादी सच की वाणी के साथ कहती है कि मेहनत का फल पक गया है, यह अन्न सारे जगत की पौष्टिकता का स्रोत बनकर हमारे जीवन को सार्थक करे।

भारतवर्ष में मान्यता है कि उत्तम कृषि व मध्यम व्यापार। यद्यपि कृषकों का जीवन सरल नहीं होता, कृषकों को मेहनत के साथ-साथ अन्नोत्पादन हेतु मौसम की अनुकूलता पर भी निर्भर रहना पड़ता है। फिर भी भारतीय चिंतन में इस अनिश्चित कर्म को उत्तम कर्म क्यों मान लिया गया? इस प्रश्न का उत्तर मनुष्य की मनीषा स्वयं ही देती है कि सब अपना पेट भरने के लिए कर्म करते हैं परन्तु कृषक हम सबके लिए अन्न का उत्पादन करते हैं।

बैसाखी की रात्रि को नवीन अन्न की जब अग्नि में आहुति दी जाती है तो भावना यही रहती है कि जगत की जठराग्नि को शांत करने हेतु इस अन्न का अर्पण कर सकें, यही हमारे जीवन का लक्ष्य हो। बैसाखी के उत्सव का आरंभ ही दाता भाव से है।

यद्यपि बैसाखी के त्योहार का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक व मनोवैज्ञानिक महत्त्व है परन्तु इसका मूल उद्देश्य समाज में आनंद, मंगल व सद्भाव की भावना का निर्माण करना है। यह जीवन की एकरसता को दूर कर मनोरंजन, उल्लास व आनन्द प्रदान कर जीवन चक्र को ऊर्जामय, जीवंत बनाता है।

बैसाखी प्रकृति का आनंदोत्सव तो है ही साथ ही कर्म की सार्थकता का भी पर्व है, धर्म स्थापना का उद्घोष है। यह पर्व मानव जीवन को प्रफुल्लित, उल्लासित, उद्देश्यमान कर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होने का संदेश देता है।

प्राध्यापक (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतेहपुर,
संगरिया, हनुमानगढ़ (राज.)-335065

Rajasthan Education Department

महावीर जयन्ती विशेष

भगवान महावीर के संदेश : आज के परिप्रेक्ष्य में

❒ राजेन्द्र कुमार गोलछा

जैन परम्परा में तीर्थंकरों का स्थान सर्वोपरि है। इस अवसर्पिणी काल में जैनों के तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के बाद अंतिम तीर्थंकर अर्थात चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुए। भगवान महावीर के उपदेशों को समझने से पहले हमें उस इतिहास को जानना अधिक जरूरी है जिसमें हम भगवान महावीर के कालखण्ड को समझ सकें।

भगवान महावीर स्वामी का जन्म ईसा से सन् 599 वर्ष पूर्व वैशाली गणतंत्र क्षत्रीय कुण्डलपुर में लिच्छनी वंश के महाराजा पिता सिद्धार्थ और महारानी माता त्रिशला की कुक्षी से तीसरी संतान के रूप में चैत्र सुदी 13 (तेरस) को हुआ। बालक का नाम उसके गुणों के अनुरूप वर्द्धमान रखा गया। यही वर्द्धमान बाद में महावीर बना। राजा सिद्धार्थ ने खुशी के इस प्रसंग पर राज्य में जन्मजात गुलामों व आजीवन बंदियों तथा ऋणभार से दबे प्राणियों को मुक्त करने की घोषणा की एवं जरूरतमंदों को धन का भुगतान राजकोष से करने की भी घोषणा की।

महावीर का लालन-पालन राजसी ठाट-बाट के साथ हुआ। बाल्यावस्था को पार कर जब यौवनावस्था में पहुँचे तब माता-पिता की आज्ञानुसार राजकन्या यशोदा के साथ वर्द्धमान का विवाह हुआ। उनकी एक प्रियदर्शन नाम की पुत्री भी हुई। लेकिन वर्द्धमान 28 वर्ष की अवस्था तक राजसी वैभव एवं विलास के दलदल में भी कमल के समान रहे। संसार के भोग एवं विलासिता के आकर्षण से कोसों दूर रहे। माता-पिता की मृत्यु के बाद संयम मार्ग अंगीकार करने का मन बनाया, लेकिन बड़े भाई नंदीवर्द्धन की आज्ञा नहीं होने से दो वर्ष और गृहस्थ जीवन में रहे। विनय और आज्ञा आपके रोम-रोम में बसी हुई थी। दो साल के वैराग्यकाल में 29 वर्ष पूर्ण होने के बाद भगवान ने एक वर्ष प्रातःकाल एक प्रहर तक हर रोज 1 करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान देते हुए गृहस्थ जीवन से विरक्त हो आत्मजागृति एवं प्राणिमात्र के कल्याण हेतु लगभग तीस वर्ष की अवस्था में अपने बड़े भाई नंदीवर्द्धन एवं परिवारजन की आज्ञा लेकर क्षत्रिय श्रेष्ठ ने राजसी परिधान से मुक्त होकर कठोर साधना पथ संयम (प्रव्रज्या) लेने हेतु मिगसर बदी 10 ज्ञातखण्ड उद्यान में शालवृक्ष के नीचे सिद्धों को नमस्कार करके पंचमुष्ठि लोच कर नमो सिद्धाणं का उच्चारण करते हुए दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा लेते ही मन में एक ही बात ठान ली कि मुझे अपनी आत्मा का कल्याण करना है। विश्व में जितने भी धर्म है उन सबका मूल आधार है आत्मा सो परमात्मा 'अप्पा सो परमप्पा।' उन्होंने पहले ही प्रवचन देना शुरू नहीं किया, पहले आत्मकल्याण पर दृष्टि रही। उस समय उनके शरीर पर देवदुष्य एक ही वस्त्र था। वह कुछ महीने ही रहा। सर्दी-गर्मी, वर्षा ऋतु के परिषह में वे बाजुओं को सीधा नीचे फैलाकर विहार करते। कभी-कभी शीत काल में खुले में ध्यान करते। प्रभु महावीर विचरण करते हुए कभी निर्धन झोंपड़ों में, कभी धर्मशालाओं में, कभी प्याऊ में, कभी लोहार की शाला में, कभी मालियों के घरों में, कभी शमशान में, कभी सूने घर में तो कभी वृक्ष के नीचे रहते। ऐसे-ऐसे स्थानों में रहते हुए कठोर तपस्या काल में महावीर को मनुष्यकृत, देवकृत, पिशाचकृत एवं पशुकृत आदि मरणांतिक वेदनाएँ, अनेक दुर्दर उपसर्गों को झेलना पड़ा। फिर भी उन उपसर्गों से वे तिल मात्र भी विचलित नहीं हुए। भिक्षा में रूखा-सूखा, ठण्डा-बासी, नीरस धान्य जो भी आहार मिलता उसे वे शांत भाव से और संतोषपूर्वक ग्रहण करते। भिक्षा न मिलने पर भी वैसे ही शांत मुद्रा और संतोष रखते। स्वाद विजय उनका लक्ष्य रहता। रोग उत्पन्न होने पर भी वे औषधि सेवन की इच्छा नहीं करते थे। ब्रह्मचर्य का पालन करते। अन्तर्मुख हो ध्यान में लीन हो जाते। निर्विकार कषाय रहित निर्मल ध्यान और आत्मचिंतन में समय बिताते। महावीर अपनी ध्यान स्थिति से तिल मात्र भी नहीं डिगे। महावीर ने अपनी ध्यान साधना पूर्ण की और उस स्थान से आगे चल पड़े। उनके मुख पर वही प्रसन्नता, सौम्यता और ताजगी झलक रही थी। प्रभु देह में रहते हुए भी देहातीत थे। आश्चर्य और संयोग की बात है कि इन साढ़े बारह वर्षों के साधना काल में महावीर के जीवन में उपसर्गों का प्रथम उपसर्ग एक अबोध अज्ञानी ग्वाले द्वारा चलाया गया और कष्टों का आखरी उपसर्ग एक ग्वाले द्वारा कानों में कीलें ठोंककर प्रस्तुत मर्मान्तिक वेदना देना। उनके साधक जीवन की यह अंतिम वेदना थी, कष्टों की यह आखिरी घड़ी थी। उपवास का मतलब होता है अपनी आत्मा में रमण करना व ध्यान में इतना लीन हो जाते हैं कि उन्हें शरीर का पता ही नहीं चलता। उनके पास अपार आत्मशक्ति थी। अपने पर आए हुए कष्टों एवं उपसर्गों को हिंसा से नहीं, क्रोध से नहीं, धनुष-बाणों से, तलवारों से, अस्त्र-शस्त्रों से भी प्रतिरोध नहीं किया। श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने सहजता, सरलता, सौहार्द्रता, कारुणिकता और परोपकार, क्षमाशीलता, वात्सल्यता, सहृदयता के भावों से जीता।

बैसाख शुक्ल 10 के दिन प्रभु महावीर की प्रथम देशना ऋजुबालिका नदी के तट पर प्रस्फुटित हुई। उनका कैवल्य महोत्सव असंख्य देव-देवेन्द्र वहाँ उपस्थित हो उनकी वंदना, स्तवना कर उत्सव उल्लास मना रहे थे। बैसाख शुक्ल एकादशी के मंगलमय प्रभात में प्रभु महावीर मध्यम पावा के महासेन उद्यान में पधारे। देवताओं ने अपने उत्कृष्ट श्रद्धा एवं भक्ति के मंगल प्रवाह में ऐसे दिव्य समवसरण की रचना की जिसकी दिव्यता भव्यता से ही दर्शक चमत्कृत और पुलकित हो उठे। भगवान महावीर के आगमन के संवाद जैसे ही मध्यम पावा में फैला तो हजारों नर-नारी दर्शन की तीव्र उत्कंठा से स्वजन-परिजन मित्र वर्ग को साथ में लिए

Rajasthan Education Department

महासेन वन में जनमानस उमड़ पड़ा। महावीर के आगमन की चर्चा से सौमिल की यज्ञशाला का वातावरण आंदोलित हो उठा। इन्द्रभूति गौतम ने महावीर का आगमन सुना, उनका मन अधिक व्यग्र हो उठा। मन में सोचा कि महावीर कोई सामान्य पुरुष तो नहीं है, जिसकी प्रथम परिषद में (सभा में) अगणित जनसमूह, असंख्य देवगण खिंचे आ रहे हैं। उसके पास साधना बल और तप का तेज अवश्य ही अद्‌भुत होगा। तत्वचर्चा में उन्हें परास्त करने की भावना से अपने 500 शिष्यों के साथ समवसरण की ओर बढ़ रहे थे। समवसरण के द्वार पर पहुँचते ही भगवान ने स्नेहसिक्त शब्दों में सम्बोधन किया-इन्द्रभूति गौतम! तुम आ पहुँचे? इन्द्रभूति गौतम संशय में आ गए। पुनः महावीर ने इन्द्रभूति गौतम को सम्बोधित किया-इन्द्रभूति! जीव के अस्तित्व के विषय में संदेह प्रकट करना अपनी सत्ता में संदेह प्रकट करना है।

भगवान महावीर के उपदेशों से यह शिक्षा मिलती है कि सादा जीवन उच्च विचार से तनावमुक्त जीवन जी सकते है। प्रसाधन सामग्री उपयोग करने से सुंदरता नहीं बढ़ती चाहे आप लिपस्टिक लगा लें, क्रीम लगा लें, शैम्पू लगा लें। हम जो चीज उपयोग ले रहे हैं-जैसे चमड़े का बैल्ट, पर्स, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री कहीं हिंसाजन्य प्रसाधन तो नहीं है। इसका विवेक अवश्य रखें। घरेलू रसोई कार्य में गैस का चूल्हा, आटा भिगोते, सब्जी सुधारते हुए दाल-चावल भिगोते हुए आदि अन्य कार्य करते हुए भी हमसे हिंसा न हो। सूक्ष्म जीवाणुओं की रक्षा का मन में ख्याल रखें। जीमण बाड़ी में भी रात्रिभर ही रोशनी जल रही है, रातभर खाना चल रहा है, यातायात के साधन उपयोग कर रहे हैं, उसकी महारम्भ हिंसा से बचने का प्रयास करें। यदि भगवान महावीर से हमें प्रेम है तो हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि स्थूल हिंसा नहीं करूँगा एवं सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की भी रक्षा करूँगा तथा हर कार्य में सावधानी रखूँगा। सर जगदीश चन्द्र बसु ने वैज्ञानिक धरातल पर सिद्ध किया कि वनस्पति में भी जीव होते हैं। वे हमारे जैसे ही हँसते हैं, रोते हैं, सभी प्रकार की प्रक्रियाएँ करते हैं। सभी जीवों को जीने का अधिकार है। हम मांसाहार एवं मदिरापान, हिंसा जन्य पदार्थों का उपयोग न करें। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अहिंसा के सिद्धांत के बल पर ही देश को स्वतंत्रता दिलाई थी। आज भी पंच महाव्रत धारी जैन साधु-साध्वी सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की रक्षा करते हुए विचरण करते हुए अपने स्व एवं पर कल्याण के मार्ग पर अग्रसर है।

सत्य- भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि तू सत्य को ही सच्चा तत्व समझ। जो बुद्धिमान होता है वह सत्य की वाणी ही बोलता है, लेकिन जो वाणी दूसरे के हदय को चोट पहुँचाती है वह चाहे वास्तविक हो फिर भी सत्य नहीं है। उसकी गणना असत्य में की गई है।

अचौर्य- भगवान महावीर का सिद्धांत अचौर्य साधु सम्पूर्ण अदत्तादान व्रत को स्वीकार करता है और श्रमणोपासक स्थूल अदत्तादान का त्यागी होता है। द्रव्य चोरी और भाव चोरी दोनों ही वर्जनीय है। जब अचौर्य की भावना का प्रचार-प्रसार होगा तो चोरी, लूटमार का भय नहीं होगा। सारे जगत में मानसिक और आर्थिक शांति स्थापित होगी। रोहिणीय चोर ने भगवान महावीर की वाणी को दबे स्वर में ही सुना और उसी से उसका हृदय परिवर्तित हो गया और उसने चोरी का मार्ग त्यागकर संयम साधना का मार्ग अपनाया।

ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्य व्रत उत्तम व्रत मोक्ष मार्ग का भूषण है। सर्वोत्तम मंगल मार्ग है। तपस्या में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ तपस्या है। स्वपत्नी संतोष ही ब्रह्मचर्य का सच्चा पालन है। उसमें भी हो सके उतना संयम पालन अतिआवश्यक है।

आज के वैज्ञानिक युग में अनेक आविष्कार हुए हैं और भौतिक सुख-सुविधाओं का व्यापक विस्तार किया है, परन्तु इससे मानव को सुख-शांति का अनुभव नहीं हो रहा है। शारीरिक सुविधाएँ होते हुए भी क्षणिक शांति का अनुभव तो कर सकता है लेकिन स्थाई शांति वो प्राप्त नहीं कर रहा है। वो मानसिक तनाव का शिकार है। मन में शांति नहीं है। आधुनिक विज्ञान का स्वरूप कल्याणकारी नहीं है। यह सत्य है कि विज्ञान जगत की अनेक उपलब्धियाँ तभी सार्थक व हितकारी हो सकती है जब उसके साथ धर्म और अध्यात्म का संयोग हो। विश्व शांति व आत्मशांति के लिए ऐसे समन्वय की नितान्त आवश्यकता है।

आज के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर के सभी संदेश व उपदेश हमें और बेहतर जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं। हम ऐसे वातावरण में रहते हैं जहाँ हिंसा है, झूठ है, फरेब है, चोरी-डकैती, बलात्कार का भय, भ्रष्टाचार, धन-पिपासा, दंभ, स्वभाव, समभाव, सद्‌भावना की कमी है। हम राग-द्वेष, काम-क्रोध, मान-माया, लोभ, तृष्णा, ईर्ष्या के दावानल से बचने के लिए प्रभु महावीर के सारगर्भित संदेश सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांत, स्याद्‌वाद, क्षमाशीलता के गुणों को अपनी जीवनशैली में अपनाकर आचरण में लाकर सत्यवादी, साहूकारी, स्वस्त्री संतोष, परकल्याण की भावना, सहनशीलता के गुणों को जीवन में विकास कर आत्मसात् कर सकारात्मक सोच, अच्छे नजरिए के साथ इस वातावरण को कलियुग को सतयुग में बदल सकते हैं।

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दणं वणं।।

महावीर जो बोलते उसको पहले जीते थे। ये उनकी विशेषता थी। हम सिर्फ महापुरुषों की जीवनी पढ़ लेते हैं, महापुरुषों से प्रवचन सुन लेते हैं, उससे हमें कुछ ही मिलेगा, लेकिन नवनीत चाहिए तो हमें उन उपदेशों को, सिद्धांतों को आत्मसात कर आचरण में लाकर हम अपनी जीवनशैली में ढाल लें तभी हमारा उत्थान, कल्याण हो सकता है। एक से एक जुड़े तो कारवां बन सकता है। और हम अपने जीवन में सकारात्मक भावना के साथ स्वकल्याण के साथ परकल्याण में सहभागी बन सकते हैं।

आज विश्व जिस दौर से गुजर रहा है उसे देखते हुए महावीर के सिद्धांतों की पुनर्प्रतिष्ठा की प्रबल आवश्यकता है। महावीर का 'अहिंसा परमो धर्मः', 'जियो और जीने दो' जैसे सिद्धांत ही विश्वशांति के अमोघ उपाय है।

सच्चे अर्थों में भगवान महावीर एक आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक युगदृष्टा थे। महावीर जयंती के पावन अवसर पर भगवान महावीर के श्रीचरणों में कोटि-कोटि वंदन।

C/o श्री मेघराज गोलछा, गोलछा मोहल्ला,
बीकानेर (राज.)
मो: 9414143069

Rajasthan Education Department

विश्व पृथ्वी दिवस

❒ मनोज साँखला

ॐ द्यौ शान्तिन्तरिक्षः शान्तिः पृथ्वी
शान्तिरापः शान्तिः रोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः
शान्तिब्रह्मा शान्तिः सर्व शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॐ

भारतीय मनीषियों द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी, अंतरिक्ष, औषधि, अग्नि, पवन, जड़ चेतन आदि की शांति की कामना की गई है। लेकिन वर्तमान में मानव ने अपने विकास कहे अथवा अपनी असीमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का असीमित दोहन प्रारंभ कर दिया जिससे पृथ्वी के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा हो गया है। पृथ्वी सम्पूर्ण मानवता की एक साझी विरासत है।

तमाम तरह की सुख-सुविधाएँ और संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों के कारण आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग की भयावह समस्या से ग्रस्त है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण को लेकर लोगों में जागरूकता पैदा करने और पृथ्वी बचाने के संकल्प के साथ हर साल 22 अप्रेल को दुनिया भर में पृथ्वी दिवस मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र में पृथ्वी दिवस को हर साल वर्ष का वह समय जब दिन और रात बराबर होते है पर मनाया जाता है और यह दिन प्रायः 21 मार्च ही होता है। इस परम्परा की स्थापना शांति कार्यक्रम जॉन मेक्कोनेल द्वारा की गई थी। वैश्विक स्तर पर लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए 22 अप्रेल 1970 को पहली बार पृथ्वी दिवस वृहद स्तर पर मनाया गया था तभी से हर साल 22 अप्रेल को यह दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया गया।

पृथ्वी दिवस पहले हर साल दो बार 21 मार्च तथा 22 अप्रेल को मनाया था लेकिन साल 1970 से यह दिवस 22 अप्रेल को ही मनाया जाना तय किया गया। 21 मार्च को पृथ्वी दिवस केवल उत्तरी गोलार्द्ध के वसंत तथा दक्षिण गोलार्द्ध के पतझड़ के प्रतीक स्वरूप ही मनाया जा रहा है। 21 मार्च को मनाए जाने वाले पृथ्वी दिवस हालांकि संयुक्त राष्ट्र का समर्थन प्राप्त है जबकि 22 अप्रेल को मनाए जाने वाले पृथ्वी दिवस का पूरी दुनिया में सामाजिक एवं राजनैतिक महत्त्व है।

इस बार कोरोना काल में विश्व पृथ्वी दिवस की थीम है 'पृथ्वी को फिर से अच्छी अवस्था में बहाल करना।' जिसके लिए प्राकृति स्रोत एवं उभरती हुई तकनीकों पर ध्यान देना

होगा जो दुनिया के पारिस्थितिकी तंत्र को फिर से कायम करने में मददगार साबित होंगे।

वर्ष 2020 में विश्व पृथ्वी दिवस का थीम जलवायु कार्रवाई (क्लाइमेट एक्शन) था। वर्ष 2019 में विश्व पृथ्वी का थीम 'अपनी प्रजातियों की रक्षा करे (प्रोजेक्ट आवर स्पीसीज) था। वर्ष 2018 में विश्व पृथ्वी दिवस के लिए प्लास्टिक प्रदूषण का अंत था। वर्ष 2017 में विश्व पृथ्वी दिवस के लिए थीम 'धरातल के लिए पेड़ थी'

- विश्व पृथ्वी दिवस 2015 का विषय- जल अद्भुत विश्व था।
- विश्व पृथ्वी दिवस 2014 का विषय- 'हरे शहर'
- विश्व पृथ्वी दिवस 2013 का विषय - 'जलवायु परिवर्तन का चेहरा'
- विश्व पृथ्वी दिवस 2012 का विषय - 'धरती को संगठित करना'
- विश्व पृथ्वी दिवस 2011 का विषय था- 'वायु को साफ करें'
- विश्व पृथ्वी दिवस 2009 का विषय था- 'कैसे आप आस-पास रहते है'
- विश्व पृथ्वी दिवस 2008 का विषय था- 'कृपया पेड़ लगाए'
- विश्व पृथ्वी दिवस 2007 का विषय था- 'धरती के प्रति दयालु बने, संसाधनों को बचाने से शुरूआत करें।

पृथ्वी दिवस पर कहे गए यह सभी कथन हमें धरती का ध्यान रखने और इसकी प्राकृतिक सम्पत्ति को संरक्षित करने की प्रेरणा देते है। पृथ्वी दिवस को मनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम और अभियानों का आयोजन पर्यावरण संबंधी नेताओं का एक समूह करता है। विभिन्न प्रकार के लाभप्रद उपायों को लागू करने के द्वारा पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान करने के लिए विभिन्न देशों से बड़ी संख्या में लोग एक साथ होते है।

नई पीढ़ियों के स्वागत के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ विश्व बनाने के लिए स्वच्छ पर्यावरण के विषय वस्तु के प्रदर्शन में लोग भाग लेते है। धरती के पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए तथा लोगों को प्रेरणा देने के लिए विश्व पृथ्वी दिवस को मनाने का लक्ष्य है।

इस दिन लोग धरती की सुरक्षा से संबंधित बाहरी गतिविधियों में शामिल होते है। जैसे नए पेड़-पौधे लगाना, सड़क के किनारों से कचरा उठाना, अवशिष्ट का पुनःचक्रण करना, ऊर्जा संरक्षण आदि दिनों-दिन बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग और दूसरे पर्यावरणीय तबाही से बचने के लिए सरकार से त्वरित कार्यवाही करने के लिए आग्रह करते है। परिस्थितिकों को बढ़ावा देने और ग्रह पर जीवन के सम्मान के साथ ही वायु जल और भूमि प्रदूषण की बढ़ती समस्या के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इसका आयोजन किया जाता है।

पृथ्वी दिवस को मनाने के लिए कई तरीके है। भूमि और जल प्रदूषण को टालने के लिए प्लास्टिक, थैलों के इस्तेमाल में कमी लाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना। जरूरी स्थानों पर नए पेड़-पौधे लगाना। अपने परिवार के साथ कुछ बाहरी गतिविधियों में शामिल होना जैसे पेड़ पर पक्षी के लिए घोंसला बनाना और पारिस्थितिकी तंत्र में उनकी भूमिका के बारे में चर्चा करना। लोगों के समक्ष पर्यावरणीय मुद्दों को रखने के साथ ही युद्ध विरोधी आंदोलन को बढ़ावा देना, दूसरे जीव जन्तु, स्व बोध के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करना करना। विद्युत के गैर जरूरी इस्तेमाल को घटाने के लिए ऊर्जा संरक्षण को बढ़ाना।

''बोलते हुए स्वर्ग से बात करने के लिए पेड़ पृथ्वी का अंतहीन प्रयास है।'- रविन्द्रनाथ टैगोर

व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खैराना,
सुनेल, झालावाड़ (राज.)
मो: 9351762339

Rajasthan Education Department

स्वास्थ्य जागरूकता

❐ देवेन्द्र प्रसाद डाबी

विश्व स्वास्थ्य दिवस का इतिहास: विश्व में स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता व समाज में व्याप्त स्वास्थ्य सम्बन्धी मिथकों को दूर करने के लिए विभिन्न देशों, गैर सरकारी संगठनों, सिविल सोसायटी व विभिन्न एजेन्सियों के मध्य सहयोग व सामंजस्य स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुशंगी इकाई के रूप में विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना 7 अप्रेल, 1948 को की गई थी। इसका मुख्यालय स्विटजरलैण्ड के जेनेवा शहर में स्थापित किया गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 1950 में विश्व की पहली स्वास्थ्य सभा का आयोजन किया गया था, इसी स्वास्थ्य सभा में विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा प्रतिवर्ष 7 अप्रेल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने का निर्णय किया गया। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य दुनियाभर के लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर, उनका जीवन स्तर ऊपर उठाकर उनका सर्वकल्याण करना है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस की महत्ता:– ऐसा माना जाता है कि स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है, यदि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ बेहतर हो तो वह किसी भी कार्य को तनाव रहित होकर कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य दिवस की महत्ता निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट की जा सकती है–

- विश्व के लोगों को इस बात के लिए जागरूक करना कि वे किस बीमारी से ग्रसित है तथा उसका प्रभाव आने वाले समय मे कितना खतरनाक हो सकता है।
- मान्यताओं, अंधविश्वास व लापरवाही से बच्चों और युवाओं की होने वाली असमय मृत्यु पर रोक लगाने के लिए जागरूक करना।
- इलाज के लिए अच्छी सुविधाएँ विकसित करने में सुझावों, रिपोर्ट्स के माध्यम से विभिन्न देशों का ध्यान आकर्षित करना।
- जलवायु परिवर्तन व सतत विकास लक्ष्यों से सरकारों व संगठनों को जागरूक करके विश्व की आर्थिक प्रगति को सुनिश्चित करना।
- जागरूकता के माध्यम से विभिन्न देशों के सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक व भौतिक विकास के मार्ग को प्रशस्त करना।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर किए जाने वाले कार्यक्रम :– विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा सम्बन्धित देशों के माध्यम से पूरे विश्व में एक शृंखलाबद्ध कार्यक्रम से पूरे वर्ष भर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में से कुछ निम्नलिखित हैं–

- सरकारी, गैर सरकारी क्षेत्रों व गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से विश्व में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना।
- साइकिल रैली, वाहन रैली, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों का ध्यान आकर्षित करना।
- वाद–विवाद, चर्चा, परिचर्चा, निबन्ध लेखन के माध्यम से लोगों में स्वास्थ्य जागरूकता फैलाना।
- नई बीमारियों की उत्पत्ति, कारण, निदान व प्रसार पर रोक लगाने के लिए विभिन्न उपायों को जनता के समक्ष साझा करना।
- जगह–जगह पर विभिन्न रोगों की जाँच हेतु निःशुल्क शिविर का आयोजन करना।

प्रत्येक स्वास्थ्य दिवस पर नई थीम:– अपने स्थापना वर्ष 1950 से ही विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा विश्व स्वास्थ दिवस को थीम आधारित मनाए जाने की परम्परा रही है। प्रत्येक वर्ष नई थीम का निर्धारण, वर्तमान समय में चल रही समस्या का निदान करने के लिए काफी विचार–विमर्श के पश्चात सदस्य देशों की सहमति के आधार पर किया जाता है। इसी थीम को आधार मानते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पूरे विश्व भर में जागरूकता कार्यक्रम विश्व के भिन्न–भिन्न देशों में आयोजित किए जाते हैं। वर्ष 1950 से 'अपनी स्वास्थ्य सेवाओं को जानिए' थीम को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अब तक अपनी थीम के लिए विश्व में व्याप्त गंभीर बीमारियों जैसे मलेरिया उन्मूलन, टी.बी., मधुमेह, कैंसर, उच्च रक्त चाप, धूम्रपान और स्वास्थ्य, हृदय रोग, पोलियो उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन को चुनकर विश्व भर में इन समस्याओं का ध्यान अपनी और खींचा है। वर्ष 1995 में विश्व स्वास्थ्य दिवस पर 'वैश्विक पोलियो उन्मूलन' थीम के साथ विश्व भर से पोलियो के उन्मूलन का कार्यक्रम प्रारम्भ किया था, जिसके सुखद परिणाम आज विश्व के सामने हैं। वर्ष 2020 मे जब कोरोना महामारी अपनी चरम सीमा पर थी, तब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना के कारण नर्सो और दाइयों पर पड़ रहे दबाव को कम करने के लिए विश्व भर से नर्सो और दाइयों के समर्थन का ध्यान खिंचा था। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी हाल ही में जारी रिपोर्ट 'हमारा ग्रह हमारा स्वास्थ्य' के अनुसार जलवायु परिवर्तन और मानव जनित प्रदूषण के कारण मानव स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है तथा विश्व के कई देशों में असामयिक मौतें हो रही हैं।

स्वास्थ्य जागरूकता में विद्यालय की भूमिका:– बेहतर भविष्य निर्माण की आधारशिला स्वास्थ्य है तथा छात्रों में स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता विकसित करने में परिवार के बाद विद्यालय की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय निम्न प्रकार से भूमिका निभा सकता है–

- स्वास्थ्य सम्बन्धी अच्छी आदतों के बारे में बताकर उन्हें व्यवहार में लाने हेतु प्रेरित करना।
- विश्वभर में फैले संक्रामक रोगों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- निबन्ध, चर्चा, परिचर्चा, वाद–विवाद के माध्यम से स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता को बढ़ावा देना।
- स्वास्थ्य के क्षेत्र मे काम करने वाले विभिन्न गैर सरकारी संगठनों, सिविल सोसायटी, विभिन्न पर्यावरणविदों की रिर्पोट्स को साझा कर जागरूकता को बढ़ावा देना।
- भोजन की अच्छी आदतों, स्वच्छ पेयजल की महत्ता, जलवायु परिवर्तन व इससे सम्बन्धित दुष्प्रभावों की जानकारी प्रदान करना।

विश्व स्वास्थ्य दिवस के माध्यम से लोगों को जागरूक कर लोगों को विश्व की अनेक जानलेवा बीमारियों से बचाया गया है, इसके बाद भी आज विश्व अनेक खतरनाक बीमारियों की चपेट में आने की आशंका से ग्रसित है। यदि हम सभी विश्व स्वास्थ्य दिवस की मुहिम मे बढ़–चढ़कर हिस्सा लें तो दुनिया की नई तस्वीर हमारे सामने आ सकती है। हम सब को सुरक्षित व स्वस्थ जीवन प्राप्ति के हर संभव प्रयास करने चाहिए।

प्रधानाचार्य,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुड़ा एन्दला,
पाली (राज.)

Rajasthan Education Department

रपट

माननीय शिक्षा मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह

❒ संगीता टाक

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीरामसर का वार्षिकोत्सव 19 मार्च, 2022 को रामदेव मंदिर परिसर श्रीरामसर में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय मंत्री शिक्षा, कला एवं संस्कृति विभाग राजस्थान सरकार डॉ. श्री बी. डी. कल्ला, विशिष्ट अतिथि लालेश्वर महादेव मंदिर अधिष्ठाता श्री विमर्शानंद गिरि जी महाराज, अध्यक्ष जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा) बीकानेर श्री सुरेंद्र सिंह भाटी एवं गणमान्य अतिथिगण अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्रीमती कांता छाबा, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी बीकानेर श्री सुनील बोड़ा, श्री अजय रंगा, एपीसी समसा बीकानेर श्री कैलाश बड़गुजर, सेवानिवृत आई.आर.एस. अधिकारी श्री गोपाल परिहार आदि ने अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति दी। शाला प्रधानाचार्य श्रीमती संगीता टाक एवं शाला स्टाफ ने अतिथियों का भावभीना स्वागत किया। माननीय शिक्षा मंत्री ने माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप-प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। समस्त शाला स्टाफ एवं प्रधानाचार्य ने सभी आगंतुक अतिथियों का माल्यार्पण किया।

इस अवसर पर अभिभावकों एवं पूर्व कार्मिकों ने शाला को नकद आर्थिक सहयोग प्रदान किया। शाला को 40,000 रुपये का चेक प्याऊ निर्माण हेतु सुपुर्द करने पर मंत्री जी ने शाला की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती सुनीता साध को साफा एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। भामाशाहों श्री नेमीचंद गहलोत, महावीर इंटरनेशनल गंगाशहर केंद्र, श्री अशोक चाण्डक, श्री गोपाल परिहार आदि ने शाला को नकद आर्थिक सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में 9 भामाशाहों एवं 34 पूर्व विद्यार्थियों एवं 14 पूर्व कार्मिकों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में अभिभावकों एवं बच्चों की शानदार उपस्थिति देखकर माननीय मंत्री जी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने विद्यालय को चार कक्षा-कक्षों हेतु 40 लाख रुपये की सौगात प्रदान की। शाला की मांग पर नया संकाय एवं विषय स्वीकृत करने की सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की। सीमित संसाधनों के बावजूद वार्षिकोत्सव के आकर्षक आयोजन से अभिभूत मंत्री महोदय ने शाला परिवार एवं आयोजन से जुड़े लोगों की सराहना करते हुए बच्चों को नैतिक शिक्षा के सबक सिखाए। उन्होंने कहा कि कक्षा 12 तक पढ़ने वाले बच्चों को मोबाइल काम में नहीं लेना चाहिए। मोबाइल व टीवी. बच्चों का बचपन छीन रहा है। अत: परिजनों को संबोधित करते हुए माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि बच्चों को मोबाइल से दूर रखा जाए साथ ही फास्टफूड से भी परहेज रखना चाहिए एवं उन्हें प्रतिदिन कसरत करने हेतु प्रेरित किया जाए। अभिभावकों व बच्चों ने माननीय मंत्री महोदय की बातों को न केवल गौर से सुना बल्कि उन पर अमल करने का विश्वास भी जताया।

विशिष्ट अतिथि लालेश्वर महादेव मंदिर अधिष्ठाता श्री विमर्शानंद गिरि महाराज ने बच्चों के समक्ष आदर्श विद्यार्थी को परिभाषित करते हुए कहा कि आदर्श विद्यार्थी जीवन में सुख की चाह न रखते हुए केवला विद्या की चाह रखता है। वह धैर्य, साहस, ईमानदारी, लगनशीलता, गुरुभक्ति, स्वाभिमान जैसे गुणों को धारण करता हुआ जीवन-पथ पर बढ़ता ही चला जाता है। आदर्श विद्यार्थी संयमित जीवन जीता है ताकि विद्यार्जन में बाधा उत्पन्न न हो। एक आदर्श विद्यार्थी नियमबद्ध एवं अनुशासित रहता है।

जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा बीकानेर श्री सुरेंद्र सिंह भाटी ने आयोजन को सराहा और बच्चों से कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया। एसीबीइओ श्रीमती कांता छाबा ने आयोजन को अभूतपूर्व बताया और बच्चों के उत्साहवर्धन का जरिया बताते हुए कहा कि ऐसे आयोजन से बच्चों में निहित प्रतिभाओं को तराशने में मदद मिलती है।

इस दौरान विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ बच्चों द्वारा पेश की गई। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण नन्हीं बच्ची मेघना का राजस्थानी नृत्य रहा। नन्हीं बालिका के सुंदर नृत्य से संपूर्ण पांडाल झूम उठा।

कार्यक्रम के संपूर्ण आयोजन को सुचारू रखने हेतु शाला स्टाफ सदस्य रिछपाल विश्नोई, जुगल किशोर, संतोष कुमार, रोहिताश कांटिया, टोडाराम, राजकमल चौधरी, महेंद्र मोहन व्यास, रामेश्वर ओझा, कमल नारायण आचार्य, सूरजमल परिहार, सोहनलाल चौधरी, जितेंद्र आचार्य, अन्नपूर्णा वर्मा, संध्या खारड़िया, बेला खत्री, उषा सारस्वत, शीला स्वामी आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंच संचालन श्री शिव कुमार एवं श्री दिलीप परिहार ने किया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीरामसर,
बीकानेर (राज.)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

रपट

निदेशक महोदय के आतिथ्य में मनाया वार्षिकोत्सव

❐ दीपाराम सीरवी

''I visited this school today this is adarsh school in the sence.''30 जनवरी 2017 को स्थानीय विद्यालय श्रीमती सुन्दर बाई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पीपलियां कलां (पाली) के विजीटर बुक में तत्कालीन प्रमुख शासन सचिव शिक्षा श्रीमान नरेश पाल गंगवार (IAS) द्वारा लिखी गई ये पंक्तियां विद्यालय का गौरव बढ़ाती है। तत्पश्चात फरवरी 2019 में पाली जिला माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय संस्थाप्रधान सत्रांत वाक्पीठ में पधारे श्रीमान निरंजन आर्य अति. वित्त सचिव, राजस्थान सरकार एवं श्रीमान आर. वैंकटेश्वरन प्रमुख शासन सचिव शिक्षा, राजस्थान सरकार, जयपुर ने गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक एवं भौतिक विकास के लिए अपने उद्बोधन में भूरि-भूरि प्रशंसा कर अपने उद्गार व्यक्त किए। समय-समय पर शिक्षा विभाग के जिला, संभाग एवं राज्य स्तरीय अधिकारियों के आगमन एवं मार्गदर्शन से स्थानीय विद्यालय को संबलन एवं प्रेरणा मिलती रही है। दिनांक 19 मार्च 2022 को इस विद्यालय के इतिहास में एक और सुनहरा अध्याय तब जुड़ गया जब विद्यालय के वार्षिकोत्सव में श्री काना राम निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

स्थानीय ग्राम के भामाशाह श्री पारस राज शाह (स्वर्गवास 16 मार्च, 1982) का ग्राम के प्रति लगाव एवं दूरदृष्टि का परिणाम है कि आज से 50 वर्ष पूर्व 1972 में इस सुंदर इमारत का निर्माण करवाकर अपनी दादीसा श्रीमती सुंदरबाई के नाम से शिक्षा विभाग को समर्पित किया जिसमें हजारों विद्यार्थियों ने विद्याध्ययन कर अपना कॅरियर बनाया एवं यहीं से विद्याध्ययन कर यहीं पर संस्थाप्रधान (दीपाराम सीरवी) बनने का गौरव प्राप्त किया। वर्तमान में उनके सुपुत्र श्री पंकज पी. शाह (पी.जी. फॉइल्स लिमिटेड), श्री अशोक पी. शाह (अहमदाबाद) एवं श्री अभय पी. शाह (प्रेम केबल्स प्रा. लिमिटेड) ग्रुप का नाम भारत ही नहीं बल्कि विश्वभर में अपने-अपने क्षेत्रों में पहचान रखते हैं। यह विद्यालय 1975 में तत्कालीन जैतारण विधायक एवं स्थानीय ग्राम निवासी श्री सुखलाल सैंणचा के प्रयासों से माध्यमिक स्तर एवं 1996 में उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत हुआ। जिसमें कला वर्ग (भूगोल, हिन्दी साहित्य, संस्कृत साहित्य, राजनीतिक विज्ञान, इतिहास) एवं वाणिज्य वर्ग के साथ संचालित था। सत्र 2020-21 में राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव श्रीमान निरंजन आर्य के प्रयासों से विज्ञान वर्ग (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान) का शुभारंभ हुआ। पाली जिले के श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों में शुमार स्थानीय विद्यालय भौतिक एवं मानवीय संसाधन से समृद्ध है। तीनों संकायों के साथ यहाँ पर व्यावसायिक शिक्षा, राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट व गाइड, ईको क्लब आदि गतिविधियाँ सतत रूप से संचालित होती है। विद्यालय के श्रेष्ठ परिणाम एवं राज्य सरकार की मंशा अनुरूप विद्यालय परिकल्पना को साकार करने में अग्रणी रहने पर स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य दीपा राम सीरवी को 26 जनवरी, 2017 को शिक्षा संकुल जयपुर में राज्य स्तर पर सम्मानित होने एवं राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधि के श्रेष्ठ संचालन पर प्रथम राज्य स्तरीय सम्मान समारोह आयोजन रविन्द्र रंगमंच बीकानेर में कार्यक्रम अधिकारी माणक चन्द मकवाना को एवं स्वयंसेवक खुशी शर्मा को सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ।

राज्य सरकार के शिक्षा विभागीय निर्देशानुसार रायपुर ब्लॉक में वार्षिकोत्सव हेतु चयनित स्थानीय विद्यालय में कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती शोभा चौहान (विधायक, सोजत) द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय सरपंच एवं युवा उद्यमी श्री अनिकित शाह द्वारा की गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान काना राम (IAS) निदेशक महोदय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के शुभागमन पर विद्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार पर श्री श्याम सुंदर सोलंकी (संयुक्त निदेशक, पाली) के निर्देशन में जिले के शिक्षा अधिकारी गण एवं प्रधानाचार्य द्वारा भावभीना स्वागत कर अगवानी की गई। विद्यालय की बालिकाओं द्वारा कुमकुम तिलक से स्वागत कर राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट गाइड बैंड धुन पर स्लो मॉर्च के साथ कार्यक्रम स्थल पर लेकर आए एवं आसन ग्रहण करवाया।

श्रीमान निदेशक महोदय की उपस्थिति में विद्यालय के विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी। निदेशक महोदय द्वारा प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया जो निम्नानुसार है-

विद्यालय में आयोजित वार्षिकोत्सव के शानदार आयोजन के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को बधाई। अभिभावकों से आह्वान है कि जो गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा राजकीय विद्यालयों में है, यह आपको निजी विद्यालयों में नहीं मिलेगी। जिसका उदाहरण है कि राज्य सरकार द्वारा जो महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय प्रारंभ किए हैं वहाँ आज भी विद्यार्थियों का प्रवेश लॉटरी के माध्यम से होता है अर्थात विद्यालय में 100 सीटें है तो प्रवेश लेने वालों की संख्या 200, 300, 400, 500 हैं जबकि स्टाफ वही है। राज्य सरकार ने इसी बात को ध्यान में रखकर बजट घोषणा 2023 में 2000 महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोलने का निर्णय लिया है। ताकि बच्चे गरीब परिवार से है और उनके अभिभावक निजी विद्यालयों में अपने बच्चों को नहीं पढ़ा सकते हैं उन बच्चों को अवसर प्रदान करने तथा निजी विद्यालय से पढ़कर आने वाले विद्यार्थियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके। शिक्षकों से भी आह्वान है कि जिस प्रकार वहीं शिक्षक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय को अच्छी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दे सकता है तब हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में भी अपनी छाप छोड़े जिससे कोई विद्यार्थी शिक्षा से वंचित नहीं रहे तथा ड्रॉप

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

आउट भी नहीं हो। मैं स्वयं राजकीय विद्यालय में पढ़ा हूँ तथा पढ़ाया भी है। मैं मानता हूँ कि यदि बालक को सही समय पर मार्गदर्शन नहीं मिलता है तब वे प्रतिभाएँ अपने रास्ते से भटक जाती है या फिर उचित मार्गदर्शन नहीं मिलने से दौड़ में पीछे रह जाते हैं। मैं चाहूँगा कि इसी विद्यालय से जागरूक प्रधानाचार्य एवं शिक्षकगण विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करे जिससे उनका विद्यालय से जुड़ाव बना रहे। उन्हें ये भी पता रहेगा कि मुझे कौनसी गतिविधि में भाग लेना है, कौनसा पाठ्यक्रम चयन करना है। इससे उन्हें किसी तरह की समस्या नहीं आएगी क्योंकि आप से बेहतर उस विद्यार्थी को कोई नहीं जानता है। आप द्वारा विद्यार्थी की क्षमता और योग्यता का आकलन कर निर्देशन किया जा सकता है। हम प्रयास करेंगे कि हमारे पाठ्यक्रम में भी कॅरियर काऊंसलिंग को सम्मिलित किया जाए। भामाशाहों ने विद्यालय को सहयोग दिया है। मैं चाहूँगा कि सभी अभिभावक भी विद्यालय में सहयोग करें। किसने कितना किया है यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। विद्यादान सबसे महत्त्वपूर्ण है। राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का अधिक से अधिक विद्यार्थियों को लाभ मिले। पिछले दो वर्षों से कोरोना महामारी के कारण विद्यार्थी की लेखन क्षमता में कमी आई है। विद्यालय कम समय खुले हैं। राज्य सरकार ने विद्यार्थी हित में पाठ्यक्रम कम किया है। परीक्षा समय अवधि कम की है; प्रश्न पत्र में भी बदलाव किया है। सभी शिक्षक पूर्ण निष्ठा के साथ मेहनत कर श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने का प्रयास करे।

इस अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'उड़ान' का विमोचन भी किया गया। विद्यालय की शैक्षिक और सहशैक्षिक प्रतिभाओं को प्रमाण-पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के भामाशाहों का बहुमान किया गया। विद्यालय प्रधानाचार्य द्वारा विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया जिसमें मुख्यमंत्री विद्यादान कोष (ज्ञान संकल्प पोर्टल) में जिले में संख्यात्मक रूप से सर्वाधिक दानदाताओं द्वारा राशि प्रदान कर विद्यालय को जिले में प्रथम स्थान दिलाने पर आभार व्यक्त किया गया।

इस अवसर पर श्री श्याम सुंदर सोलंकी, संभागीय संयुक्त निदेशक, पाली श्री प्रकाशचन्द सिगाड़िया मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, श्री मदन लाल पंवार जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारंभिक, श्री सत्येन्द्र राजपुरोहित अति. जिला शिक्षा अधिकारी, श्री तुलसीराम सहायक निदेशक, श्री हरिराम सैनी CBEO रायपुर, श्री नाहर सिंह CBEO सोजत, श्री मांगीलाल CBEO जैतारण, श्री देवाराम प्रजापति ACBEO मारवाड़ जंक्शन, श्री खींवाराम चौधरी प्रधानाचार्य जाडन, श्री जितेन्द्र कुमार प्रधानाचार्य झूठा के साथ रायपुर ब्लॉक के अधिकतम PEEO उपस्थित रहे। पधारे हुए सभी अतिथियों का जगदीश चन्द्र सीरवी द्वारा आभार प्रकट किया गया।

प्रधानाचार्य
श्रीमती सुन्दर बाई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
पीपलियां कलां, पाली (राज.)

प्रमाण-पत्र

(शिविरा पत्रिका में प्रकाशन बाबत)

मैं.....पुत्र श्री.....पद..... (यदि कोई हो).....
पदस्थापन (यदि कोई हो)..... .....अपनी रचना.....आगामी माह के शिविरा पत्रिका के अंक में प्रकाशित करवाना चाहता हूँ। मेरे द्वारा प्रेषित यह रचना मौलिक है, अप्रकाशित है एवं अप्रसारित है।

हस्ताक्षर
(नाम.....)
पूर्ण पता.....
.....
पिनकोड.....
मो:.....

वरिष्ठ संपादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर-334001

रचनाकार के बैंक का विवरण

1.	बैंक खाता संख्या		2.	बैंक का नाम	
3.	शाखा का नाम		4.	IFSC CODE	

रचनाकार अपनी रचना के साथ यह प्रमाण-पत्र निम्न पते/ई-मेल पर अवश्य प्रेषित करें।

वरिष्ठ संपादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर-334011
Email: shivira.dse@rajasthan.gov.in

नवाचार

फाल्गुन के रंगों में रंगा साहोड़ी का सरकारी स्कूल

❒ राजेश लवानिया

इन्द्र धनुष सा लग रहा ये सरकारी स्कूल
रंग देखकर इतने सारे मन रहे कूल कूल

रंग-बिरंगी दीवारें बच्चों को आकर्षित करती हैं और उनमें सौंदर्यबोध का एहसास कराती हैं और इन दीवारों से खेल-खेल में कुछ सीखने को भी मिले तो क्यों कोई बच्चा ऐसी स्कूल में पढ़ना नहीं चाहेगा? इसी मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए अलवर जिले के उमरैण पंचायत समिति के साहोड़ी गाँव के सरकारी स्कूल का कायापलट किया गया है। इस स्कूल के नामांकन में 75 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

विद्यालय में प्रवेश करने से पूर्व ही आकर्षक भवन मन मोह लेता है। अंदर प्रवेश करते ही पानी की टंकी को बोतल शेप देकर पेयजल की व्यवस्था की गई है। विद्यालय की भौगोलिक स्थिति पहाड़ी पर सीढ़ीनुमा है। इसलिए सीढ़ियों को भी सीखने-सिखाने के लिए तैयार किया गया है, सीढ़ियों के बायीं ओर डिजीटल लाइब्रेरी के कक्ष पर बनी किताबें बच्चों को पढ़ने के लिए आमंत्रित करती नजर आती हैं और चौक में जाते ही सेलफ़ी पॉइंट बच्चों को आकर्षित करने के साथ शिक्षा के पंख लगाकर ऊँची उड़ान भरने की प्रेरणा देता है। छोटे बच्चों का कक्ष और बरामदा बहुत कुछ सिखाता नजर आता है।

यह स्कूल कुछ वर्ष पूर्व उच्च प्राथमिक था और यह पलखड़ी ग्राम पंचायत में आता था। राज्य सरकार के आदेश से पहले सैकण्डरी फिर साहोड़ी ग्राम पंचायत बनी तो यह स्कूल सीनियर सैकण्डरी में क्रमोन्नत कर दिया गया लेकिन यहाँ पर इंफ्रास्ट्रेक्चर केवल 8वीं तक ही था। मात्र 6 कक्षा-कक्षों में संचालित स्कूल की स्थिति में सभी कमरे बरसात में टपकते थे और कमरों की फर्श और प्लास्टर भी खराब स्थिति में था। भवन विस्तार हेतु जगह नहीं थी। ग्राम पंचायत ने कक्षा-कक्षों के निर्माण हेतु जगह उपलब्ध कराई और समग्र शिक्षा अभियान अंतर्गत पुस्तकालय कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष और साइंस लैब और दो कक्षा-कक्षों का निर्माण करवाया और पूर्व के जर्जर भवन की सुध ली सहगल फ़ाउंडेशन ने और अब कुछ ही महीनों में आकर्षक स्कूल बन गया।

सहगल फ़ाउंडेशन के इंजीनियर जोगेन्द्र ने बताया कि ग्रामीणों के साथ मिलकर भवन के 6 कमरों और परिसर की मरम्मत कराकर नवीनीकरण किया जिसमें फ़र्श, छत, दरवाजे, खिड़की, प्लास्टर, शौचालय और पेंट कराया साथ ही बरसात के पानी को सहेजने के लिए रेन वॉटर हार्वेस्टिंग और पेयजल के लिए आकर्षक टेंक का निर्माण कराया। सभी बच्चों को रंग-बिरंगा फर्नीचर एवं विद्यालय को कूड़ेदान उपलब्ध कराए गए।

डिजीटल लाइब्रेरी बनी आकर्षण का केंद्र सहगल फ़ाउंडेशन द्वारा एक कक्ष को डिजीटल लाइब्रेरी के रूप में तैयार किया है। जिसमें 10 कम्प्यूटर और फर्नीचर के साथ सोलर पेनल और बेटरी भी उपलब्ध कराई हैं। फ़ाउंडेशन के महादेव शर्मा ने बताया कि हमारी फ़ाउंडेशन द्वारा अलवर जिले में 60 से अधिक स्कूलों का नवीनीकरण कराया है। जिनमें ग्रामीणों के साथ मिलकर रिपेयर के साथ-साथ शौचालय, पेयजल और बरसात के पानी को सहेजने हेतु स्ट्रक्चर भी बनाए गए हैं। फ़ाउंडेशन ग्रामीण भारत के 1000 से अधिक गाँवों में कृषि, शिक्षा और पानी पर काम कर रही है।

प्रधानाचार्य किरण ने बताया कि इस विद्यालय में मेरे कार्यग्रहण के समय 286 का नामांकन था। अभी विद्यालय का नामांकन 500 है और आने वाले सत्र में नामांकन और बढ़ेगा।

विद्यालय में बाल संसद का गठन हो चुका है और बाल संसद की प्रधानमंत्री छात्रा रजनी कौर कक्षा 10 अब स्कूल के बदले स्वरूप को देखकर रोमांचित हैं एवं बाल संसद के स्वच्छता एवं स्वास्थ्य मंत्री रेखा कक्षा 10, जल एवं पर्यावरण मंत्री अमित जाटव कक्षा 11, सांस्कृतिक मंत्री नंदनी कक्षा 11, शिक्षा मंत्री सोनिया कक्षा 11, खेल मंत्री मनीष कक्षा 9, खाद्य मंत्री ईशा कक्षा 10 कहते है कि अब हमारे स्कूल में सभी सुविधाएँ हो चुकी है और हम सभी बच्चे पढ़ाई के साथ साथ स्कूल की सुंदरता को भी बनाए रखेंगे।

गाँव के अंसब खान ने बताया कि सभी ग्रामीणों ने 2,40,000 रुपये एकत्र कर ग्राम विकास समिति बनाई है यह राशि आगामी वर्षों में विद्यालय के रखरखाव के काम आएगी विद्यालय स्टाफ द्वारा भी विद्यालय को सहयोग मिला है।

दीवारों पर बने शैक्षिक चित्रों से बच्चे ना केवल आकर्षित होते हैं। बल्कि सीखते भी हैं। बच्चों का विद्यालय में अधिकतम ठहराव रहे और नामांकन बढ़े इसीलिए स्कूलों को ज्यादा से ज्यादा चाइल्ड फ्रेंडली बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

रंग-बिरंगे फूल-पौधे, नीला आकाश, सोने जैसा उगता हुआ सूरज, सतरंगी इन्द्रधनुष, कई रंगों की भरमार है। पशु पक्षी, वनस्पतियाँ सभी रंग में डूबे हुए-से लगते हैं। हमारे वस्त्रों के रंग भी कई तरह के होते हैं। उनको पहनकर कितना आनन्द आता है। रंगीन वस्तुओं को देखना और दिखाना आकर्षक लगता है।

स्कूल बन गया इन्द्र धनुष सा प्यारा
अब मिटेगा अशिक्षा का अँधियारा
इन्द्र धनुष से रंग, अब स्कूल के संग

इंजीनियर
समग्र शिक्षा अलवर (राज.)

Rajasthan Education Department

बालमन का हितैषी हो विद्यालय परिसर

❒ डॉ. सत्यनारायण व्यास

बच्चों का मन, कच्ची मिट्टी का वह लौंदा होता है, जिसे थपथपा कर मन चाहा आकार दिया जा सकता है। बचपन से ही कोरी स्लेटी की भाँति माँ, शिक्षक, अभिभावक और मित्र, बालक को अपने परिवेश में ढालते हैं, उस पर कुछ जानी-अनजानी आकृतियाँ उकेरते हैं और वही बचपन जब पूर्ण होकर युवावस्था में पहुँचता है, तो एक जिम्मेदार नागरिक बनकर राष्ट्र उत्थान के क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा लेता है। पर इस सबसे पूर्व, बालक के लिए सबसे जरूरी बात है उसके लिए विद्यालय परिसर, जहाँ वह अपने जीवन के प्रारंभिक समय का सर्वाधिक समय व्यतीत करता है, उस विद्यालय के परिसर का भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण शांत, सुन्दर, सौम्य तथा बालमन के अनुरूप हो साथ ही भयमुक्त भी हो तभी बालमन, उस विद्यालय परिसर में रम पाएगा और बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सकेगा। अमूमन बालमन को समझने के लिए ही, शिक्षकों को बालमनोविज्ञान की ट्रेनिंग दी जाती है, फिर भी शिक्षक, शारीरिक शिक्षक तथा संस्थाप्रधान इस बात की सुनिश्चितता करें कि विद्यालय में सभी विद्यार्थियों, खासतौर पर बालिकाओं को भयमुक्त वातावरण मिले, वे अपने साथ होने वाले किसी भी दुर्व्यवहार के प्रति सचेत हो सके तथा उसे खुल कर अपने शिक्षक या संस्थाप्रधान से अपनी बात अभिव्यक्त भी कर सके। विद्यालयों में सुरक्षित मनोवैज्ञानिक तथा भौतिक वातावरण मिलता रह सके उसके लिए माननीय शिक्षा निदेशक जी द्वारा बाल संरक्षण पर 09 मार्च, 2022 को एक परिपत्र भी जारी किया गया। सभी शिक्षकों तथा संस्थाप्रधानों का यह दायित्व होना चाहिए कि विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देने के साथ-साथ विद्यालयों में बाल उत्पीड़न तथा बाल दुर्व्यवहार से बचाव हेतु सुरक्षित एवं सम्मानपूर्ण वातावरण भी दिया जाए।

प्रत्येक बालक का भौतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक वातावरण भिन्न-भिन्न होता है, शिक्षक प्रत्येक बालक के इन भिन्न वातावरणों का भली भाँति जानकार हो, उनके प्रति संवेदनशील भी हो। पारिवारिक पृष्ठभूमि पर काम करते हुए शिक्षक या संस्थाप्रधान, सम्बन्धित बालक के अनुरूप व्यवहार करेगा तो वह बालक अपने विद्यालय के प्रति सकारात्मक तथा सहज बनकर रह सकेगा। किसी भी बालक, खासतौर पर बालिका के व्यवहार में यदि असहजता नजर आती है तो सम्बन्धित विषयाध्यापक, कक्षाध्यापक इस पर विशेष विश्लेषण कर संस्थाप्रधान जी से मिलकर उस व्यवहारगत कठिनाई का समाधान करने का प्रयास करें। विद्यालयों में शारीरिक दण्ड देना, पूर्णतः प्रतिबंधित हो। बच्चों को डाँट-फटकारना, भद्दे शब्दों से पुकारना, नाम बिगाड़ना, जातिगत संबोधन देना तथा व्यंग्य या ताने कसना भी पूर्णतया प्रतिबंधित हो। यदि कभी कभार हल्के ढंग से डाँटना भी पड़ जाए तो कोई दूसरा शिक्षक उसे प्रेम से पुनः सहज करने का प्रयास करें, एक शिक्षक या संस्थाप्रधान तो कम से कम, बालक का मित्र बन कर उसकी सहायता कर सके, यह प्रयास किया जाना चाहिए।

विद्यालय परिसर में खेल मैदान, लाइब्रेरी, प्रयोगशाला या स्टाफ रूम, शौचालय-मूत्रालय किसी भी स्थान पर एकांत नहीं हो, पर्याप्त रोशनी और हवा का इंतजाम हो तथा बालिकाएँ किसी भी सूरत में इन स्थानों पर अकेली नहीं बुलाई जाए, ना ही अकेली जाए। प्रत्येक समय सीसीटीवी कैमरा अथवा शिक्षकों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि बालक-बालिकाएँ कहीं भी एकांत में ना रहें, ना जाएँ, जहाँ भी जाएँ कम से कम दो-तीन बालिकाएँ साथ ही रहें। अगर किसी भी बालक-बालिका की कोई शिकायत हैं तो वे खुलकर अपने विषयाध्यापक/कक्षाध्यापक अथवा संस्थाप्रधान को बता सकें। अगर नहीं बताना चाहे तो अपनी शिकायत लिखकर गरिमा पेटी/सुझाव पेटी में डाल सकें। विद्यालय प्रबंधन भी यह सुनिश्चित करें कि गरिमा पेटिका में आने वाली प्रत्येक शिकायत/सुझाव पर स्टाफ सदस्यों जिसमें कम से कम दो महिला कर्मचारी भी हो से वार्तालाप कर त्वरित समाधान किया जा सके, उस बालिका या बालक को पर्याप्त सम्बल मिल सके, ऐसा भाव हम सबका होना चाहिए। बाल उत्पीड़न तथा दुर्व्यवहार पर संज्ञान लेने वाली कमेटी में उच्च कक्षा के दो छात्र या छात्राएँ भी सम्मिलित की जानी चाहिए। साथ ही बालकों की पहुँच में स्पष्ट दर्शाए जाने वाले स्थान पर पुलिस, महिला आयोग, बाल अधिकार संरक्षण आयोग तथा चाइल्ड हेल्प लाइन के नम्बर दिए जाने चाहिए जिससे बालक-बालिकाएँ मुखरता से अपनी बात आगे पहुँचा सके।

संस्थाप्रधान, पीईईओ तथा अन्य प्रशासनिक दायित्वान व्यक्तियों द्वारा विद्यार्थियों को समय-समय पर गुड टच बैड टच की जानकारी देते रहना चाहिए। प्रार्थना सभा, कक्षा शिक्षण तथा अन्य अवसरों पर बालिकाओं को उनके अधिकारों, दायित्वों तथा जानकारियों पर विमर्श करते रहना चाहिए। बाल उत्पीड़न, दुर्व्यवहार या शारीरिक/मानसिक प्रताड़ना सहपाठी बालक-बालिका द्वारा, शिक्षक द्वारा, संस्था के किसी अन्य कार्मिक द्वारा, सहशैक्षिक कार्मिक यथा ड्राईवर, सहायक कर्मचारी, पड़ोसी, रिक्शा चालक, दुकानदार, विद्यालय में विविध कार्यों से आने वाले फोटोग्राफर या और भी कोई भी, किसी भी के द्वारा दी जा सकती है, ऐसे में सस्थाप्रधान पूर्ण सजगता रखकर विद्यार्थियों में जागरूकता फैला कर होने वाले सभी संभावनाओं पर विराम चिह्न लगाते हुए, शाला में भयमुक्त तथा मधुर व्यवहार व वातावरण का निर्माण कर सकता है।

आजकल ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्थाएँ जोरों से चल रही हैं, बालक अपने शिक्षण कार्य के अतिरिक्त अन्य दुष्प्रभावों से मुक्त रह सकें, इसकी भी पूरी सावधानी रखी जाए। कोई छात्र घर से देरी से आता है, जल्दी जाता है, बार-बार अनुपस्थित रहता है, बार-बार लघुशंका, दीर्घशंका, रोग-बीमारी या घरेलू समस्या का बहाना बनाता है। ऐसे छात्रों पर विशेष नजर रखी जाए तथा माता-पिता अभिभावकों के साथ काऊंसलिंग कर ऐसी समस्याओं पर भी विचार विमर्श करना जरूरी होता है। उसके बाद भी कोई दुर्घटना, दुर्व्यवहार या बाल उत्पीड़न की कोई घटना हो जाती है, तो सम्बन्धित शिक्षक/संस्थाप्रधान अपने उच्चाधिकारियों के संज्ञान में लाकर मामले का निष्पादन ईमानदारी पूर्वक करें, ना कि लीपापोती कर घटना छुपाने का कृत्य करें। सम्बन्धित बालक को पर्याप्त संरक्षण दिया जाए और छात्र-छात्रा के प्रति सद्भाव रखते हुए उसे पुनः मनोविज्ञान की दृष्टि से मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस प्रकार विद्यालय में विद्यार्थी का सर्वांगीण तथा गुणवत्तापूर्ण विकास हो सके, यही हम सबका दायित्व हैं, तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

समता भवन के पास, रायपुर, भीलवाड़ा
(राज.)-311803
मो: 9460351881

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : अप्रेल, 2022

1. सत्र 2021-22 की वार्षिक परीक्षा/आकलन आयोजन के संबंध में।
2. विद्यार्थी का सर्वांगीण व गुणवत्तापूर्ण विकास के संबंध में।

1. सत्र 2021-22 की वार्षिक परीक्षा/आकलन आयोजन के संबंध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा. द./गुण. प्र./परीक्षा/61196/2021-22/ 230-33 दिनांक : 03.03.2022 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक ● विषयः सत्र 2021-22 की वार्षिक परीक्षा/आकलन आयोजन के संबंध में। ● प्रसंग : शासन उप सचिव, शिक्षा (ग्रुप-I) विभाग, राजस्थान, जयपुर का पत्रांकः प.17(5) शिक्षा-1/2020-21 जयपुर, दिनांकः 03.03.2022 के क्रम में। ● संदर्भः इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक : 20.11.2021 तथा पूर्व प्रसारित परिपत्र क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22402/समान परीक्षा /06/2014-15/244, दिनांक : 02.06.2014

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि शासकीय अनुमोदनोपरांत जारी विभागीय शिविरा पंचांग में उल्लिखित समयावधि में आंशिक संशोधन करते हुए कक्षा-1 से 4, 6 व 7 के लिए विद्यालय स्तर पर तथा कक्षा-09 व 11 हेतु वार्षिक परीक्षा का आयोजन समान परीक्षा व्यवस्थान्तर्गत इस कार्यालय के पूर्व प्रसारित संदर्भित पत्रानुरूप निम्नानुसार करवाए जाने की सुनिश्चितता करावें।

1. वार्षिक परीक्षा आयोजन-

- सत्र 2021-22 में समस्त राजकीय/गैर राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा-09 व 11 के विद्यार्थियों हेतु वार्षिक परीक्षा का आयोजन दिनांक : **28.04.2022 से 11.05.2022** के मध्य जिला समान परीक्षा योजना के माध्यम से जिला स्तर पर किया जाएगा। जिला परीक्षा संयोजकों द्वारा प्रश्न-पत्र का निर्माण, मुद्रण एवं वितरण संबंधी संदर्भित निर्देश दिनांकः 02.06.2014 के अनुरूप कार्यवाही सम्पन्न की जाए।
- कक्षा-06 व 07 की वार्षिक परीक्षा का आयोजन (प्रश्न-पत्र निर्माण) विद्यालय स्तर पर ही किया जाना है।
- सत्र 2021-22 हेतु कक्षा 01 से 04 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु वार्षिक परीक्षा का आयोजन नहीं किया जाकर विद्यार्थी का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) प्रक्रियान्तर्गत पोर्टफोलियो के अनुरूप तथा शिक्षकों द्वारा किए गए आकलन के आधार पर किया जाना है। आवश्यकतानुसार पेन एण्ड पेपर टेस्ट लिया जाना है।
- कक्षा 1 से 4, 6 तथा 7 की परीक्षा विद्यालय स्तर पर प्रथम 6 कार्य दिवसों में सम्पन्न कर ली जाए ताकि परीक्षा परिणाम बनाना सुविधाजनक हो।

2. वार्षिक परीक्षा पाठ्यक्रम-

- कोविड जनित परिस्थितियों के मद्देनजर RSCERT एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा समस्त कक्षाओं के लिए संक्षिप्तीकृत पाठ्यक्रम सत्र : 2021-22 वार्षिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है। उक्त संक्षिप्तीकृत पाठ्यक्रम के आधार पर ही वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र निर्माण/आयोजन किया जाएगा।

3. परीक्षा/आकलन का पैटर्न व अवधि-

- सत्र 2021-22 के लिए 21 जून 2021 से आरंभ किए गए 'आओ घर में सीखे-2.0 कार्यक्रम' के अंतर्गत संचालित स्माइल 3.0 द्वारा विद्यार्थियों को डिजिटल अध्ययन सामग्री, गृहकार्य वर्कशीट, व्हाट्सएप तथा PWA क्विज इत्यादि उपलब्ध करवाए जा रहे हैं, जिसका संधारण विद्यालय में विद्यार्थी पोर्टफोलियों में किया जा रहा है।
- साथ ही कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों को कार्य पुस्तिका (Work books) भी उपलब्ध कराई गई हैं। कक्षा 1 से 4 तक के लिए किए जाने वाले आकलन तथा कक्षा 6 व 7 के लिए विद्यालय स्तर पर आयोजन होने वाली परीक्षा/आकलन में विद्यार्थियों की (Back grade competency) विगत कक्षा की दक्षता (कोविड-19 के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के मद्देनजर विगत सत्र में वंचित दक्षताओं के सुधार हेतु) का भी मूल्यांकन किया जाना सुनिश्चित किया जाए।
- प्रति विद्यार्थी संधारित पोर्टफोलियो, वर्क बुक तथा विविध आयोजित परीक्षा/आकलन तथा मौखिक परीक्षा (कक्षा 1 से 4, 6 व 7 के लिए) योगात्मक आकलन/कक्षोन्नति का अंतिम आधार रहेंगे।

सत्र 2021-22 के लिए कक्षावार परीक्षा पैटर्न निम्नानुसार रखा जाना प्रस्तावित हैं-

कक्षा	आंतरिक मूल्यांकन एवं परीक्षा की क्रियाविधि	अंक	
कक्षा 1-2	50% पहचान आधारित प्रश्न (विषयानुसार पहचान आधारित प्रश्न) : पेन-पेपर टेस्ट हेतु	50	100
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (कार्यपुस्तिका पूर्णता + वर्कशीट पोर्टफोलियो + क्विज आधारित)	20	
	30% मौखिक परीक्षा आधारित।	30	
कक्षा 3-4	50% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही/गलत, बहुवैकल्पिक : पेन-पेपर टेस्ट हेतु।	50	100
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (कार्यपुस्तिका पूर्णता + वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	20	
	30% मौखिक परीक्षा आधारित।	30	
कक्षा 6-7	70% लिखित परीक्षा आधारित।	70	100
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (कार्यपुस्तिका पूर्णता + वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	20	
	10% मौखिक परीक्षा आधारित।	10	
कक्षा 9	80% लिखित परीक्षा आधारित।	80	100
	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	20	
कक्षा 11	गैर प्रायोगिक विषय (Non-practical subjects) 80% लिखित परीक्षा आधारित	80	100

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

	20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो+क्विज आधारित)	20
	प्रायोगिक विषय (Practical subjects) (प्रायोगिक विषयों में आंतरिक मूल्यांकन निर्धारित प्रायोगिक अंकों के अतिरिक्त शेष 20% अंकों का होगा) ● **यथा जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगोल इत्यादि हेतु** प्रायोगिक परीक्षा = 30 अंक सैद्धांतिक परीक्षा = 70 अंक 70 80% (लिखित परीक्षा आधारित)= 56 अंक 20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित=14 अंक (वर्कशीट पोर्टफोलियो+ क्विज आधारित) ● **अन्य प्रायोगिक विषय यथा–संगीत, चित्रकला इत्यादि हेतु** प्रायोगिक परीक्षा = 70 अंक सैद्धांतिक परीक्षा = 30 अंक 30 80% (सैद्धांतिक + प्रायोगिक परीक्षा आधारित) = 24 अंक 20% आंतरिक मूल्यांकन आधारित (वर्कशीट पोर्टफोलियो + क्विज आधारित) = 06 अंक	30 प्रा. 56 लि.प.100 14 आ. मू. 70 प्रा. 24 लि.प.100 06 आ मू.

- वार्षिक परीक्षा प्रश्न पत्रों हेतु वार्षिक परीक्षा अवधि कक्षा 9 व 11 के लिए 2 घण्टे 45 मिनट, कक्षा 6 व 7 के लिए 2 घण्टे 30 मिनट तथा कक्षा 1 से 4 के लिए 2 घण्टे रहेगी।

5. परीक्षा प्रश्न/ पत्र पैटर्न :

- सत्र 2021–22 हेतु बहुवैकल्पिक प्रश्नों को भी सम्मिलित किया जाएगा।
- अन्य अति लघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्नों में आंतरिक विकल्प (यथा, या, अथवा कोई दो) उपलब्ध करवाए जाएंगे।
- निबंधात्मक प्रश्नों की संख्या कम की जानी है।
- यथा संभव परीक्षा तैयारी हेतु परीक्षा योजना (पैटर्न) के अनुरूप नमूने के प्रश्न पत्र (मॉडल प्रश्न पत्र) विद्यालय अथवा जिला समान परीक्षा द्वारा विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाए जाएं।

कक्षावार प्रश्न पत्र पैटर्न निम्नानुसार रखा जाना प्रस्तावित हैं–

कक्षा	प्रश्न पत्र पैटर्न
कक्षा 1–2	100% पहचान आधारित बहुवैकल्पिक (MCQ) प्रश्न (विषयानुसार पहचान आधारित प्रश्न) : पेन–पेपर टेस्ट हेतु।
कक्षा 3–4	100% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही /गलत, बहुवैकल्पिक प्रश्न : पेन–पेपर टेस्ट हेतु।
कक्षा 6–7	**वार्षिक परीक्षा हेतु :** 50% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही/ गलत, बहुवैकल्पिक प्रश्न, अति–लघुत्तरात्मक 30% लघुत्तरात्मक 20% दीर्घ उत्तरात्मक
कक्षा 9 व 11	**वार्षिक परीक्षा हेतु :** 40% वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक प्रति प्रश्न) रिक्त स्थान, सही /गलत, बहुवैकल्पिक प्रश्न, अति–लघुत्तरात्मक 30% लघुत्तरात्मक 30% दीर्घ उत्तरात्मक/निबंधात्मक

समस्त सम्बन्धितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की अक्षरशः पालना निर्धारित समयावधि में कराए जाने की सुनिश्चितता की जावें।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. विद्यार्थी का सर्वांगीण व गुणवत्तापूर्ण विकास के संबंध में।

● कार्यालय–निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा–स/बाल संरक्षण (18)/2016/ 337/ दिनांक : 09.03.2022 ● विषयः विद्यार्थी का सर्वांगीण व गुणवत्तापूर्ण विकास के संबंध में। ●परिपत्र

शिक्षक और विद्यार्थी अपने दिन का एक बड़ा समय विद्यालय में व्यतीत करते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि भवन, परिसर, प्रवेश द्वार और आसपास के परिवेश सहित विद्यालय के भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण का अनुभव विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित एवं सम्मानपूर्ण होना चाहिए। जिससे विद्यार्थी भयमुक्त वातावरण में विद्यालय के लक्ष्य 'विद्यार्थी का सर्वांगीण व गुणवत्तापूर्ण विकास' को प्राप्त कर सके।

शालाओं में मुख्यतः यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि 'मातृवत परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्' अर्थात 'पराई स्त्री को माँ की तरह समझे तथा पराए धन को चोरे हुए धन की तरह' तभी नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी। अध्यापकों को विशेष तौर पर स्वयं को एवं विद्यार्थियों को ये समझना और समझाना चाहिए। यदि इसके बावजूद कोई बालक/बालिका के प्रति अपराध करता है तो उस पर इस परिपत्र के अनुसार कार्यवाही करते हुए सख्त सजा भी दी जावें।

बहुत बार समाचार पत्रों में विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के साथ दुराचार, अनाचार एवं दुर्व्यवहार की घटनाओं का प्रकाशन देखने में आता है कि जो गंभीर चिंता का विषय है। समाज का महत्त्वपूर्ण स्तंभ होने के नाते विद्यालय का दायित्व है कि विद्यार्थियों में नैतिक व्यवहार का विकास हो। साथ ही यह आवश्यक है कि विद्यार्थी को विद्यालय में भयमुक्त एवं सुरक्षित सीखने का वातावरण एवं अवसर प्राप्त हो।

राज्य के समस्त विद्यालयों में बाल उत्पीड़न एवं बाल दुर्व्यवहार की घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण एवं फील्ड स्तर पर समुचित मोनिटरिंग हेतु कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 18.05.2017, 22.09.2017 एवं 16.03.2021 की निरंतरता में निम्नांकित निर्देश जारी किए जाते हैं–

1. विद्यालय का सुरक्षित मनोवैज्ञानिक एवं भौतिक वातावरण:

- शिक्षण एवं अध्ययन में समन्वय के लिए आवश्यक होता है कि

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

विद्यार्थी, शारीरिक एवं मानसिक दोनों दृष्टि से स्वस्थ हो, इसके लिए विद्यालय का वातावरण विद्यार्थी के लिए प्रसन्नतादायक, भयमुक्त हो तथा उन्हें अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर मिलें।

- विद्यार्थी के लिए विद्यालय का वातावरण भयमुक्त हो, उन्हें अभिव्यक्ति का पर्याय अवसर प्राप्त हो। इस हेतु निम्न बिन्दुओं की पालना सुनिश्चित की जाए–
- शिक्षकों को विद्यार्थी की सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों से भिज्ञ होना चाहिए, जिससे वह उसके व्यवहार के प्रति संवेदनशील हो सके।
- विद्यालय में कक्षाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की विस्तृत प्रोफाइल तैयार की जाए जिसमें उनकी सामाजिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि का उल्लेख हो ताकि शिक्षक विद्यार्थियों की समस्याओं/संवेगों व आवश्यकताओं के बारे में विशिष्ट जानकारी रख सके।
- प्रत्येक विद्यार्थी के दैनिक व्यवहार पर शिक्षकों द्वारा सूक्ष्मतः ध्यान रखा जाए। विद्यार्थी के व्यवहार में आकस्मिक असहजता नजर आते ही, व्यवहार का विश्लेषण कर संभावित कठिनाई के निराकरण हेतु प्रयास किया जाए। आवश्यकतानुसार अभिभावकों से नियमित सम्पर्क किया जाए।
- विद्यालय में शारीरिक एवं मानसिक दण्ड पूर्णतः वर्जित हो।
- परिसर के एकांत स्थान पर विद्यार्थी के अकेले जाने के संबंध में शिक्षक द्वारा ध्यान रखा जाए। यथा संभव शौचालय, पेयजल स्थान सूने/एकांत स्थान पर ना हो वरन, ऐसे स्थान पर जो, जहाँ पर आने–जाने वालों पर निगरानी रखी जा सके।
- परिसर के एकांत स्थान तथा शौचालयों के पास पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था की जाए। शौचालय विद्यालय परिसर के भीतर स्थित हो, छात्र व छात्राओं, स्टाफ, सपोर्ट व आगंतुकों के लिए पृथक–पृथक तथा पर्याप्त दूरी पर शौचालय/मूत्रालय होना सुनिश्चित किया जाए।

2. अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर तथा शिकायत हेतु सहज प्लेटफार्म– गरिमा पेटी

विद्यार्थी एवं शिक्षक के संबंध ऐसे हो कि वह अपनी कठिनाई, परेशानी, समस्या अथवा प्रसन्नता शिक्षक के साथ साझा कर सके। यदि वह किसी कारण से अपनी शिकायत में अपना नाम उजागर नहीं करना चाहते तब भी वे अपनी दुविधा/समस्या को सहजता से प्रस्तुत कर सके। इस हेतु प्रत्येक विद्यालय में सुलभ स्थान पर शिकायत पेटी (गरिमा पेटी) की व्यवस्था आवश्यक रूप से की जाए।

- विद्यार्थी अथवा अभिभावक, कई बार विद्यार्थी के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की शिकायत करने में शंका रखते हैं। ऐसे में उन्हें बिना नाम उल्लेख किए हुए शिकायत संस्थाप्रधान तक पहुँचाने के लिए विद्यालय में शिकायत पेटिका (गरिमा पेटी) सुलभ स्थान पर स्थापित की जाए।
- यह गरिमा पेटी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की आसान पहुँच में होनी चाहिए।
- प्रत्येक सप्ताह अथवा कभी–कभी आकस्मिक रूप से बीट कांस्टेबल, एक मनोनीत महिला शिक्षिका (महिला शिक्षिका न होने पर विद्यालय के वरिष्ठतम शिक्षक) की उपस्थिति में संस्थाप्रधान द्वारा उक्त पेटिका खोली जाए।
- शिकायत के आधार पर तत्काल जाँच की आशंकित घटनाओं को रोकने की व्यवस्था कराई जाने हेतु कार्यवाही हो।
- प्रार्थना सभा में गरिमा पेटी की जानकारी दी जाए, जिससे विद्यार्थियों के मध्य विश्वास स्थापित हो सके।
- विद्यालयों में अध्ययनरत सभी बालक/बालिकाओं को बिना किसी भेदभाव के सुरक्षित, संरक्षित एवं सर्वांगीण विकासोन्मुख वातावरण में शिक्षा की उपलब्धता विद्यालय की जिम्मेदारी है।

3. अतिरिक्त आवश्यक बिन्दु–

- विद्यालय में लैंगिक असमानता एवं छेड़छाड़ की किसी भी प्रकार की घटना अथवा घटना की आशंका को हल्के में न लेकर तुरन्त इसे रोकने की कार्यवाही तथा वांछित अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाए।
- यदि इस प्रकार की घटना/सूचना किसी भी स्रोत से प्राप्त होने के उपरांत भी यदि संबंधित कर्मचारी/अधिकारी द्वारा अविलम्ब प्रकरण के अनुक्रम में वांछित कार्यवाही नहीं की जाती है/प्रकरणों को दबाने अथवा दबाव डाल कर लीपापोती की चेष्टा की जाती है, तो ऐसे संबंधित विभागीय अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।
- विद्यालय से लेकर संभाग स्तरीय कार्यालय (प्रधानाचार्य/एच.एम./सीबीईओ/जि.शि.अ./संयुक्त निदेशक) तक के प्रत्येक अधिकारी को निर्देशित किया जाता है कि समस्त विद्यार्थियों की सुरक्षा हेतु समय–समय पर जारी संबंधित परिपत्रों/निर्देशों का अध्ययन कर दिए गए निर्देशों की अविलम्ब अनुपालना करावें।
- राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद्, समग्र शिक्षा, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थानों, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान और बाल संरक्षण आयोग द्वारा आयोज्य विभिन्न प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं में जेन्डर सेन्सेटाइजेशन के सत्र आवश्यक रूप से संवेदनशीलता के साथ रखा जाए।
- इस प्रकार के प्रकरणों में विद्यार्थियों को मेडिकल सहायता/विधिक सहायता/काउंसलिंग करते हुए पढ़ाई जारी रखने हेतु आवश्यक कार्यवाही सक्षम स्तर पर सुनिश्चित की जाए।
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा पाठ्यक्रम निर्धारण करते समय बच्चों को उनके अधिकारों के संबंध में कानूनी प्रावधानों यथा लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम–2012, किशोर न्याय बालकों की देखरेख संरक्षण अधिनियम–2015, बाल श्रम निषेध नियम अधिनियम–1986, बाल विवाह निषेध अधिनियम–2000 तथा चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 के संबंध में उचित पाठ/अध्यायों का समावेश करवाया जाए।

4. बाल उत्पीड़न एवं बाल दुर्व्यवहार की घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण हेतु विद्यालय समितियों का गठन :

- उक्त प्रकार की घटनाओं की रोकथाम हेतु जिला, ब्लॉक, पीईईओ/

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

यूसीईईओ तथा प्रत्येक विद्यालय स्तर पर निगरानी समितियों का गठन अग्रांकित विवरणानुसार किया जाएगा तथा इन समितियों का स्वरूप तथा कार्य निम्नानुसार होगा–

i. **जिला स्तरीय समिति–** जिला स्तर की समिति की माह में एक बार बैठक होगी। इस बैठक में इस बाबत प्राप्त शिकायतों का त्वरित निस्तारण तथा पूर्व की शिकायतों का पृष्ठ पोषण लेकर संबंधित से सम्पर्क कर पूर्ण निराकरण किया जाना सुनिश्चित करवाया जाएगा।
अध्यक्ष– मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
सचिव– सहायक निदेशक
सदस्य– जिला मुख्यालय पर स्थित विद्यालय में कार्यरत सुविज्ञ महिला प्रधानाचार्य
सदस्य– जिले में कार्यरत सुविज्ञ महिला व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापिका
जिला शिक्षा अधिकारी उक्त समिति में सदस्यों को मनोनीत करेंगे।

ii. **ब्लॉक स्तरीय समिति–** ब्लॉक स्तर की समिति की माह में एक बार बैठक होगी। इस बैठक में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पीईईओ/यूसीईईओ से इस बाबत प्राप्त शिकायतों का त्वरित निस्तारण तथा पूर्व की शिकायतों का पृष्ठपोषण लेकर संबंधित से संपर्क कर पूर्ण निराकरण एवं बैठक में लिए गए निर्णयों से जिला स्तर की समिति को अवगत करवाएंगे।
अध्यक्ष– ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
सचिव–अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी–द्वितीय
सदस्य–ब्लॉक के अधीनस्थ विद्यालय में कार्यरत सुविज्ञ महिला संस्थाप्रधान
सदस्य– ब्लॉक के अधीनस्थ विद्यालय में कार्यरत सुविज्ञ महिला व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापिका/अध्यापिका
सदस्य–गैर शैक्षणिक वर्ग की महिला/पुरुष
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी उक्त समिति में सदस्यों को मनोनीत करेंगे।

iii. **पीईईओ/यूसीईईओ स्तरीय समिति–** पीईईओ/यूसीईईओ स्तर की समिति की माह में एक बार बैठक होगी। इस बैठक में संबंधित पीईईओ/यूसीईईओ विद्यालयों से इस बाबत प्राप्त शिकायतों का त्वरित निस्तारण तथा पूर्व की शिकायतों का पृष्ठपोषण लेकर संबधित से संपर्क कर पूर्ण निराकरण करवाना सुनिश्चित करेंगे एवं बैठक में लिए गए निर्णयों से ब्लॉक स्तर की समिति को अवगत करवाएंगें।
अध्यक्ष– पीईईओ/यूसीईईओ
सदस्य सचिव–पीईईओ/यूसीईईओ परिक्षेत्र में कार्यरत वरिष्ठतम महिला व्याख्याता/व.अ./शिक्षिका
सदस्य–पीईईओ/यूसीईईओ क्षेत्र के समस्त संस्थाप्रधान
सदस्य– पीईईओ/यूसीईईओ क्षेत्र के दो अभिभावक प्रतिनिधि जिसमें न्यूनतम एक महिला हो।
पीईईओ/यूसीईईओ उक्त समिति में सदस्यों को मनोनीत करेंगे।

iv. **विद्यालय स्तरीय समिति–** विद्यालय स्तर की समिति की माह में एक बार बैठक होगी। इस बैठक में संस्थाप्रधान विद्यालय से संबंधित इस बात प्राप्त शिकायतों का त्वरित निस्तारण तथा पूर्व की शिकायतों का पृष्ठपोषण लेकर संबंधित से सम्पर्क कर पूर्ण निराकरण करेंगे तथा पीईईओ/यूसीईईओ स्तरीय समिति की बैठक से पूर्व उसे सूचना प्रेषित करेंगे।
अध्यक्ष–संस्थाप्रधान
सचिव–वरिष्ठतम महिला व्याख्याता/व.अ./अध्यापिका
सदस्य–एक अन्य शिक्षक/शिक्षिका
सदस्य–उच्चतम कक्षा का एक छात्र
सदस्य–उच्चतम कक्षा की एक छात्रा
सदस्य–दो अभिभावक प्रतिनिधि जिसमें न्यूनतम एक महिला हो।
संस्थाप्रधान उक्त समिति में सदस्यों को मनोनीत करेंगे।

5. **बाल उत्पीड़न एवं बाल दुर्व्यवहार की घटनाओं के प्रभावी प्रबोधन हेतु दायित्व निर्धारण** : विद्यालय में अनाचार की घटनाओं को रोकने हेतु समस्त अधिकारी एवं कार्मिक निम्नानुसार दायित्व का निर्वहन करते हुए प्रभावी प्रबोधन करेंगे–

- **मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी के दायित्व–**

i. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी उक्त प्रकार की घटनाओं के सम्बन्ध में जिला स्तरीय नोडल अधिकारी होंगे।

ii. इस प्रकार की घटनाओं के क्रम में नियमानुसार वांछित कार्यवाही सक्षम स्तर से अविलम्ब होवे तथा समस्त जारी विभागीय निर्देशों की अनुपालना समयबद्ध रूप से होवे, इस हेतु जिला स्तर पर उत्तरदायी अधिकारी होंगे।

iii. अधीनस्थ सहायक निदेशक उक्त कार्य हेतु सीडीईओ कार्यालय में प्रभारी अधिकारी के रूप में दायित्वबद्ध होंगे।

iv. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक ब्लॉक, पीईईओ/यूसीईईओ तथा विद्यालय स्तर पर समितियों का आवश्यक रूप से गठन इस परिपत्र के जारी होने की एक माह की समयावधि में हो जाए तथा वे उनकी बैठकों की नियमितता को सुनिश्चित करेंगे।

v. जिला स्तरीय समिति की बैठक प्रत्येक माह के आखिरी कार्य दिवस पर आयोजित करेंगे तथा ब्लॉक से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण कर उन पर की जाने वाली कार्यवाही का प्रबोधन करेंगे एवं बैठक का कार्यवाही विवरण पंजिका में नियमित रूप से संधारित करेंगे।

vi. अपने क्षेत्राधिकार में इस तरह की घटनाओं पर नजर रखेंगे तथा सूचना मिलते ही तत्काल उच्चाधिकारियों को सूचित करेंगे एवं प्राथमिक जाँच रिपोर्ट सम्प्रेषित करेंगे। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी घटना की गंभीरता एवं प्रकृति के अनुसार आवश्यकतानुसार एवं नियमानुसार विभागीय स्तर पर कार्यवाही के साथ–साथ निकटतम पुलिस थाने में लिखित में सूचना सम्प्रेषित करवाना सुनिश्चित करेंगे।

vii. अपने क्षेत्राधिकार में भ्रमण के दौरान विद्यालयों में गठित समिति के कार्यवाही रजिस्टर अवलोकन करेंगे तथा अधीनस्थों को वांछित

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

संबलन प्रदान करेंगे।

viii. यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्यालय में उचित स्थान पर चाइल्ड हेल्प लाइन नम्बर (1098) अंकित है अथवा नहीं।

ix. प्रत्येक विद्यालय में शिकायत पेटिका की उपलब्धता तथा उसमें प्राप्त शिकायतों पर की गई कार्यवाही का अवलोकन करेंगे तथा अपेक्षित कार्यवाही की सुनिश्चितता हेतु वांछित निर्देश प्रदान करेंगे।

परिपत्र के साथ संलग्न प्रपत्र में अपने अध्ययधीन समस्त विद्यालयों की प्रत्येक माह ब्लॉकवार समेकित सूचना अपने उच्चाधिकारियों को सम्प्रेषित करना सुनिश्चित करेंगे।

- **मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के दायित्व–**

i. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी उक्त प्रकार की घटनाओं हेतु ब्लॉक स्तरीय नोडल अधिकारी होंगे।

ii. अधीनस्थ एसीबीईओ–।। उक्त कार्य हेतु सीबीईओ कार्यालय में प्रभारी अधिकारी के रूप में दायित्वबद्ध होंगे। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक पीईईओ/यूसीईईओ तथा विद्यालय स्तर पर समितियों का विधिवत रूप से गठन हो तथा इसी के साथ उनकी बैठकों की नियमितता को भी सुनिश्चित करेंगे।

iii. ब्लॉक स्तरीय समिति की बैठक प्रत्येक माह के तीसरे सप्ताह के अंतिम कार्यदिवस पर आयोजित करेंगे तथा पीईईओ/यूसीईईओ तथा विद्यालय स्तर से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण कर उन पर की जाने वाली कार्यवाही का प्रबोधन करेंगे एवं बैठक की कार्यवाही विवरण पंजिका नियमित रूप से संधारित करेंगे।

iv. अपने क्षेत्राधिकार में इस तरह की घटनाओं पर नजर रखेंगे तथा सूचना मिलते ही तत्काल संबंधित संस्थाप्रधान/यूसीईईओ/ पीईईओ से रिपोर्ट प्राप्त करेंगे।

v. अपने क्षेत्राधिकार में इस तरह की घटनाओं पर नजर रखेंगे तथा सूचना मिलते ही तत्काल उच्चाधिकारियों को सूचित करेंगे एवं प्राथमिक जाँच रिपोर्ट संप्रेषित करेंगे।

vi. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी घटना की गंभीरता एवं प्रकृति के अनुसार आवश्यकतानुसार एवं नियमानुसार विभागीय स्तर पर कार्यवाही के साथ–साथ निकटतम पुलिस थाने में लिखित में सूचना संप्रेषित करवाना सुनिश्चित करेंगे।

vii. अपने क्षेत्राधिकार में भ्रमण के दौरान विद्यालयों में गठित समिति के कार्यवाही रजिस्टर का अवलोकन करेंगे तथा अधीनस्थों को वांछित संबलन प्रदान करेंगे।

viii. यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्यालय में उचित स्थान पर चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर (1098) अंकित है अथवा नहीं।

ix. प्रत्येक विद्यालय में शिकायत पेटिका की उपलब्धता तथा उसमें प्राप्त शिकायतों पर की गई कार्यवाही का भी अवलोकन करेंगे तथा अपेक्षित कार्यवाही की सुनिश्चितता हेतु वांछित निर्देश प्रदान करेंगे।

x. परिपत्र के साथ संलग्न प्रपत्र में अपने अध्ययधीन आने वाले समस्त विद्यालयों की प्रत्येक माह पीईईओ/यूसीईईओवार समेकित सूचना अपने उच्चाधिकारियों को संप्रेषित करना सुनिश्चित करेंगे।

- **पीईईओ/यूसीईईओ के दायित्व–**

i. पीईईओ/यूसीईईओ अपने क्षेत्राधिकार क्षेत्र के समस्त विद्यालयों के लिए एक निगरानी समिति का गठन करेंगे तथा पीईईओ/यूसीईईओ स्तर पर कार्यकारी समिति का गठन करेंगे।

ii. पीईईओ/यूसीईईओ स्तरीय समिति की माह के दूसरे सप्ताह में अंतिम कार्य दिवस को इस समिति की बैठक आयोजित की जाएगी तथा विद्यालय स्तर से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण कर उन पर की जाने वाली कार्यवाही के संबंध में निर्णय करवाया जाकर संबंधितों को प्रबोधन हेतु पाबंद करेंगे एवं बैठक की कार्यवाही विवरण पंजिका नियमित रूप से संधारित करेंगें।

iii. पीईईओ/यूसीईईओ अपने अधीन विद्यालयों से उक्त प्रकार की घटनाओं के प्रति पूर्णतः सजग रहेंगे तथा घटना के बारे में सूचना मिलते ही संज्ञान लेते हुए आवश्यकतानुसार वांछित कार्यवाही तत्काल संपादित करेंगे तथा संबंधित सीबीईओ को सूचित करेंगे।

iv. अपने क्षेत्राधिकार में इस तरह की घटनाओं पर नजर रखेंगे तथा सूचना मिलते ही तत्काल उच्चाधिकारियों को सूचित करेंगे एवं प्राथमिक जाँच रिपोर्ट संप्रेषित करेंगे। पीईईओ/यूसीईईओ घटना की गंभीरता एवं प्रकृति के अनुसार आवश्यकतानुसार एवं नियमानुसार विभागीय स्तर पर कार्यवाही के साथ–साथ निकटतम पुलिस थाने में लिखित में सूचना संप्रेषित करवाना सुनिश्चित करेंगे।

v. अपने क्षेत्राधिकार के प्रत्येक विद्यालय में गठित समिति के कार्यवाही रजिस्टर का अवलोकन करेंगे तथा अधीनस्थ संस्थाप्रधानों का वांछित संबलन प्रदान करेंगे।

vi. यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्यालय में उचित स्थान पर चाइल्ड हेल्प लाइन नम्बर (1098) अंकित है अथवा नहीं।

vii. प्रत्येक विद्यालय में शिकायत पेटिका की उपलब्धता तथा उसमें प्राप्त शिकायतों पर की गई कार्यवाही का भी अवलोकन करेंगे तथा अपेक्षित कार्यवाही की सुनिश्चितता हेतु निर्देश प्रदान करेंगे।

viii. परिपत्र के साथ संलग्न प्रपत्र में अपने अध्यधीन आने वाले समस्त विद्यालयों की प्रत्येक माह संस्थावार समेकित सूचना अपने उच्चाधिकारियों को संप्रेषित करना सुनिश्चित करेंगे।

ix. ऐसी दुर्व्यवहार की घटना घटित होने के उपरांत अन्य दण्डात्मक कार्यवाही के अतिरिक्त दुर्व्यवहार से पीड़ित विद्यार्थी को मानसिक अवसाद से बाहर निकालने के लिए उसकी काउंसलिंग की जानी आवश्यक होती है। पीईईओ स्वयं अपना परिक्षेत्र के दक्ष शिक्षक की सहायता से संबंधित विद्यार्थी के मन से भय और अवसाद दूर करने हेतु अतिरिक्त समय देकर उसे सामान्य व्यवहार तक लाने का प्रयास करेंगें।

x. ऐसे विद्यार्थी को यदि अतिरिक्त अध्ययन की आवश्यकता भी हो तो भी उसे अध्ययन की निरंतरता हेतु अतिरिक्त वैयक्तिक कक्षाएँ उपलब्ध कराई जाए। ऐसे विद्यार्थियों के लिए प्रेरक पुस्तकें उपलब्ध कराई जानी उचित रहेगी।

xi. विद्यार्थी अपनी हॉबी के प्रति बहुत संवदेनशील होते हैं अतः अवसाद को दूर करने के लिए हॉबी (जैसे संगीत, लेखन, खेलकूद, चित्रकला इत्यादि) को एक थैरेपी के रूप में उपयोग किया जा

सकता। अतः इस समय में उसे अधिकाधिक अपनी हॉबी से साथ जोड़ना भी उसमें उत्पन्न करने में बेहतर भूमिका निभाएगा।

- **संस्थाप्रधान के दायित्व–**

i. संस्थाप्रधान विद्यालय स्तर पर अनाचार की घटनाओं को रोकने के लिए नोडल अधिकारी होंगे। उक्त संबंध में प्रभावी क्रियान्विति हेतु वे विद्यालय के लिए निगरानी समिति का गठन करेंगे।

ii. विद्यालय स्तरीय समिति माह के प्रथम सप्ताह के अंतिम कार्यदिवस को इस समिति की बैठक आयोजित करेंगे।

iii. विद्यालय में कार्यरत समस्त कार्मिकों, शिक्षकों, एसडीएमसी व एसएमसी के सदस्यों को 'लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियमि–2012' की कतिपय धाराओं यथा धारा–19(i) एवं 21 में निहित प्रावधान, जो समस्त कार्मिकों को दायित्वबद्ध करते हैं कि बाल/यौन प्रताड़ना से सम्बन्धित घटनाओं पर तत्काल प्रसंज्ञान लिया जाकर नियमानुसार कार्यवाही संपादित की जाए, की अवगति प्रदान करवाते हुए प्रत्येक स्तर पर इसकी सख्ती से पालना हेतु पाबंद किया जाए।

iv. विद्यालयों में गुड–टच, बेड–टच की जानकारी देने हेतु पेम्फलेट, प्रश्नोत्तरी, कविता, लघु नाटक, पोस्टर व कहानी इत्यादि के माध्यम से क्षेत्रीय शालीन भाषा में कार्यक्रम आयोजित किए जाए। साथ ही विद्यालय में होने वाली बाल सभाओं में भी इस विषय पर जानकारी दिया जाना सुनिश्चित कराए।

v. संस्थाप्रधान हैड बॉय और हैड गर्ल को इस कार्य हेतु प्रशिक्षित करेंगे तथा इनके माध्यम से अन्य विद्यार्थियों को गुड–टच, बेड–टच की जानकारी देने का कार्य करेंगें एवं किए गए कार्यों का रिकॉर्ड संधारित करेंगे जिसे भ्रमण के दौरान उच्चाधिकारियों के द्वारा अवलोकित किया जा सकेगा।

vi. विद्यालय में अगर विद्यार्थी विद्यालय बस अथवा ऑटो से आता है, तो इसका रिकॉर्ड विद्यालय में रखा जाए। बस एवं ऑटो तथा उनके चालक/परिचालक का पुलिस सत्यापन कराया जाए। इसी प्रकार विद्यालय में कार्य कर रहे कार्मिकों/संविदा या निविदा पर कार्यरत कार्मिकों का भी सत्यापन कराया जाए तथा उनका पहचान पत्र सदैव उनके साथ रहे एवं उसका संधारण भी हो।

vii. अनजान/संदिग्ध नजर आने वाले व्यक्ति के विद्यालय परिसर में देखे जाने पर उससे तत्काल पूछताछ कर पुष्टि की जाए।

viii. विद्यार्थियों को उनके शरीर एवं अंगों के विकास के संबंध में आवश्यक जानकारी दी जाए।

ix. विद्यालय की प्रार्थना सभा नैतिक मूल्यों एवं संस्कारों के लिए उर्वरा होती है। अतः प्रार्थना सभा में नैतिक एवं अनुकरणीय कथन/कथा एवं प्रेरक जीवनियों को आवश्यक रूप से सम्मिलित किया जाए जो व्यावहारिक हो एवं वर्तमान परिस्थितियों से जुड़े हुए हो।

x. स्थानीय परिवेश में विद्यार्थियों के संबंध में घटित होने वाली अच्छी–बुरी घटनाओं से विद्यार्थी आवश्यक रूप से परिचित हों, परन्तु यह ध्यान रखा जाए कि इसका उद्देश्य भय पैदा करना न हो वरन् विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करना हो।

xi. प्रत्येक अभिभावक का दूरभाष नम्बर उपस्थिति रजिस्टर में विद्यार्थी के नाम के साथ अंकित हो। विशेष परिस्थिति में माता–पिता के स्थान पर अन्य अभिभावक का दूरभाष नम्बर हो सकता है, जिसका कारण सुस्पष्ट रूप से उल्लिखित हो।

xii. विद्यालयों में होने वाली अध्यापक–अभिभावक बैठक (पी.टी.एम.) में अध्यापकों द्वारा अभिभावकों बच्चों की सूक्ष्म गतिविधियों एवं उनके स्वभाव पर नजर रखने, पड़ोसियों एवं रिश्तेदारों से बाल उत्पीड़न से सावधान रहने के संबंध में समझाया जाए।

xii. विद्यालय के कक्षा–कक्षों में सद्भावनापूर्ण वातावरण बनाने हेतु विशेष प्रयास किए जाए एवं किशोर बालक–बालिकाओं के मध्य स्वास्थ्य व स्वच्छता संबंधी जागरूकता उत्पन्न करने एवं उन्हें गुड टच–बेड टच तथा राज्य बाल संरक्षण आयोग, बाल कल्याण समिति, पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समितियों के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी जाए।

xiv. यथासंभव विद्यालय परिसर में आवश्यकतानुसार चिह्नित स्थानों पर लिखित चेतावनी 'आप कैमरे की नजर में है' सहित CCTV कैमरे लगवाए जाए। विद्यालय परिसर में एक शिकायत पेटिका अत्यावश्यक रूप से लगवाई जाए तथा उसे विद्यालयस्तरीय निगरानी समिति की बैठक से पूर्व समस्त सदस्यों के समक्ष खोला जाए तथा उसमें प्राप्त शिकायतों पर वांछित कार्यवाही करते हुए उच्चाधिकारियों को सूचित किया जाए।

xv. विद्यालय में लगाई गई शिकायत पेटिका/गरिमा पेटिका पर इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 22.11.2021 में दिए गए निर्देशानुसार 'चुप्पी तोड़ो–हमसे कहो' का पोस्टर आवश्यक रूप से लगाना सुनिश्चित करें।

xvi. विद्यालय के सूचना पट्ट तथा सुदृश्य स्थानों पर **'चाइल्ड हेल्प लाइन'** से संबंधित दूरभाष 1098 का स्पष्ट अंकन किया जाए तथा इस बारे में समस्त विद्यार्थियों को जानकारी दी जाए।

xvii. विद्यालय में उत्तरदायी भूमिका में निबद्ध कार्मिकों द्वारा इस तरह के अपराध में संलिप्तता पाए जाने पर संबंधित पक्ष/व्यक्ति के विरुद्ध कठोर कार्यवाही अमल में लाई जाए।

xviii. विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण हेतु कम्प्यूटर/लेपटॉप/मोबाइल फोन आदि उपयोग में लिए जा रहे हैं जिससे इंटरनेट एवं सोशल मीडिया से उनका निरंतर सम्पर्क होता रहता है। कम उम्र के बच्चे सही एवं गलत के ज्ञान के अभाव में कई बार डिजिटल संसाधनों के अनुचित प्रयोग करने अथवा इनके कारण किसी उत्पीड़न का शिकार हो सकते हैं। विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में डिजिटल माध्यमों के अनुचित प्रयोग के दुष्प्रभाव एवं तत्संबंधी कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी जाए एवं अभिभावकों को भी बच्चों द्वारा डिजिटल संसाधनों के प्रयोग पर सूक्ष्म निगरानी रखने की सलाह दी जाए एवं उन्हें इस क्रम में जागरूक किया जाए।

xix. यूथ क्लब को विद्यालय में ज्यादा प्रभावी बनाया जाए जिससे बच्चों में जीवन जीने का कौशल, आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

विकसित हो तथा तनाव, भय एवं संकोच जैसे मनोविकार दूर हो एवं सोच में लचीलापन आए।

xx. ऐसी दुर्व्यवहार की घटना घटित होने के उपरान्त अन्य दण्डात्मक कार्यवाही के अतिरिक्त दुर्व्यवहार से पीड़ित विद्यार्थी को मानसिक अवसाद से बाहर निकालने के लिए उसकी कॉउंसलिंग की जानी आवश्यक होती है। पीईईओ स्वयं अपने परिक्षेत्र की दक्ष शिक्षक की सहायता से संबंधित विद्यार्थी के मन से भय और अवसाद दूर करने हेतु अतिरिक्त समय देकर उसे सामान्य व्यवहार तक लाने का प्रयास करेंगे।

xxi. ऐसे विद्यार्थी को यदि अतिरिक्त अध्ययन की आवश्यकता हो तो भी उसे अध्ययन की निरंतरता हेतु अतिरिक्त वैयक्तिक कक्षाएँ उपलब्ध कराई जाए। ऐसे विद्यार्थियों के लिए प्रेरक पुस्तकें उपलब्ध कराई जानी उचित रहेगी।

xxii. विद्यार्थी अपनी हॉबी के प्रति बहुत संवेदनशील होते है अतः अवसाद दूर करने के लिए हॉबी (जैसे संगीत, लेखन, खेलकूद, चित्रकला इत्यादि) को एक थैरेपी के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अतः इस समय में उसे अधिकाधिक अपनी हॉबी के साथ जोड़ना भी उसमें विश्वास उत्पन्न करने में बेहतर भूमिका निभाएगा।

- **शिक्षकों के दायित्वः–**

i. शिक्षक विद्यार्थियों के साथ आत्मीय संबंध रखें तथा उन्हें अपनी बात कहने के लिए प्रेरित करें।

ii. विद्यार्थियों की किशोरावस्था एवं संवेगात्मक संबंधी समस्याओं का निराकरण शालीनता से करें।

iii. कक्षाध्यापक विद्यालय के प्रारंभ, मध्याह्न एवं समापन पर यह पुष्ट करें कि कक्षा में विद्यार्थी अकेला तो नहीं है।

iv. विद्यार्थी अंतराल अवधि में ही लघु शंका हेतु जाए। इससे अतिरिक्त अवधि में जाने वाले विद्यार्थी का ध्यान रखा जाए कि वो नियत समय पर लौट आया/आई है कि नहीं? शौचालय/मूत्रालय के दूर अवस्थिति होने की स्थिति में आने–जाने के दौरान विद्यार्थी पर दृष्टि रखी जानी चाहिए। आवश्यकतानुरूप छोटे विद्यार्थियों/बालिकाओं को यथा संभव लघुशंका हेतु अकेला नहीं भेजा जाए।

v. विद्यालय परिसर में खेलने के दौरान विद्यार्थियों की गतिविधियों पर शिक्षकों की सामान्य दृष्टि हो।

vi. विद्यार्थी के व्यवहार में आकस्मिक परिवर्तन दृष्टिगत होने पर उसे जानने का प्रयास करें तथा आवश्यकता पड़ने पर संस्थाप्रधान को सूचित करें। संस्थाप्रधान आवश्यक होने पर अभिभावकों से बात करें अथवा मुलाकात करें।

vii. छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रखा जाए। उनका बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ असामान्य रूप से/अधिक संगति करने पर भी पैनी दृष्टि रखी जानी चाहिए।

viii. लगातार अनुपस्थित रहने/देरी से आने/जल्दी जाने वाले विद्यार्थी के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाए। कई बार विद्यार्थी आवास से विद्यालय की ओर प्रस्थान कर जाता है, परन्तु विद्यालय नहीं पहुँचता है, इस प्रकार की परिस्थितियों में संस्थाप्रधान को अवगत करवाते हुए कारण की गहनता से जाँच करें।

- **अभिभावकों के दायित्वः**

i. विद्यालय में बालक/बालिका का प्रवेश करवाने से पूर्व अभिभावक विद्यालय के संबंध में पूर्ण जानकारी यथा विद्यालय की मान्यता/सम्बद्धता/मूलभूत सुविधाएँ/शैक्षिक–सहशैक्षिक प्रगति के संबंध में आवश्यक प्रगति प्राप्त करें। प्रवेश दिलाने के साथ ही विद्यालय, संस्थाप्रधान, कक्षाध्यापक, विषयाध्यापक, शारीरिक शिक्षक तथा मार्गदर्शक शिक्षक के दूरभाष नम्बर प्राप्त कर लेवें।

ii. अभिभावक का दायित्व है कि प्रत्येक अध्यापक–अभिभावक परिषद् की बैठक में भाग लेकर बालक/बालिका के संबंध में आवश्यक रूप से विमर्श करें।

iii. अभिभावक प्रत्येक दिवस पर विद्यार्थी की विद्यालय डायरी तथा गृहकार्य पुस्तिकाओं को देखें और शिक्षक की टिप्पणी पर आवश्यक रूप से अपनी प्रतिक्रिया करें।

iv. प्रत्येक अभिभावक का यह दायित्व है कि वह अपने बालक/बालिका के साथ नित्य कुछ समय व्यतीत करें, उनके असामान्य व्यवहार के कारणों को जानने का प्रयास करें। इस हेतु आवश्यकतानुसार विद्यालय में संस्थाप्रधान एवं शिक्षकों से सम्पर्क करें।

v. अभिभावकों को आवश्यक रूप से उनके बालक/बालिकाओं के मित्रों से परिचित होना चाहिए तथा बच्चों द्वारा विद्यालय के अतिरिक्त बिताए जाने वाले समय के स्थान एवं व्यक्तियों की जानकारी भी होनी चाहिए।

vi. विद्यार्थी जिस बाल वाहिनी/ऑटो से विद्यालय जाता है, उसकी तथा उसमें कार्य करने वाले चालक/परिचालक की जानकारी भी अभिभावक को होनी चाहिए।

vii. विद्यार्थी के व्यवहार में आकस्मिक परिवर्तन दृष्टिगत होने पर उसे जानने का प्रयास करें तथा आवश्यकता पड़ने पर संस्थाप्रधान व शिक्षकों से संपर्क स्थापित करे।

viii. घर में बालक द्वारा ऑनलाइन शिक्षण हेतु उपयोग में लिए जा रहे कम्प्यूटर/लेपटॉप/मोबाइल फोन और उसके उपयोग पर अभिभावक की सूक्ष्म निगरानी होनी चाहिए।

ix. अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को सलाह देने एवं उनकी समस्याओं पर उचित परामर्श देने हेतु सामाजिक संस्थाओं की मदद ली जाए।

- **शिकायत प्राप्त /घटना घटित होने पर की जाने वाली कार्यवाहीः–**
- **पीईईओ/यूसीसीईओ/संस्थाप्रधान स्तर पर**

1. अनाचार की घटना की शिकायत/घटना घटित होने पर तत्काल दूरभाष पर उच्चाधिकारियों को सूचित करेंगे।
2. विद्यालय स्तरीय समिति तत्काल संज्ञान लेकर उस शिकायत/घटना की जाँच करेगी तथा संस्थाप्रधान को अवगत करवाएगी। संस्थाप्रधान उच्चाधिकारियों को सूचित करते हुए कार्यवाही करना सुनिश्चित करेंगे।
3. शिकायत/घटना की गंभीरता के अनुरूप आवश्यकतानुसार कानूनी

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

कार्यवाही संपादित करवाएंगे। यथा–पुलिस में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करवाना।

4. शिकायत/घटना में किसी कार्मिक की शिकायत/संलिप्तता की संभावना होने पर उसके विरुद्ध विभागीय कार्यवाही हेतु तत्काल उच्चाधिकारियों को सूचित करेंगे।
5. अनाचार की घटना घटित होने पर यदि आप द्वारा उच्चाधिकारियों को सूचित नहीं किया जाता तथा घटना की सूचना समाचार पत्र व अन्य संचार माध्यम से प्राप्त होती है तो लापरवाही बरतने पर नियमानुसार विभागीय कार्यवाही संपादित की जाएगी।

- **सीबीईओ स्तर**

1. शिकायत/घटना के बारे में प्रथम दृष्टया सूचना सीडीईओ कार्यालय को तत्काल दूरभाष पर प्रेषित करेंगे।
2. विद्यालय से प्राप्त शिकायत/घटना के आधार पर तत्काल विद्यालय पहुँचकर संस्थाप्रधान द्वारा करणीय कार्यवाही संपादित करवाएंगे तथा तत्काल अपनी टिप्पणी अंकित कर सीडीईओ को प्रेषित करेंगे।
3. शिकायत/घटना की गंभीरता के अनुरूप यथोचित कानूनी करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।
4. शिकायत/घटना की गंभीरता को निर्धारित करते हुए यथोचित जाँच कर मय अभिशंषा अपनी रिपोर्ट सीडीईओ को प्रेषित करेंगे।
5. प्रतिदिन समाचार पत्रों व अन्य संचार माध्यमों में यदि आपके क्षेत्राधीन विद्यालयों/कार्यालयों से शिकायत/घटना की सूचना प्राप्त होती है तो तत्काल सूचना नहीं देने वाले अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार विभागीय कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करेंगे।

- **सीडीईओ स्तर पर**

1. सीबीईओ से शिकायत/घटना की सूचना प्राप्त होते ही अलर्ट मोड में जाकर उक्त की गंभीरता से अनुसार जिला व पुलिस प्रशासन को अवगत करवाएंगे तथा संबंधित संयुक्त निदेशक को दूरभाष पर सूचित करेंगे।
2. शिकायत/घटना के संबंध में उच्चाधिकारियों यथा–संयुक्त निदेशक तथा निदेशक महोदय को घटना/शिकायत के संबंध में तथ्यात्मक रिपोर्ट मय अभिशंषा तत्काल प्रेषित करेंगे।
3. शिकायत/घटना के संबंध में पुलिस प्रशासन से समन्वय स्थापित कर यथोचित कानूनी कार्यवाही को सुनिश्चित करवाएंगे।
4. शिकायत/घटना की सीबीईओ की रिपोर्ट के आधार पर अग्रिम कार्यवाही हेतु सक्षम अनुशासनात्मक अधिकारी को रिपोर्ट मय अनुशंषा प्रेषित करेंगे।
5. प्रतिदिन समाचार पत्रों व अन्य संचार माध्यमों में यदि आपके क्षेत्राधीन विद्यालयों/कार्यालयों से शिकायत/घटना की सूचना होती है तो जिस स्तर से लापरवाही बरती गई है उस अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार विभागीय कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करेंगे।

- **संयुक्त निदेशक स्तर**

1. सीडीईओ से शिकायत/घटना की सूचना प्राप्त होते ही अलर्ट मोड में जाकर उक्त की गंभीरता के अनुसार विभागीय/कानूनी कार्यवाही का समुचित प्रबोधन करते हुए कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करेंगे तथा निदेशालय को अवगत करवाएंगे।
2. शिकायत/घटना के संबंध में निदेशक को घटना/शिकायत के संबंध में तथ्यात्मक रिपोर्ट मय अभिशंषा तत्काल प्रेषित करेंगे।
3. शिकायत/घटना का लगातार प्रबोधन करते हुए निदेशालय को अवगति प्रदान करवाएंगे।
4. शिकायत/घटना के संबंध में यदि स्वयं सक्षम अनुशात्मक अधिकारी है तो तत्काल निर्णय करते हुए समुचित कार्यवाही करेंगे यदि सक्षम अनुशासनात्मक अधिकारी निदेशक है तो मय अभिशंषा रिपोर्ट प्रेषित करेंगे।
5. प्रतिदिन समाचार पत्रों व अन्य संचार माध्यमों में यदि आपके क्षेत्राधीन विद्यालयों/कार्यालयों से शिकायत/घटना की सूचना प्राप्त होती है, तो जिस स्तर से लापरवाही बरती गई है उस अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार विभागीय कार्यवाही करेंगे/करवाना सुनिश्चित करेंगे।

- **निदेशालय स्तर पर**

1. अनाचार की घटना की शिकायत/घटना घटित होने पर सीबीईओ/डीईओ/सीडीईओ/संयुक्त निदेशक से प्राप्त सूचना के आधार पर समुचित आवश्यक कार्यवाही की जानी सुनिश्चित करेंगे तथा शासन को सूचित करेंगे।
2. संबंधित सक्षम अनुशासनिक अधिकारी से शिकायत/घटना के संबंध में तथ्यात्मक रिपोर्ट मय अभिशंषा तत्काल प्राप्त कर कार्यवाही करेंगे।
3. शिकायत/घटना की गंभीरता को देखते हुए अवगति तत्काल शासन को रिपोर्ट करेंगे।
4. शिकायत/घटना की गंभीरता को निर्धारित करते हुए नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही करना/करवाना सुनिश्चित करेंगे।
5. प्रतिदिन समाचार पत्रों व अन्य संचार माध्यमों से राज्य के किसी भी विद्यालय/कार्यालय से शिकायत/घटना की सूचना प्राप्त होती है, तो तत्काल सूचना नहीं देने वाले अधिकारियों के विरुद्ध आवश्यक विभागीय कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करेंगे।

शिकायत/घटना में विभागीय कार्मिक की संलिप्तता पाए जाने पर संबंधित सक्षम अनुशासनिक अधिकारी के माध्यम से विभागीय कार्यवाही के साथ–साथ अपचारी कार्मिक को एपीओ/निलम्बित करके मुख्यालय परिवर्तन पदस्थापन स्थान से दूरस्थ स्थान पर किए जाने की कार्यवाही तत्काल सुनिश्चित की जाएगी।

उक्त प्रकार की घटना के दुराव–छिपाव, विलम्ब, लापरवाही एवं गैर संवेदनशीलता बरतने वाले अधिकारी/कर्मचारी के खिलाफ जाँच उपरांत समुचित विभागीय कार्यवाही अमल में लाई जावे। सभी संबंधित उक्तानुसार पालना सुनिश्चित करेंगे। ऐसे प्रयास एवं वातावरण तैयार किया जाए कि ऐसी घटनाएँ घटित ही ना हो।

• **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

रपट

मेरी बेटी- मेरा सम्मान

❐ त्रिभुवन चौबीसा

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर के निर्देशों की पालना में बालिका सशक्तीकरण गतिविधि के तहत समग्र शिक्षा उदयपुर के द्वारा मंगलवार 8 मार्च, 2022 को उदयपुर शहर के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेंसी परिसर स्थित सभागार में 'मेरी बेटी- मेरा सम्मान' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में जिले के समस्त 17 ब्लॉक में संचालित राजकीय विद्यालयों के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वर्ष 2021 की दसवीं व बारहवीं परीक्षाओं में ब्लॉक स्तर पर उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली 66 बालिकाओं के साथ ही जिले की समस्त केजीबीवी से इन परीक्षाओं में प्रथम रही 22 छात्राओं का भी सम्मान किया गया। सह शैक्षिक गतिविधियों में राष्ट्रीय स्तर तक प्रतिनिधित्व करने वाली 13 व ज़िला स्तरीय किशोरी उत्सव की विजेता रही 18 छात्राओं सहित कुल 119 छात्राओं को सम्मान स्वरूप फ्रेम्ड प्रशस्ति पत्र, टी शर्ट, कैप व मोमेंटो प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त ज़िले के विभिन्न केजीबीवी विद्यालयों से अध्ययन कर अपने जीवन मे बेहतर मुकाम हासिल करने वाली अनिता मीणा, कोमल भगोरा, रीमा मीणा, मनीषा मीणा, वर्षा मीणा, राधा भगोरा, शर्मिला चव्हान, जीना कुमारी खैर सहित कुल 8 रोल मॉडल्स व जिले के 16 ब्लॉक में श्रेष्ठ कार्य करने वाले कार्मिक व शिक्षिकाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। साथ ही उदयपुर ज़िले की विभिन्न केजीबीवी में अपनी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए तोषी सुखवाल, संजू त्रिपाठी, मनीषा गुप्ता, कुसुमलता, टीना वर्मा व उर्मिला आचार्य सहित कुल 6 पूर्व संस्था प्रधानों को भी सम्मानित किया गया।

इस मौके पर उदयपुर ज़िले के कुराबड़ ब्लॉक के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भूतिया में अध्ययनरत कक्षा सात की छात्रा कुमारी हेमलता पटेल का भी सम्मान किया गया जिसने अपना बाल विवाह खुद रुकवाते हुए समाज को नई दिशा दी है। हेमलता ने अपने उद्बोधन में अपनी पढ़ाई पूर्ण कर प्रशासनिक अधिकारी बनने की इच्छा जताई।

कार्यक्रम में जिला स्तर पर एडीपीसी कार्यालय के कार्मिक श्री भूपेंद्र कुमार नागदा को सम्मानित किया गया। श्री नागदा को यह सम्मान बालिका शिक्षा के साथ-साथ समग्र शिक्षा की समस्त गतिविधियों के वित्तीय लेखों के उल्लेखनीय प्रबंधन के लिए प्रदान किया गया। श्री नागदा एडीपीसी कार्यालय में एम.आई.एस. के पद पर सेवाएँ दे रहे हैं।

कार्यक्रम में एल.ई.डी स्क्रीन पर उदयपुर जिले में समग्र शिक्षा की योजना वर्ष 2021-22 में संचालित गतिविधियों की उपलब्धि पर वृत्तचित्र भी प्रस्तुत किया गया साथ ही केजीबीवी रोल मॉडल्स की सफलता की कहानी स्वयं की जुबानी तथा केस स्टडी, बेस्ट प्रेक्टिस व ज़िले में आर. ई. आई. पार्टनर्स की भूमिका का प्रस्तुतीकरण भी किया गया। इससे पूर्व राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर में बालिका शिक्षा प्रकोष्ठ की डिप्टी कमिश्नर सुश्री देवयानी का वीडियो संदेश भी प्रसारित किया गया। कार्यक्रम के दौरान केजीबीवी धोल की पाटी की छात्राओं द्वारा आत्मरक्षा प्रशिक्षण के साथ-साथ इसी विद्यालय के आत्म वाहिनी दल द्वारा सुंदर बैंड प्रस्तुति दी गई।

इस अवसर पर जिला स्तरीय शैक्षिक किशोरी उत्सव विजेताओं द्वारा 10 स्टॉल तथा अध्यापिका मंच के 5 स्टॉल लगाकर प्रदर्शनी की गई। बालिका राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेंसी की छात्राओं द्वारा ईश वंदना, स्वागत गीत व समूह नृत्य प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गिर्वा पंचायत समिति प्रधान व पूर्व विधायक श्रीमती सज्जन कटारा थी। जबकि अध्यक्षता सीडीईओ श्री ओमप्रकाश आमेटा ने की।

सभी उपस्थित अतिथियों का पगड़ी, उपरणा, बेज व शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया तथा सरस्वती पूजन व ईश वंदना से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि व अध्यक्ष के अतिरिक्त अन्य अतिथिगण जिला सेशन न्यायाधीश व सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री कुलदीप शर्मा, पुलिस उप अधीक्षक श्रीमती चेतना भाटी, एडीपीसी श्री वीरेंद्र सिंह यादव, रॉल मॉडल जया मीणा तथा प्रभारी कार्यक्रम अधिकारी त्रिभुवन चौबीसा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) श्री मुकेश पालीवाल, समग्र शिक्षा के कोटड़ा ब्लॉक के सीबीईओ श्री जय प्रकाश जायसवाल, बड़गाँव ब्लाक की सीबीईओ श्रीमती आशा माण्डावत, फलासिया ब्लॉक के प्रभारी सीबीईओ डॉ. बाल गोपाल शर्मा, सहायक निदेशक डॉ. नरेंद्र टाक, एपीसी श्री गगन चौबीसा व श्री जालंधर सिंह चौहान, प्रधानाचार्य रंजना मिश्रा, समाज सेवी श्रीमती नम्रता चौकसी, क्षेत्रीय पार्षद श्री प्रमोद मेनारिया, कार्यक्रम अधिकारी श्री संदीप आमेटा, श्री सुरेंद्र जैन, रश्मि मेहता व श्री ओमप्रकाश विश्नोई तथा गिर्वा ब्लॉक के संदर्भ व्यक्ति श्री नरेंद्र यादव व कोटड़ा ब्लॉक के श्री देवकीनंदन शर्मा भी उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य श्रीमती किरणबाला जीनगर व प्राध्यापक श्री संतोष कुमार व्यास ने संयुक्त रूप से किया।

उल्लेखनीय है कि राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के निर्देशानुसार यह कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर गत वर्ष 11 अक्टूबर को आयोजित किया जाना था किंतु उदयपुर ज़िले में वल्लभनगर विधानसभा के उपचुनाव की आदर्श आचार संहिता के चलते तत्समय आयोजित नही किया जा सका था।

कार्यक्रम अधिकारी (बालिका शिक्षा)
समग्र शिक्षा उदयपुर (राज.)
मो: 9782961830

Rajasthan Education Department

English for Communication at School

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

Day to day speaking in the assembly makes the students very confident in speaking fluently without any fear. The students are motivated to improve the communication skills by listening and they should be encouraged to come with short speeches, news reading and moral stories.

Gathering the Students for Assembly:-

- Bell has gone, some students are still sitting in the classrooms.
- Students, the bell has gone, move out of your classes and gather in the assembly ground.
- Move fast! Quick!
- Come on everyone, be in a straight line.
- Hurry up
- Stand according to your height, taller ones at the back.
- Ashish, you are taller than Rishi. Please let Rishi come in front.
- Ashu, you are shorter than Ritik. Please come in front.
- Don't skew the line.
- I request all class teachers to accompany their classes while coming for morning assembly.
- I request class monitors to help their class in lining up.
- Classes, attention!
- Stand at ease!
- Attention!
- Late comers should make a separate line.
- Rajesh, you are late. Stand in the separate line.
- A warm and a soothing morning to one and all present here. Today we, the students of class X have got a chance to conduct morning assembly. Let us begin with prayer to Almighty.
- Get ready for the prayers.
- Join your hands and close your eyes.
- Down your hands.
- Now it's time for "THE THOUGHT FOR THE DAY"
- Riya, come on the stage to render th thought for the day.
- Well done, Ganesh.
- Clap for Rohan.
- Now it's time for Today's Headlines.
- Aakash of class IX is coming to read today's news for us.
- Get ready for the pledge.
- I request everyone to repeat the pledge after Mukul in order to give respect to the country.
- I, Rajan, a student of class IX is here to acknowledge you with today's headlines. Firstly some national news……..secondly some international news…… thank you have a nice day.
- Attending morning assembly is compulsory for all so I request class teachers to ensure each student's presence in the assembly.
- This school belongs to you children and thereby it becomes your responsibility to keep its premise clean and tidy and use all school property with respect and care.
- Good morning, respected teachers and dear students. The topic for today's assembly/my speech is on …
- Classes attention! Stand at ease! Attention! Stand at ease.
- Classes Gear up for Question and Answer. (Our GK round)
- Please don't answer collectively. Raise your hands if you know the answer.
- Now I would like to invite our Principal madam/sir to address our dear students.
- Thank you so much madam/sir for your valuable words.
- Classes attention! stand at ease! Attention!
- Be ready for National anthem.
- Stand at ease! Attention!
- This is all for today.
- Thank you all for listening so patiently and I wish you have wonderful day ahead.
- And with this, our daily assembly comes to the end, have a nice day all.

Announcement: Observing Two Minutes Silence

- Let's observe two minutes of silence to pray tributes to the people who had lost their lives in the struggle for India's independence.
- It is now requested to all to take two minutes of silence to reflect/honour/remember/pray for ……soul to rest in peace.
- Please stand silently for a moment of reflection and respect. Words cannot express the tremendous grief our nation is experiencing over the tragedy of……(past night/past week)this silence is observed to mourn the tragic loss of lives and injuries and our deepest sympathies go out to the victims, their families and friends.

Post Assembly-Some instructions for dispersing the students after school assembly.

Rajasthan Education Department

- This is all for the morning assembly.
- Before you go back to your classes, I have an important announcement to make.
- Classes, disperse.
- Wearing gold/silver/expensive ornaments like earrings/ rings/anklets etc is strictly forbidden.
- Every student must be punctual and regular in his/her attendance to school. School gate will be closed by 10:45 a.m.
- It is requested to students to bring your own stationery stuff required for activity class. Avoid borrowing.
- Speaking in English is compulsory for all within school premises.
- No student will be allowed to go home during recess/take half day leave if there is any valid reason and that too on prior written application/through school diary or phone call by parent.
- Children always come to school clean, well groomed and in proper uniform.
- Please turn off the taps and flush the toilets properly each time after using them.
- Classes, turn right/left/around/back and go back to your classes.
- Class monitors, please check the uniform of your respective classes.
- Go straight to your classes.
- All the students are requested to park their vehicles in the parking area.
- Please don't gather near taps.

Reader and HoD-UG
Govt. IASE, Bikaner
Phone : 9460305331
eltirajasthan2@gmail.com

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, राजस्थान, अजमेर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

(April 2022)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

S.No.	Class	Course Link	QR Code	S.No.	Class	Course Link	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/35jHbDL		2.	Class VII	https://bit.ly/3Nw4w6a	
3.	Class II	https://bit.ly/3uHTuT8		4.	Class VIII	https://bit.ly/3Dy3t1n	
5.	Class III	https://bit.ly/3INQ9GT		6.	Class IX	https://bit.ly/3iHhUqf	
7.	Class IV	https://bit.ly/38aZigf		8.	Class X	https://bit.ly/3INQyZV	
9.	Class V	https://bit.ly/3uUDugH		10.	Class XI	https://bit.ly/3tMv4sc	
11.	Class VI	https://bit.ly/3JO1UyD		12.	Class XII	https://bit.ly/3INdtVn	

रंगमंच - अभिनय से यथार्थ तक

❐ योगेश कुमार सैन

'रंगमंच' शब्द को सुनते ही हमारे मानस पटल पर अंकित हो जाते हैं कुछ दृश्य। ऐसे दृश्य चित्र जिनमें हमें दिखाई देते हैं सजे-धजे परिधानों और मुखौटों को धारण किए हुए कलाकार, रंग-बिरंगे और अनेक चित्रों से चित्रित पर्दे, एक बड़ा सा मंच और सामने बैठकर तालियाँ बजाते और अपने चेहरे पर अनेक भाव धारण करते दर्शकगण। आंग्लभाषा और विश्व के महान नाटककार कवि और अभिनेता विलियम शेक्सपीयर ने अपनी कालजयी कृति 'As you like it' में कहा- 'All the world's a stage, And all the men and women merely players' जी हाँ! यह दुनिया एक रंगमंच ही है और इस रंगमंच के अदाकार है इस दुनिया के सभी नर व नारियाँ जो जीवन के प्रत्येक पल नियति द्वारा पूर्व निर्धारित किरदारों को निभाते हैं और शायद इसीलिए ईश्वर को ही जीवन के इस रंगमंच का सूत्रधार कहा जाता रहा है।

रंगमंच की उत्पत्ति कैसे और कहाँ हुई इस तथ्य की सटीक जानकारी तो इतिहास में उपलब्ध नहीं है परन्तु इस विषय में भिन्न-भिन्न समीक्षकों के भिन्न-भिन्न मत हमें पढ़ने और सुनने को मिलते हैं। इनमें प्रथम मत के अनुसार ऋग्वेद में उपलब्ध कुछ श्लोकों और सूत्रों में देव अप्सरा उर्वशी और ऋषि पुरुरवा के बीच हुए संवाद से मानी जाती है। एक अन्य मतानुसार वैदिक सभ्यता में ही अपने आराध्य देवों को प्रसन्न करने के लिए लोगों द्वारा जो नृत्य और श्लोक, गीत इत्यादि प्रस्तुत किए जाते थे, से रंगमंच की उत्पत्ति मानी जाती है। इन सब मत-मतान्तरों के बावजूद भी सभी समीक्षक इस तथ्य को निर्विवाद रूप से स्वीकार करते हैं कि रंगमंच की उत्पत्ति सर्वप्रथम भारतवर्ष में ही हुई थी।

कालांतर में रंगमंच विद्या को सटीक व व्यवस्थित रूप में प्रतिपादित करने का श्रेय महान विद्वान भरतमुनि को कहा जाता है, जिन्होंने अपने कालजयी ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में रंगमंच की अवधारणा को विस्तृत और वैज्ञानिक तरीके से स्पष्ट किया। नाट्यशास्त्र के छत्तीस अध्यायों में भरतमुनि ने रंगमंच, अभिनेता, अभिनय, नाट्य गायन, वाद्य, दर्शक, रस आदि से संबंधित आदर्श परिकल्पनाओं एवं अवधारणाओं को व्यक्त किया है। स्थूल दृष्टि से रंगमंच के तीन प्रमुख घटक- अभिनय, नृत्य तथा संगीत कहे जा सकते हैं।

भारतीय रंगमंच के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो वास्तविक अर्थों में इसका सटीक कालक्रम निर्धारित करना अत्यंत ही दुस्साध्य कार्य है क्योंकि भले ही अस्पष्ट रूप से ही सही परंतु भारत के प्राचीन धर्मग्रंथों यथा रामायण, महाभारत आदि में रंगमंच द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त करने के प्रमाण पढ़े और सुने जाते रहे हैं। रामायण में मदारी वेशधारी भगवान शिव और वानर वेशधारी हनुमान द्वारा अभिनय का प्रस्तुतीकरण हो या महाभारत के हस्तिनापुर में राजाओं और कुमारों के मनोरंजन के लिए नाट्यशालाओं का उल्लेख इस तथ्य को और अधिक प्रगाढ़ता के साथ स्थापित करते हैं कि रंगमंच परंपरा भारत की एक अति प्राचीन परम्परा है। कालीदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुंतलम' और भास द्वारा रचित 'पंचरात्रम्' तथा भारवी की कृति 'किरातार्जुनीयम्' का आधार महाभारत की कथा है। उसी प्रकार भवभूति द्वारा रचित 'उत्तररामचरितम' और भास की 'प्रतिमानाटकम्' और 'अभिषेक नाटकम्' का आधार रामायण की कथा है। गुप्तकाल और मौर्यकाल से प्राप्त अभिलेखों और शिलालेखों से इस सत्यता के प्रमाण मिले हैं कि तत्कालीन राजोचित मनोरंजन के लिए नाट्यशालाओं और नाट्यमंडपों का निर्माण किया गया था। कई नट-नटनियाँ, नृतक-नृतकियाँ और अभिनेता अभिनय और मंचन का कार्य किया करते थे।

इतिहास में कई स्थानों पर ऐसी कथाएँ भी पढ़ी और सुनी जाती है। जहाँ कुशल गुप्तचर और अभिनेता वेश बदलकर शत्रु की गुप्त योजना और मंत्रणा का पता लगाते थे।

मध्यकालीन भारत में रंगमंच मंद्धम पड़ा। परंतु इसके कुछ आयामों जैसे संगीत, नृत्य आदि का विकास अवश्य हुआ। रंगमंच की अरबी, पारसी और ईरानी शैली नाम से प्रचलित रही। इस काल में प्राचीन भारतीय ग्रंथों पंचतंत्र आदि का मंचन अरबी-पारसी भाषा में किया गया। नौटंकी व तमाशा की कथावस्तु मुख्य रूप से धार्मिक कथाओं और लोक गाथाओं पर आधारित होती थी।

अभिनय अथवा रंगमंच शिक्षण विधि के माध्यम से एक शिक्षक अपने शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बना सकता है। इस विधि में कक्षा के ही कुछ बालकों से अभिनय करवाकर कक्षा का वातावरण प्रभावोत्पादक बनाया जा सकता है। नाट्य शैली पर आधारित पाठ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाले पाठ या संवाद आधारित पाठों व एकांकी को हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी बनाया जा सकता है।

अभिनय के माध्यम से बालकों की प्रतिभा को निखारा जा सकता है। स्वतंत्र अभिव्यक्ति, मौलिक रचनात्मकता के अवसर भी उपलब्ध होंगे। जीवन का रंगमंच हमें यह बताता है कि एक मनुष्य कितने रूप बदल सकता है। मनुष्य में कितनी संभावनाएँ हो सकती है। वस्तुतः रंगमंच अन्य कलाओं की तुलना में जीवन के सबसे नजदीक है। जीवन के रंगमंच में खेलने के लिए मंच, पर्दा और किसी भी प्रकार की साज-सज्जा की भी आवश्यकता नहीं होती है।

जिस प्रकार रंगमंच के आभासी दृश्य और ध्वनियाँ दर्शक को यथार्थ से परे ले जाते है उसी प्रकार जीवन के भी कई अनुभव मनुष्य को अपने भ्रमजाल में फँसाकर उसे यथार्थ से दूर कर देते हैं। वास्तव में इन अनुभवों का यथार्थ से कोई संबंध नहीं होता। 'मेरा नाम जोकर' संभवतः जीवन के रंगमंच को ध्यान में रखकर ही बनाई गई। तीन घंटे का समय क्रमशः बचपन, जवानी व जरावस्था।

यह आवश्यक नहीं कि सदैव प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति वास्तव में प्रसन्न ही हो। वह अपने अंतर्मन में गमों का अथाह सागर लिए हुए आँसुओं को छिपाने का प्रयास करता है।

जीवन के इस रंगमंच में बहुधा मनुष्य को ऐसे किरदार भी निभाने पड़ते हैं जिस वास्तविक जीवन में कोई वजूद नहीं होता। इससे पहले कि जीवन के रंगमंच पर्दा गिर जाए, आप अपने किरदार को बड़ी शिद्दत, लग्न और निष्ठा से निभाते रहिए ताकि पर्दा गिरने के बाद भी तालिया बजती रहे। सभी कहें 'The show must go on.'

वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कांसेड़ा,
नागौर (राज.)
मो: 9549290289

Rajasthan Education Department

समावेशी शिक्षा एवं जेंडर

❐ कृष्ण बिहारी पाठक

समावेशी शिक्षा में, समावेशी शब्द प्रजातांत्रिक एवं लोकहितकारी भावना का प्रतिनिधि है। शैक्षिक संदर्भों में समावेशी शब्द सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, भाषायी या अन्य विभेदकों को दरकिनार करते हुए, विद्यार्थियों के सम्मान, गरिमा, अवसरों की समान उपलब्धता और शिक्षा प्राप्ति के अधिकार की शत-प्रतिशत संप्राप्ति को परिभाषित करता है। विभिन्न वैयक्तिक विभिन्नताओं, विशेषकों, अवस्थाओं की बाधाओं को पार करते हुए सभी विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर और समान अधिकार उपलब्ध करवाना ही समावेशी शिक्षा है। समावेशी शिक्षा उन सभी कारकों के विरुद्ध एक सुरक्षा युक्ति का कार्य करती है जिनके चलते कोई विद्यार्थी शिक्षा से वंचित रहता है, समावेशी शिक्षा विविधताओं की स्वीकृति और सम्मान की पहल है। समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन के लिए शासन-प्रशासन द्वारा समय-समय पर नीतियों का निर्माण किया जाता है। उन नीतियों के आलोक में शिक्षाविदों, शैक्षिक संस्थानों एवं सामाजिकों द्वारा समावेशी संस्कृति तथा समावेशी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसके बाद भी सार्वभौमिक, सार्वजनीन समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों की शत-प्रतिशत संप्राप्ति सुनिश्चित नहीं हो पाती है। सार्वभौमिकीकरण समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं और उन बाधाओं के संभावित समाधान तथा उन समाधानों के पूर्णतम क्रियान्वयन पर विमर्श किया जाना आवश्यक है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शिक्षा, दुर्गम तथा दूरस्थ स्थानों पर बसने वाले विद्यार्थियों की शिक्षा, घुमंतू वर्ग से संबंधित विद्यार्थियों की शिक्षा, लिंग विभेद रहित एक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विभेदकों से मुक्त एक समान शिक्षा आदि इस विमर्श के अंतर्गत आते हैं। यह आलेख लिंग विभेद रहित एक समान शिक्षा अर्थात जेंडर समावेशी शिक्षा के विविध आयामों पर केन्द्रित है।

जेंडर से आशय– प्राकृतिक या जैविक रूप से मानव समुदाय स्त्री तथा पुरुष के दो संवर्गों में विभाजित है, यह विभाजन स्वाभाविक है। किंतु मानव समाज द्वारा पूर्वाग्रह से विभिन्न भूमिकाओं, व्यवहार प्रतिमानों, गतिविधियों, क्रियाकलापों, अभिरुचियों तथा उत्तरदायित्वों को रूढ़िबद्ध करते हुए उन्हें स्त्री होने या पुरुष होने से जोड़कर देखा गया है। समाज द्वारा आरोपित यह पूर्वाग्रह या रुढ़ी ही जेंडर शब्द को परिभाषित करती है। समाज में यह जड़ मान्यता है कि लड़कियों में अपेक्षाकृत भाव पक्ष प्रबल होता है जबकि लड़कों में तर्क पक्ष। यहाँ तक कि अभिभावक अक्सर लड़कियों की उच्च शिक्षा हेतु कला वर्ग के विषयों को प्राथमिकता देते हैं, लड़कों हेतु विज्ञान वर्ग को। समाज द्वारा निर्मित यह अवधारणा जिसे हम जेंडर कह रहे हैं, सभी क्षेत्रों में अतिव्यापित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार जेंडर एक सामाजिक अवधारणा है जिसके अंतर्गत समाज, बिना किसी तार्किक आधार के केवल जैविक रूप से इंसान के स्त्री या पुरुष होने के आधार पर ही उसकी विभिन्न भूमिकाओं, अभिरुचियों, उत्तरदायित्वों और व्यवहार प्रतिमानों को पूर्व निर्धारित कर देता है। यह मानते हुए कि अमुक कार्य किसी व्यक्ति को केवल इसलिए करना चाहिए कि वह स्त्री या पुरुष है। लड़कियों से रंगोली, सजावट, घरेलू कार्य, रस्सीकूद जैसे सुरक्षित खेल जोड़ना तथा लड़कों से बाजार के कार्य, भारी भरकम कार्य तथा कुश्ती जैसे चुनौती भरे खेल जोड़ना इसी श्रेणी के पूर्वाग्रह हैं, जिनका कोई तार्किक आधार नहीं है।

जेंडर आधारित दृष्टिकोण से हानि– समाज द्वारा प्रचलित, लैंगिक विभेदीकरण की यह अवधारणा, मानव तथा विश्व के उत्थान में बहुत बड़ी बाधक है। इस अवधारणा के कारण व्यक्ति को अपनी क्षमता, योग्यताओं का समुचित उपयोग करने के अवसर नहीं मिलते हैं। एक समान शिक्षा, जो कि न केवल राष्ट्र और समाज का कर्त्तव्य है बल्कि विद्यार्थी का अधिकार भी है, उसकी संप्राप्ति एवं उपलब्धि में लक्ष्यपूर्ति नहीं हो पाती है। एक और बड़ी हानि यह है कि विभिन्न भूमिकाओं को समाज द्वारा केवल पुरुषों के लिए उपयुक्त माने जाने से राष्ट्र तथा विश्व को आधी आबादी की रचनात्मक तथा उत्पादक क्षमताओं से वंचित होना पड़ता है। इसके विपरीत विभिन्न भूमिकाओं को केवल स्त्रियों के लिए रूढ़ कर देना भी इसका दूसरा पहलू है। इस तरह से जेंडर की अवधारणा मानवीय संसाधनों के शत-प्रतिशत दोहन तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के रास्ते में बड़ी अवरोधक चुनौती है।

जेंडर समावेशी शिक्षा– लैंगिक विभिन्नताओं के आधार पर समाज द्वारा निर्मित पूर्वाग्रह, रूढ़ियों और जड़ता को तोड़ते हुए मानव मात्र को एक समान गरिमा, एक समान शिक्षा तथा एक समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध करवाने वाली शिक्षा पद्धति जेंडर समावेशी शिक्षा कहलाती है। जेंडर समावेशी शिक्षा हेतु समय-समय पर शासन प्रशासन की नीतियों तथा नियमों द्वारा विभिन्न शिक्षाविदों और शिक्षण संस्थानों, विभिन्न समाज सुधारकों के माध्यम से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं फिर भी लैंगिक आधार पर विभेदीकरण विद्यमान है। लिंग आधारित विभेदीकरण को मिटाने के लिए बनाई गई विभिन्न रणनीतियों का यदि पूर्ण इच्छाशक्ति के साथ क्रियान्वयन किया जाए तो सफलता हासिल की जा सकती है।

जेंडर समावेशी विद्यालय– भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य प्रत्येक शिक्षण संस्थान को समावेशी विद्यालय के रूप में स्थापित तथा विकसित करने का है। समावेशी विद्यालय मानव में अंतर्निहित तथा उसके वातावरण में उपस्थित विविधताओं का सम्मान करते हुए एक समान शैक्षिक अवसर सुलभ करवाने हेतु कृत संकल्पित रहता है। जेंडर समावेशी विद्यालय लिंग आधारित विभेदकों का निषेध करते हुए एक समान शिक्षा एवं शैक्षिक अवसर प्रदान करता है। ऐसा विद्यालय लड़के, लड़कियों तथा ट्रांसजेंडर सभी को एक दृष्टि से देखते हुए उनकी अधिगम संबंधी

Rajasthan Education Department

आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है। समावेशी विद्यालय हेतु विद्यालयी संरचना, शिक्षकों के प्रशिक्षण, उपयुक्त पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम की अनुकूलता महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जेंडर समावेशी शिक्षा के क्रियान्वयन के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं–

जेंडर न्यूट्रल एप्रोच (लिंग निरपेक्ष उपागम)– सिडनी रैन्डोल्फ नामक विद्वान ने जेंडर ब्लाइंडनैस अथवा जेंडर न्यूट्रल एप्रोच को परिभाषित किया है। इस परिभाषा के अनुसार प्राणियों के जैविक, ऐतिहासिक विभेदकों को दरकिनार करते हुए, सभी के साथ एक समान व्यवहार करना ही लिंग निरपेक्ष उपागम है। कक्षागत पठन-पाठन से लेकर पाठ्य सामग्री निर्माण तक, शिक्षण अधिगम तकनीक से लेकर पाठ्य पुस्तकों तक लड़का, लड़की और ट्रांसजेंडर वर्ग के विद्यार्थियों को समान प्रतिष्ठा, आत्मनिर्भरता के अवसर तथा क्षमता संवर्धन के अवसर बिना किसी भेदभाव के समान रूप से उपलब्ध कराना तथा लैंगिक आधार पर भेददृष्टि को बढ़ावा देने वाली सामग्री का निषेध करना इसके अंतर्गत शामिल हैं। पाठ्य पुस्तकों की अंतर्वस्तु इस ढंग से निर्मित होनी चाहिए कि वह जेंडर समावेशी हो। बालक, बालिका के स्थान पर विद्यार्थी शब्द का प्रयोग करना चाहिए। व्यक्ति केन्द्रित प्रश्न या उदाहरण के स्थान पर विषयवस्तु केंद्रित उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए। जैसे–

विद्यार्थियों की अभिरुचि जानने के लिए– शिक्षक कौन बनना चाहता है/चाहती है? के स्थान पर यह पूछना चाहिए कि–शिक्षक बनना किसे पसंद है?

इसी तरह तटस्थ लैंगिक दृष्टिकोण ऐसी शब्दावली, वाक्य तथा अधिगम सामग्री के प्रयोग का यह आग्रह करता है जिसमें सभी वर्गों को समान गरिमा के साथ समानता का अनुभव हो। चेयरमैन, पुलिसमैन जैसे शब्दों को चेयरपर्सन, पुलिसपर्सन के रूप में लिखना इसी श्रेणी के प्रयोग हैं।

जेंडर न्यूट्रल करीकुलम (लिंग निरपेक्ष पाठ्यचर्या)– ऐसी पाठ्यचर्या जिसमें लड़का, लड़की तथा ट्रांसजेंडर तीनों को इनके जैविक विशेषकों से परे, एक समान शैक्षिक अवसर सुलभ करवाने की व्यवस्था हो। शैक्षिक तथा सह शैक्षिक गतिविधियाँ, पाठ्य पुस्तकें तथा अधिगम तकनीकें ऐसे ढंग से विनिर्मित और व्यवस्थित की जाती हैं कि सभी वर्गों को सम्यक समावेश एवं प्रतिनिधित्व मिल सके। इस हेतु पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में आवश्यकतानुसार बदलाव करने के साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण तथा उन्मुखीकरण के आयोजन समय-समय पर किए जाते हैं।

शिक्षा नीति एवं जेंडर समावेशी शिक्षा– सरकार द्वारा समय-समय पर निर्मित प्रायः सभी नीतियों में जेंडर समावेशी शिक्षा हेतु प्रावधान किए गए हैं। क्रमिक रूप से इनके सकारात्मक परिणाम भी हमें मिले हैं किन्तु वांछित लक्ष्यों से अभी दूरी बनी हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में समानता एवं शिक्षा हेतु विविध प्रावधान किए गए। इस नीति में प्रस्तावित संस्तुतियों के क्रियान्वयन के लिए वर्ष 1992 में प्रोग्राम ऑफ एक्शन के तहत निम्न कदम उठाए गए–

- शिक्षक वर्ग को महिला सशक्तीकरण के प्रेरक के रूप में प्रशिक्षित करना।
- विविध क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को चिह्नित करते हुए, सही तस्वीर सामने रखना।
- विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को समान अवसर उपलब्ध करवाना।
- महिला अधिकारों की विधिक जानकारी प्रदान करना।
- शिक्षण, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं को सक्षम, चिंतनशील एवं आत्मनिर्भर बनाना।
- महिला वर्ग में स्व का बोध, आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान की भावना विकसित करना।

यद्यपि इस शिक्षा नीति में जेंडर समावेशी शिक्षा हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण प्रावधान रखे गए थे, किंतु धरातल पर अंतराल बना ही रहा। इस अंतराल को चिह्नित करते हुए और अधिक तैयारी के साथ वर्ष 2005 की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) तथा उसके बाद अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी महत्त्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शैक्षिक गुणवत्ता के साथ शैक्षिक सार्वभौमिकीकरण या समावेशी शिक्षा के युगपत लक्ष्य को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस नीति में जेंडर समावेशी शिक्षा से संबंधित कुछ प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं–

- बुनियादी मानवीय एवं संवैधानिक मूल्य के रूप में लैंगिक संवेदनशीलता के विकास को प्राथमिकता देना। इस नीति में लैंगिक संवेदनशीलता को परिभाषित करते हुए इसके अंतर्गत लैंगिक मुद्दों की पहचान की योग्यता, लैंगिक मुद्दों के प्रति जागरूकता, उत्तरदायित्व एवं समानता के प्रयास तथा रणनीतियाँ आदि को शामिल किया गया है।
- वर्ष 2030 तक सभी के लिए समावेशी, गुणवत्तापूर्ण एवं जीवन पर्यन्त शिक्षा का लक्ष्य।
- यह भी पुष्टि की गई कि निःशुल्क साइकिल वितरण योजना दूरवर्ती स्थानों के साथ-साथ कम दूरी के स्थानों से जुड़ी बालिकाओं के अभिभावकों में बालिकाओं की सुरक्षा के भाव को आश्वस्त करती है।
- यह नीति सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़े वर्गों की लड़कियों एवं उनकी भावी पीढ़ियों के शैक्षिक स्तर के उन्नयन हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था की पक्षधर है, इसलिए विभिन्न नीतियों और योजनाओं के निर्माण में इन वर्गों की बालिकाओं को केन्द्र में रखने की बात इसमें निहित है।
- लड़कियों एवं ट्रांसजेंडर वर्ग को गुणवत्तापूर्ण एवं न्याय संगत शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय क्षमता संवर्धन के लिए जेंडर समावेशी निधि का गठन भी प्रस्तावित है।

निस्संदेह हम सामाजिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में तटस्थ लैंगिक दृष्टि, समानता एवं सम्मान की शुभ भावना के साथ जेंडर समावेशी शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं। जागरूकता एवं वातावरण निर्माण भी सम्यक रूप से हो रहा है। शासन, प्रशासन के नीति नियम भी इस पहल को बल प्रदान कर रहे हैं। परिवार, समाज और संस्थागत स्तर पर यदि पूर्ण इच्छाशक्ति के साथ सतत एवं सामूहिक प्रयास किए जाएं तो आने वाले समय में जेंडर समावेशी शिक्षा के वांछित लक्ष्यों की संप्राप्ति संभव हो सकती है।

व्याख्याता (हिन्दी)
तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी, करौली
(राज.)-322230
मो: 9887202097

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल

विद्यालयों में दान का पारदर्शी माध्यम

❒ विमलेश चन्द्र

विद्यालय माँ सरस्वती के वो मन्दिर हैं जहाँ देश का भविष्य आकार लेता है। विद्यालय विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान करता है जिससे वे अपने शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी कर सकें। यहीं पर उन्हें शिक्षकों द्वारा किताबी ज्ञान के साथ ही नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की भी शिक्षा दी जाती है ताकि वे सुनागरिक बनकर राष्ट्र की सेवा कर सके एवं आवश्यकता पड़ने पर देश के काम आ सके। राजस्थान के शिक्षा विभाग के लिए बहुत ही खुशी की बात है कि कोरोना काल में भी हमारी कठोर मेहनत के बलबूते नामांकन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। नामांकन 1 करोड़ के पास पहुँच गया है। आज ऑनलाइन शिक्षण में भी राजस्थान देश में सर्वोच्च स्थान पर है। नामांकन में सतत वृद्धि एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु विभाग सदैव प्रयासरत है। विद्यालयों में आवश्यक मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की पूर्ति हेतु हमें भी सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा ताकि हम हमारे विद्यालयों की प्रतिष्ठा कायम रख सकें।

इतिहास गवाह है कि राजस्थान शूरवीरों एवं भामाशाहों की भूमि है। जब भी देश या प्रदेश पर कोई संकट आया है, राजस्थानियों ने क्षेत्रवाद, जातिवाद एवं धर्म की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर पीड़ित मानवता की सेवा की है। राजकीय विद्यालयों में भवन-निर्माण एवं आवश्यक भौतिक संसाधनों की आपूर्ति हेतु हालांकि भामाशाहों एवं दानदाताओं का सहयोग समय-समय पर मिलता रहता है फिर भी मैं 'शिविरा' के माध्यम से भामाशाहों/अभिभावकों/शिक्षकों से पुनः अपील करता हूँ कि परिवार में खुशी के अवसरों पर अपनी आय का कुछ हिस्सा राजकीय विद्यालयों में दें ताकि विद्यालयों में आवश्यक मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की पूर्ति की जा सके एवं शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान को देश के अग्रणी राज्यों में शुमार किया जा सके। आज आम आदमी यह चाहता है कि उसके द्वारा दी गयी राशि का समुचित एवं सही उपयोग हो तथा लेन-देन पूर्णतया पारदर्शी हो। राज्य सरकार द्वारा आम आदमी की इस भावना को समझा गया एवं पूर्णतया पारदर्शी तरीके से लेन-देन की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया गया। आज ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से कोई भी व्यक्ति राजस्थान के किसी भी विद्यालय में कभी भी अपनी इच्छानुसार राशि दान कर सकता है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल: शुभारंभ एवं उद्देश्य- ज्ञान संकल्प पोर्टल का शुभारंभ 5 अगस्त 2017 को किया गया। इस पोर्टल का मुख्य उद्देश्य दानदाताओं को राजस्थान के सरकारी स्कूलों की मौलिक जरूरतों को पूरा करने के लिए आकर्षित करना है ताकि प्रदेश के विद्यालयों का भौतिक विकास हो साथ ही साथ इस पोर्टल पर बच्चों को कुछ नया सिखाने के लिए इनोवेशन योजनाएँ चलाई जाती है ताकि अधिक से अधिक वित्तीय कोष एकत्रित हो। इस पोर्टल का एक लक्ष्य यह भी है कि प्रदेश के स्कूलों को आर्थिक रूप से मदद की जाए ताकि उनका विकास हो और इसके लिए इस पोर्टल पर विद्यालयों को गोद लेने की सुविधा भी मौजूद है। ज्ञान संकल्प पोर्टल पर मिलने वाला दान राज्य के विद्यालयों और इनमें पढ़ने वाले बच्चों के विकास पर ही व्यय किया जाता है। इस पोर्टल को पूर्णतया पारदर्शी बनाया गया है। दान से प्राप्त एक-एक रुपये का लेखा-जोखा ऑनलाइन रूप में इसी पोर्टल पर उपलब्ध होता है। इस पोर्टल के माध्यम से प्राप्त राशि को स्कूल के विकास जैसे स्कूल परिसर निर्माण, पुनर्निर्माण, प्रांगण पुनरुत्थान इत्यादि में उपयोग किया जा सकता है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल से दान की प्रक्रिया- ज्ञान संकल्प पोर्टल पर राशि दान करने के लिए दानदाता का रजिस्ट्रेशन होना आवश्यक है एवं उसके पश्चात लॉगिन करना होगा।

1. रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया- ज्ञान संकल्प पोर्टल पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए दानदाता को निम्न प्रक्रिया से गुजरना होगा -

- सबसे पहले दानदाता ज्ञान संकल्प पोर्टल की आधिकारिक वेबसाइट **https://gyansankalp.nic.in/Home/HomePage.aspx#** पर जाकर क्लिक करे।
- इसके बाद वेबसाइट का होम पेज खुल जाएगा। होम पेज पर दानदाता को दो ऑप्शन मिलेंगे। दानदाता को रजिस्ट्रेशन पर क्लिक करना है।
- इसके पश्चात एक रजिस्ट्रेशन फॉर्म खुलेगा जिसमें दानदाता द्वारा अपनी व्यक्तिगत जानकारी जैसे- नाम, मोबाइल नंबर, ईमेल-आइडी, देश, राज्य, पेन-कार्ड नंबर, आधार नंबर, पता आदि भरी जानी हैं।
- उपर्युक्त जानकारी भरने के बाद केप्चा कोड को भरकर दानदाता को रिक्वेस्ट ओटीपी बटन पर क्लिक करना है।
- दानदाता को अपने मोबाइल नंबर पर एक ओटीपी प्राप्त होगा। इस ओटीपी को निर्धारित स्थान में भरकर रजिस्ट्रेशन फॉर्म को सबमिट कर दें। इस प्रकार दानदाता का ज्ञान संकल्प पोर्टल के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन पूरा हो जाएगा। इसी दौरान आपको अपना सुरक्षित पासवर्ड भी दर्ज कर देना है।
- ध्यान रहे रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया एक ही बार

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

की जानी है।

2. लॉगिन प्रक्रिया –

- ज्ञान संकल्प पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन होने के बाद लॉगिन हेतु दानदाता को पुनः इस पोर्टल की आधिकारिक वेबसाइट **https://gyansankalp.nic.in/Home/HomePage.aspx#** पर जाकर क्लिक करना है।
- अब आपके सामने पोर्टल का होम पेज खुलेगा जिसमें से आपको लॉगिन पर क्लिक करना है।
- इसके पश्चात एक फॉर्म ओपन होगा जिसमें आपको यूजर आईडी और पासवर्ड को भरना है तथा केप्चा भरकर लॉगिन पर क्लिक कर देना है जिससे आप अपने पोर्टल पर लॉगिन हो जाओगे।

3. दान प्रक्रिया –

- दानदाता जब भी राजस्थान के किसी भी विद्यालय में ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से राशि का दान करना चाहेगा, उसे लॉगिन की प्रक्रिया से गुजरना होगा। ध्यान रहे रजिस्ट्रेशन केवल एक ही बार होना है।
- लॉगिन होने के बाद एक पेज खुलेगा जिसमें से दाता को **Donate to a school** का चयन कर क्लिक करना है, उसके बाद दानदाता द्वारा **Donate Fund** पर क्लिक करना है।
- **Donate Fund** पर क्लिक करने से एक नया पेज खुलेगा। इस पेज से दानदाता को तीन स्टेप्स से गुजरना होगा, जो निम्न प्रकार हैं –

Step-1 सबसे पहले स्कूल के चयन हेतु By District Block Filter अथवा By Shala Darpan School पर क्लिक करना है जिससे एक पेज ओपन होगा जिसमें निम्न सूचनाएँ Select कर दिए गए ऑप्शन से भरी जानी हैं – School Type, District, Block, School.

Step-2 इस Step में Select Donation Amount पर क्लिक कर Amount (राशि) भरे तथा Frequency में दिए गए ऑप्शन One time, monthly, Yearly में से उचित ऑप्शन का चयन करें।

Step-3 इस स्टेप में Leave note with your Donation के कॉलम में राशि Donate करने का उद्देश्य लिखें।

तीनों Steps से गुजरने के बाद दिया गया केप्चा भर कर सबमिट कर देना है।

- अब **Proceed to pay** नामक पेज Open होगा जिसके द्वारा आप विभिन्न विकल्पों जैसे – डेबिट कार्ड, फोन पे, गूगल पे आदि की सहायता से पूर्णतया सुरक्षित एवं पारदर्शी तरीके से आसानी से राशि दान कर सकते हैं एवं दान करते ही Receipt भी जनरेट हो जाएगी जिसे हम Download कर Print भी निकाल सकते हैं।
- इस पोर्टल द्वारा आप किसी भी स्कूल को गोद ले सकते हैं, किसी भी नए प्रोजेक्ट को स्टार्ट कर सकते हैं और साथ ही साथ किसी भी स्कूल को वित्तीय सहायता देकर शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसके अलावा इस पोर्टल की सहायता से आप मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में भी दान कर सकते हैं। इस पोर्टल पर दान की गयी धनराशि पर आयकर अधिनियम 80(G) के तहत छूट प्राप्त होगी।

ज्ञान संकल्प पोर्टल हेल्पलाइन नंबर– ज्ञान संकल्प पोर्टल पर दाता को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है तो निम्न हेल्पलाइन नंबर एवं ईमेल आईडी पर संपर्क कर अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं –

- **डिपार्टमेंटल और जनरल सहायता के लिए–** 9001739911
- **टेक्निकल सहायता के लिए–** 9887415785
- **ईमेल आईडी – off.csr.dse@rajasthan.gov.in**
- **ad.csr.dse@rajasthan.gov.in**

अंत में मैं शिक्षित समाज से यहीं आग्रह करना चाहूँगा कि इस पोर्टल की आमजन तक जानकारी पहुँचाए एवं उन्हें विद्यालयों में दान देने हेतु प्रेरित करें। दान देने से धन घटता नहीं है जैसा कि कबीरदास जी ने कहा है–

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटिया नीर।
दान दिया धन ना घटे, कह गए दास कबीर।।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़ (चूरू)
मो: 9460489940

घोषणा–पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार–पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1. प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	काना राम
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4. प्रकाशक	:	काना राम
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5. प्रधान सम्पादक	:	काना राम
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, काना राम घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(काना राम) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

भीलवटा : हमारा विद्यालय

❒ दीपक पंड्या

किसी भी समाज व गाँव की जीवन शैली पर शिक्षा का बहुत प्रभाव पड़ता है। वहाँ की संस्कृति, रहन-सहन, बोल-चाल पर वहाँ की शिक्षा प्रणाली का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से उस समाज-गाँव एवं जनमानस पर देखा जा सकता है।

गाँव भीलवटा न्यून आबादी का क्षेत्र है; मात्र 40 घरों की बस्ती है। शहर से मात्र 5 किमी. की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ पहले विद्यालय नहीं था। सत्र 2013 में प्राथमिक विद्यालय खुला और इसके संचालन की जिम्मेदारी हमेशा की तरह हम शिक्षक दंपत्ति को दी गयी।

बात करें तो चुनौतियाँ मानो हमारा ही इंतजार कर रही हो और इन्हीं चुनौतियों पर धीरे-धीरे कार्य करना प्रारंभ किया। इसमें-

1. विद्यालय भवन एवं संसाधनों का अभाव।
2. न्यून आबादी क्षेत्र होने से नामांकन की समस्या।
3. विद्यालय के प्रति जनसमुदाय का रूझान बढ़ाना।
4. क्षेत्र के विद्यार्थी जो शहर के निजी विद्यालयों एवं पास के विद्यालय में जा रहे थे उन्हें जोड़ना।

प्रारंभ में गाँव का सर्वे कर अभिभावकों से संवाद किया गया। उन अभिभावकों का विश्वास प्राप्त करने का प्रयास किया गया। जिनके बालक अन्य विद्यालयों में जा रहे थे और प्रथम सत्र में 15 बालकों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, संस्कारों की शिक्षा एवं बालकों को आर्ट एण्ड क्राफ्ट से जोड़कर बालमित्र गतिविधियों से उच्च स्तरीय कार्य किया गया जिसका सकारात्मक परिणाम यह मिला कि इन छात्रों के अच्छे शैक्षिक स्तर को देखकर आस पास के गाँवों एवं निजी विद्यालयों में जाने वाले बालकों के अभिभावकों का रूझान भी हमारे विद्यालय की ओर बढ़ा और यह सफर अनवरत चलता रहा। वर्तमान समय में 80 छात्र-छात्राओं के साथ पूर्व प्राथमिक कक्षा के 15 छात्र भी विद्यालय से जुड़ चुके हैं। विभिन्न न्यूज चैनल पर एवं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बढ़ती गयी लोकप्रियता में दूर-दूर से गाँव ही नहीं अपितु शहर के बालक भी हमारे विद्यालय में प्रवेश लेने आ रहे हैं।

विद्यालय जनमानस को आकर्षित करने लगा- छोटे विद्यालय में जो पहला आकर्षण होता है वह विद्यालय की बालमित्र गतिविधियों के साथ-साथ विद्यालय भवन का होता है। विद्यालय भवन को इतना सुंदर, सुसज्जित एवं सौंदर्य से भरपूर बनाया गया कि एक बार तो विद्यालय में आने वाले व्यक्ति को भी यह कहने के लिए मजबूर कर देता है कि 'अरे वाह! कितना सुंदर विद्यालय है' विद्यालय में बालकों हेतु विभिन्न प्रकार की वॉल पेंटिंग्स के साथ-साथ छत को भी एक गैलेक्सी के रूप में तैयार किया गया है। पेड़-फूलदार पौधों से सुसज्जित पहाड़ी पर बसा यह विद्यालय अपनी अलग ही छवि बिखेर रहा है। जो आने वाले प्रत्येक शख्स के लिए एक जिज्ञासा का केन्द्र बन जाता है।

भौतिक संसाधनों से संपन्न- विद्यालय वर्ष दर वर्ष अपनी ख्याति प्राप्त करता रहा जिसका सकारात्मक परिणाम यह रहा कि भामाशाहों का रूझान विद्यालय की ओर बढ़ता गया और अपने-अपने स्तर से विभिन्न संसाधन भी प्राप्त होते गए जिसमें, फर्नीचर, वाटर-मोटर, प्रिंटर, कालीन, साउंड सिस्टम, पेयजल की टंकी के साथ-साथ वर्षा ऋतु में बालकों के लिए स्वेटर, जूते, जुराब, टिफिन, वाटर बोतल, अपनी इच्छा से बाँटते रहे।

नवाचार- शिक्षक दम्पत्ति ने अपनी ओर से शिक्षण विधा को रुचिपूर्ण एवं आनंददायी बनाने हेतु अपने स्तर से बाल मनोवैज्ञानिक ढंग से रिसर्च कर विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का निर्माण किया, जिससे बालक रुचि से खेल-खेल में सीखते गये और इसमें आर्ट एण्ड क्राफ्ट से बालकों को जोड़कर उन्हीं के सहयोग से कबाड़ से जुगाड़ के सहारे विषय आधारित शिक्षण सामग्री बनाते गए जिसमें सकारात्मक परिणाम बालकों के सीखने की गति के रूप में देखे गए।

विद्यालय में 1. आज का दीपक, 2. आज का गुलाब, 3. खोया पाया, 4. आज के समाचार, 4. आर्ट एण्ड क्राफ्ट, 6. कबाड़ से जुगाड़, 7. दल नायक, 8. पुस्तकालय आदि नवाचारों से विद्यालय का वातावरण सुंदर बनाया गया जिसके सकारात्मक परिणाम मिलते गए।

अनोखा नवाचार- (1) बचत बैंक- विद्यालय का यह अपने स्तर पर पूरे राज्य में अनोखे नवाचार के रूप में जाना जाने लगा। इस नवाचार का मुख्य उद्देश्य बालकों में अच्छी आदतों का विकास करना, बचत के महत्त्व को समझाना और आर्थिक संबलन देना रहा। इस नवाचार का जन्म कक्षा-कक्ष में बालकों से ही हमारे मस्तिष्क में आया।

क्षेत्र के प्रायः सभी अभिभावक मजदूरी करने जाते है; जाते समय वह बालकों को 2 रु., 5 रु., 10 रु. ऐसे कुछ राशि जेब खर्च के लिए दी जाती है। इस राशि का उपयोग दुकान पर गोली-बिस्किट के रूप में करते थे और कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के दौरान वह बालक जेब से निकाल कर चबाते रहते थे जिससे शिक्षण प्रक्रिया में व्यवधान महसूस किया जाता था और अन्य बालकों का भी ध्यान शिक्षण से हटता था। बालकों के पास शिक्षण सामग्री का भी अभाव देखा जाने लगा। यहाँ से हमारे दिमाग में 'बचत बैंक' की अवधारणा का विचार आया। इस नवाचार को सबसे पहले हमने SMC की बैठक में रखा फिर अभिभावकों की बैठक में इसकी रूपरेखा बनाई गई। जिसमें स्कूल रजिस्टर में सभी बालकों का खाता विद्यालय स्तर पर ही खोला गया। इस खाते में बालक घर से मिलने वाली जेब खर्च राशि को स्वेच्छा से जमा करता रहा। इस तरह से इस नवाचार से बालक की फिजूल खर्च की आदत को बचत की आदत में बदला गया और इस बचत की राशि से बालक अपनी आवश्यकता अनुसार शिक्षण सामग्री भी विद्यालय में उपलब्ध हाट बाजार से प्राप्त करता और विभिन्न त्योहारों जैसे होली, दीपावली पर अपनी पोशाक भी खरीद सका। परिवार को फायदा यह हुआ कि संकट के समय जब कभी

Rajasthan Education Department

पैसा नहीं होता तो वह अभिभावक विद्यालय आकर अपने बालक के खाते से राशि निकाल कर अपना कार्य कर सके। इस नवाचार को पूरे राज्य स्तर पर भी प्रशंसा मिली और विद्यालय संबलन के लिए आने वाले सभी उच्च अधिकारियों से भी प्रशंसा मिली। हमें खुशी है कि हमने बालक को एक अच्छी आदत की ओर प्रेरित किया।

2. आर्ट एंड क्राफ्ट– आर्ट एंड क्राफ्ट एक ऐसा नवाचार रहा जिससे बालकों में रुचि बढ़ी और विद्यालय की शिक्षिका दीपिका पंड्या के सान्निध्य में बालकों को वेस्ट चीजों को किस तरह सदुपयोग किया जा सकता है इससे जोड़ा जिससे बालक पायदान, गुलदस्ते, पैन स्टेंड, पेपर वेट व विभिन्न प्रकार की सौंदर्य सामग्री का निर्माण कर बालकों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। जिसके सकारात्मक परिणाम यह प्राप्त हुए कि बालकों के हुनर को इस तरह की गतिविधियों से तराशा गया।

3. संस्कारों का प्रत्यारोपण– बच्चों में सबसे पहले विनम्रता, सहजता की भावना विकसित की गयी, प्रार्थना सभा ऐसा मंच था जिससे बालकों को अच्छी आदतों को बताया गया और उन्हें समाज के प्रति अच्छे नागरिक बनने के लिए हमेशा प्रेरित किया जाने लगा। इससे बहुत जल्दी बालकों में सकारात्मक परिणाम देखे गए। गाँव में बड़े बुजुर्गों के प्रति सम्मान, आदर भाव एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना, रहन-सहन, बोल-चाल से सभी का मन मोह लिया। जिससे विद्यालय में विद्यालय के शिक्षकों का भी मान सम्मान बढ़ता गया। खाने से पूर्व साबुन से हाथ धोना, पंक्तिबद्ध तरीके से खड़ा होना, अपनी बारी का इंतजार करना, जूठन न छोड़ना, स्कूल समाप्ति के बाद पंक्तिबद्ध तरीके से प्रस्थान करना, यह सब परिवर्तन बालकों में परिलक्षित होने लगे।

4. समुदाय का सहयोग– विद्यालय की सुंदर गतिविधियों, शिक्षण विधाओं एवं पढ़ने वाले बच्चों में सुधार को देखकर समुदाय ने भी विद्यालय को बढ़-चढ़कर सहयोग किया। समुदाय एवं शिक्षक एक कड़ी के रूप में आगे बढ़ते गए, जिससे गाँव के सुख-दुःख, प्रत्येक कार्यक्रम, तीज-त्योहारों में शिक्षकों की भागीदारी से समुदाय और शिक्षक और करीब आते गए जिससे विद्यालय विकास में समुदाय की भागीदारी बढ़ती गई और विद्यालय ऊँचाइयों की सीढ़ियाँ चढ़ता गया। गाँव के किसी भी विवाद को आपसी समझाइश से एवं मिलजुलकर निपटाने की प्रथा प्रारंभ हुई और दंड स्वरूप प्राप्त राशि को विद्यालय में जमा कराया गया जिससे विद्यालयी आवश्यकताओं को भी समुदाय पूरी करता रहा। इसी प्रकार गाँव में बाहर से आने वाली बारात शादी के समय 501 रुपये का सहयोग विद्यालय में देते जो समुदाय के सहयोग से संभव हो पाया। विद्यालय की समस्याओं का समाधान शिक्षक एवं समुदाय मिलकर करने लगे।

उपलब्धियाँ– विद्यालय की ख्याति पूरे जिले में ही नहीं अपितु राज्य भर में फैलती गई और विद्यालय ने कम समय में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की।

1. डूँगरपुर डाइट की ओर से विद्यालय को अपने शोध में शामिल किया गया कि ऐसे क्या कारण है जिससे भीलवटा स्कूल के बालकों का शैक्षिक स्तर इतना उच्च है।
2. विभिन्न प्रकार के संसाधनों को भामाशाहों से प्राप्त करने में सफलता।
3. सुंदर एवं बालमित्र विद्यालय के रूप में ख्याति प्राप्त।
4. आसपास के गाँवों से ही नहीं अपितु शहर से बालकों का यहाँ प्रवेश लेना।
5. संस्कारों की शिक्षा के रूप में विद्यालय को जाना जाने लगा।
6. बालकों को शत-प्रतिशत ठहराव।
7. खेल-खेल में शिक्षा।
8. वेस्ट को बेस्ट बनाना।
9. सभी के लिए अवसर।
10. पूर्व प्राथमिक कक्षा का संचालन।
11. विभागीय अधिकारियों द्वारा प्रशंसा प्राप्त।
12. विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा विद्यालय का अवलोकन।
13. अन्य विद्यालयों के लिए रोल मॉडल के रूप में विद्यालय को देखा जाना।
14. पर्यावरण के प्रति सजगता पहाड़ी क्षेत्र होने के बावजूद वृक्षारोपण कर सुंदर छवि।
15. विद्यालय के नवाचारों को वेबिनार के द्वारा अन्य राज्य के शिक्षकों के साथ साझा करना।
16. विभिन्न प्रशिक्षणों में विद्यालय के मॉडल को दर्शाना।
17. नगर परिषद् डूँगरपुर द्वारा डूँगरपुर गौरव अवॉर्ड 2022 से सम्मानित।
18. शिक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए ब्लॉक स्तर पर सम्मान।
19. उत्तरप्रदेश के द्वारा 'नवाचार एक पहल' दल द्वारा आदर्श राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षिका सम्मान 2019 ।

कोरोना काल को अवसर के रूप में देखना– मार्च 2020 से इस वैश्विक महामारी से पूरा विश्व थम सा गया था, विद्यालय बंद हो चुके थे पर सभी क्षेत्रों को नुकसान झेलना पड़ा था। इसमें सबसे ज्यादा नुकसान विद्यार्थी को हुआ जिसके पढ़ने की गति में रूकावट आ गयी और बच्चे शिक्षा से दूर होने लगे। ऐसे समय में विभाग द्वारा बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। चूंकि हमारा विद्यालय ऐसे दुर्गम क्षेत्र में स्थापित है जहाँ ऑनलाइन शिक्षा सफल नहीं हो पाई तो विद्यालय ने अपने स्तर पर 'मोहल्ला क्लास' की थीम को अपनाया जिसमें पूरे क्षेत्र को अलग-अलग मोहल्लों के आधार पर बाँटने के बाद मोहल्ला क्लास लगाकर बालकों के साथ शिक्षण कार्य कोरोना गाइडलाइन की पालना करते हुए सुरक्षा के साथ शिक्षण कार्य प्रारंभ रखा गया। जिसका सकारात्मक परिणाम यह मिला विद्यालय के बालकों का शिक्षा से जुड़ाव बना रहा और इनका लर्निंग गैप कम रहा। पुनः बालक शिक्षा से जुड़ गया और उसका पढ़ना अनवरत रूप से चलता रहा और इस प्रकार की मोहल्ला क्लास लगाने से अभिभावकों का जुड़ाव भी बना रहा। जिन अभिभावकों के बालक निजी विद्यालय में अध्ययनरत थे उन्हें भी हमारे विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया। इस प्रकार शिक्षक दम्पत्ति ने कोरोना जैसी आपदा को एक अवसर के रूप में बदल दिया।

हमारा मानना है कि हम शिक्षक है और समाज और राष्ट्र के बारे में सोचना है सफलता एक दिन में नहीं मिलती मगर ठान ले तो एक दिन जरूर मिलती है।

शिक्षक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय भीलवटा,
डूँगरपुर (राज.)
मो: 9649522601

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पुस्तक समीक्षा

ये शब्द मेरे (साझा काव्य संकलन)

सम्पादक : व्यास योगेश 'राजस्थानी'; **प्रकाशन** : राष्ट्रीय कवि चौपाल प्रकाशन, बीकानेर; **संस्करण**: 2020; **पृष्ठ** :72; **मूल्य** : ₹ 180।

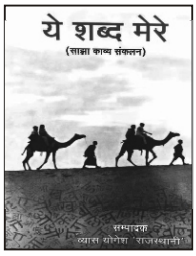

हिंदी और राजस्थानी के युवा रचनाकार व्यास योगेश 'राजस्थानी' द्वारा संपादित पुस्तक 'ये शब्द मेरे' जो कि साझा काव्य संकलन है उन युवा रचनाकारों का जो आज भी हाशिए पर खड़े होकर अपनी पारी का इंतजार कर रहे हैं। ऐसे में उन्हें साहित्य की मुख्यधारा में लाने का सफल प्रयास व्यास योगेश 'राजस्थानी' ने किया है।

इस काव्य संकलन 'ये शब्द मेरे' में तैतीस रचनाकारों की रचनाएँ संकलित है, जिसमें काव्य की लगभग प्रमुख विधाओं में रचाव किया गया है। इसमें भी कुछ रचनाएँ राजस्थानी भाषा की प्रकाशित करके संपादक ने अपनी मातृभाषा प्रेम को प्रस्तुत किया है। संकलन में विविध विषयों को रचनाकारों ने प्रस्तुत किया है जिसमें देश, भाषा, नारी, पारिवारिक आदि कई विषयों को छूने का प्रयास किया गया है। ये रचनाएँ समसामयिक विषयों को छूती हुई सी प्रतीत होती है।

संपादन का राजस्थानी भाषा से प्रेम बहुत गहरा है। भाषा शास्त्रियों के अनुसार भाषा सदैव पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती है। शायद यही नियम सम्पादक व्यास योगेश 'राजस्थानी' पर भी लागू होता है, क्योंकि आप राजस्थानी भाषा के भीष्म पितामह और आधुनिक राजस्थानी कहानी के जनक स्वर्गीय मुरलीधर व्यास 'राजस्थान' के परपौत्र हैं। स्वाभाविक ही है कि आपके स्वभाव में अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम का भाव इन्हीं से स्वतः ही प्राप्त हुआ है जिसका असर इस पुस्तक में भी देखने को मिलता है।

व्यास योगेश 'राजस्थानी' का यह प्रयास बहुत सराहनीय है जिसके कारण वे अपने मन को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर सके। यह साझा काव्य संकलन ऐसे रचनाकारों के लिए भविष्य में मील का पत्थर साबित होगा ही साथ में व्यास योगेश 'राजस्थानी' के लिए भी चुनौती देने वाले होंगे। मैं संकलन के संपादक को तो इसके लिए बधाई देता ही हूँ तथा साथ में उन नए रचनाकारों को भी साधुवाद देना चाहूँगा जिन्होंने इतनी सुंदर रचनाएँ रची। भविष्य उनके इंतजार में सदैव खड़ा रहेगा।

समीक्षक : **डॉ. नमामीशंकर आचार्य**
अतिथि व्याख्याता (राजस्थानी विभाग)
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

सुहाणो सफर

लेखक : राजेश अरोड़ा; **प्रकाशन** : नवकिरण प्रकाशन, बीकानेर; **संस्करण**: 2022; **पृष्ठ** : 88; **मूल्य** : ₹ 200

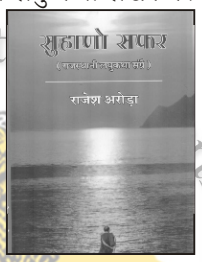

एक समय था जब लघु कथा लेखन को विधा का दर्जा भी प्राप्त नहीं था और पत्र-पत्रिकाओं में फिलर के रूप में इसका इस्तेमाल किया जाता था लेकिन लघु कथाकारों की सतत साधना और उत्तरोत्तर विधागत लेखन का परिणाम है कि आज ना केवल लघुकथा को एक विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है वरन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लघु कथाकारों के द्वारा लघु कथा विधा के रूप में एक रचनात्मक आंदोलन लेखकीय रूप में मौजूद है जो समाज को आईना दिखाने का काम बखूबी कर रहा है तथा विश्वविद्यालयों में भी निरंतर लघुकथा पर शोधकार्य हो रहे हैं।

नवोदित से लेकर स्थापित लघुकथाकार विद्रूपताओं और सामाजिक विसंगतियों को सामने लाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह कार्य लगभग सभी भाषाओं में हो रहा है। राजस्थानी भाषा में भी लघुकथा पर शानदार कार्य हो रहा है। राजस्थानी में आज विविध विधागत लेखन की दरकार भी है क्योंकि सवाल संवैधानिक मान्यता से भी जुड़ा हुआ है। राजस्थानी में जब लघुकथा लेखन की बात आती है तो गजसिंहपुर के राजेश अरोड़ा का नाम उल्लेखनीय रूप से सामने आता है। समीक्ष्य कृति सुहाणो सफर की लघु कथाएँ केवल समाज के सच को सामने नहीं लाती बल्कि यह लघु कथाएँ पाठक को इसलिए भी चमत्कृत और वैचारिक आधार पर प्रभावित करती है कि यह लघु कथाएँ लेखक के मनोवैज्ञानिक नजरिया से भी पाठक को परिचित करवाती है। मनोवैज्ञानिक पहलू के साथ लिखी लघु कथा पाठक तक बहुत जल्द संप्रेषित हो जाती है। जो लोग लघुकथा के प्रशंसक हैं वे जानते हैं कि लघु कथा विधा आसान नहीं है। लघु कथा महज लतीफा नहीं है। लघुकथा चार से दस पंक्तियों में किसी घटना को बयान करने का नाम नहीं है, बल्कि लघुकथा चंद पंक्तियों में किसी सच को सामने लाने के साथ ही पाठक के विचारों को उस सच की ओर आकृष्ट करना भी है। इस नजरिए से देखें तो कोई सन्देह नहीं की राजेश अरोड़ा की लघु कथाएँ उल्लेखनीय रूप से पाठक को प्रभावित करती हुई प्रतीत होती है। संग्रह की एक लघु कथा बूंद री गेराई की चंद पंक्तियाँ पाठक के अंतर्मन तक पहुँचती है। ईश्वर और मनुष्य के बीच के संवाद पर आधारित यह लघु कथा पानी की एक बूंद की अनंत गहराई को दर्शाती है। संग्रह की लघु कथाओं को पढ़कर एक सजग पाठक के लिए अनुमान लगाना बिल्कुल मुश्किल नहीं रहता कि लघुकथाकार राजेश अरोड़ा मानवीय दृष्टिकोण के साथ आम आदमी की पीड़ाओं को उकेरने का काम कर लेखक के सामाजिक सरोकारों को पूरा कर रहे हैं। राजेश अरोड़ा के लिए केवल मानव मात्र सर्वोपरि है वे अपने लघु कथाओं में स्पष्ट रूप से संदेश देते हैं कि मानवीय गरिमा सर्वोत्तम है और अपना जीवन इसी अनुरूप जीना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ हम पर गर्व कर सकें। सुहाणो सफर लघुकथा संग्रह की शानदार लघु कथाएँ युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक का कार्य करती है। नव किरण प्रकाशन बीकानेर द्वारा प्रकाशित लघुकथा संग्रह बेहतरीन छपाई, शानदार बाइंडिंग के साथ ही किताब का आवरण पृष्ठ पाठक को सम्मोहित करता है। राजस्थानी भाषा में एक बेहतरीन लघुकथा संग्रह का इजाफा करने के लिए राजेश अरोड़ा को बहुत-बहुत मुबारकबाद।

समीक्षक-**नदीम अहमद नदीम**
ज़ैनब कॉटेज़ बड़ी कर्बला मार्ग, चोखुंटी, बीकानेर (राज.)-334001
मो: 9461911786

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।
-व. संपादक

सपनों से मिली राह

- सपने वो नहीं होते हैं जो हम नींद में देखते हैं, सपने वो होते हैं जिन्हें हम पूरा करने की चाह रखते हैं।
- वो हैं मेरे सपने जो मुझे जीना सीखाते हैं।
- वो हैं मेरे सपने जो मुझे उम्मीद देते हैं।
- सपने वो होते हैं जो हमें राह दिखाते हैं।
- सपने वो होते हैं जो हमें गिरकर उठने की सीख देते हैं।
- वो होते हैं सपने जो हमें प्रेरणा देते हैं।
- वो नहीं सपने जो बंद आँखों से देखे जाएं, सपने वो होते हैं जिन्हें हम खुली आँखों से देखकर पूरा करते हैं।
- ऐसे होते हैं सपने।

दिव्या मुनावत कक्षा-11 (वर्ग-B)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गणगोरी बाजार, जयपुर (राज.)

पर

होती है बगावत सी
जब सपनों से जुड़ते हैं पर
खटकते हैं उन्हें बहुत ज्यादा
जब पाबंदियों के बावजूद उड़ते हैं पर
है जुनून तो बना ले अपना जहाँ
यह कहते हैं पर
हो मंजर ऐसा जहाँ हूँ सिर्फ मैं ही मैं
उस हवा में बहते हैं पर
तेरे ऊँचे हौंसलों की उड़ान है पर
उन मजबूत इरादों की पहचान है पर
भीड़ से अलग मुकाम है पर
हर पल को जीतने का नाम हैं पर
जिन्हें नापसंद है तू वो काटेंगे पर
लेकिन तू उड़ेगा फिर भी यह कहते हैं पर
नहीं होता किसी डगर का डर
जब हो मजबूत ये पर

खुशी, कक्षा-11 (वर्ग-B)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गणगौरी बाजार, जयपुर (राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

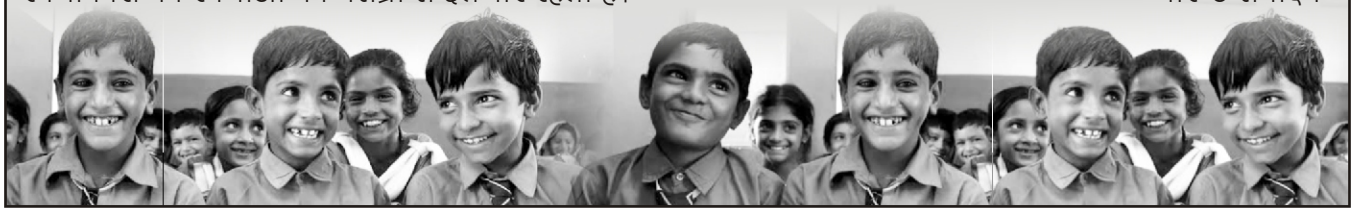

वो जो बहती जा रही है....

वो जो बहती जा रही है,
कुछ तो कहना चाह रही है।
तु सुन, गुण इसको,
समझ के समझा सबको।

वो जो बहती जा रही है,
कुछ तो कहना चाह रही है।
बर्फ से टूटकर,
पर्वतों से निकलकर।

सूरज से लड़कर,
अपनों से रूठकर।
वो जो बहती जा रही है,
कुछ तो कहना चाह रही है।

झर-झर झरणों से झरती,
सर-सर जंगलों से निकलती,
भागकर सागर में जा मिलती,
वो जो बहती जा रही है,
कुछ तो कहना चाह रही है

अपने अस्तित्व को खोकर,
सागर से जा मिलकर,
उसके रंग में रंगकर,
वो जो बहती जा रही है,
कुछ तो कहना चाह रही है।

तु सुन गुण इसको,
समझ के समझा सबको।
वो जो बहती जा रही है।
कुछ तो कहना चाह रही है।

निकिता सैनी, कक्षा–8
राजकीय महात्मा गाँधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय बबाई,
खेतड़ी, झुंझुनूं (राज.)

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्त्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर।
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

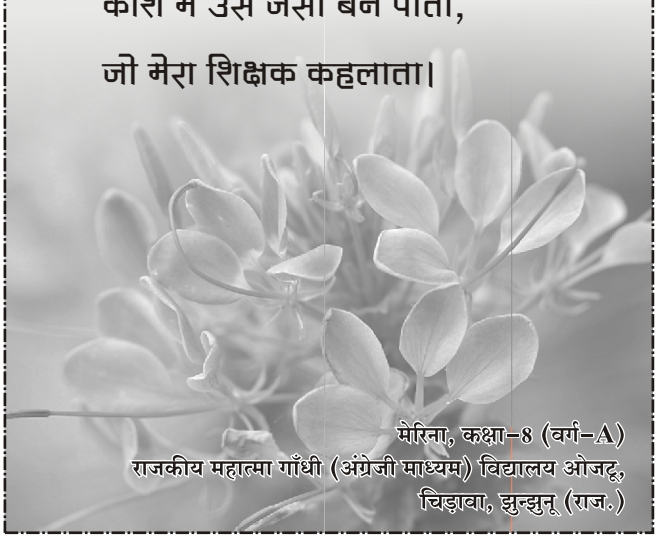

मेरिना, कक्षा–8 (वर्ग–A)
राजकीय महात्मा गाँधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय ओजटू,
चिड़ावा, झुन्झुनू (राज.)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

स्मार्ट क्लास का उद्घाटन

पाली–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पुनाड़िया (बाली) में स्मार्ट क्लास का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री उगम सिंह पंवार मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बाली एवं श्री श्रवण सिंह राजपुरोहित पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कोटबालियान के कर कमलों द्वारा किया गया। प्रधानाध्यापक श्री शोविंद्र सिंह ने बताया कि स्थानीय विद्यालय में कार्यरत समस्त अध्यापक साथियों द्वारा ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से राशि संग्रहित कर स्मार्ट क्लास हेतु एक स्मार्ट टेलीविजन विद्यालय को भेंट किया गया। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने बताया कि आज की परिस्थिति एवं समय की माँग के अनुसार विद्यार्थियों के हित में स्मार्ट टेलीविजन का प्रयोग लाभदायक सिद्ध होगा। पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कोट बालियान ने डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के लिए सभी अध्यापक साथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में पूरे स्टाफ को मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आर .पी. नवीन जोलिया, विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष नवाराम चौधरी, संस्थाप्रधान शोविंद्र सिंह, विनोद जोशी, मंजू लाम्बा, धर्मपाल सरेल, कृष्णपाल सिंह, अरविंद पुरी आदि उपस्थित रहे।

वृक्ष मित्र सम्मान - 2022

बाड़मेर– मेरामचंद हुंडिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मोकलसर में कक्षा बारहवीं का विदाई एवं वार्षिकोत्सव व भामाशाह सम्मान समारोह कार्यक्रम में विद्यालय में प्रतिदिन नवाचारों की अलख जगाने वाले वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र जीत द्वारा लगाए गए पेड़-पौधों की नियमित देखभाल करने वाली चालीस से अधिक बालिकाओं को वृक्ष मित्र सम्मान-2022 से सम्मानित कर हौसला अफजाई की गई।

अंतर्राष्ट्रीय सर्च कैम्पेन में कोटा की बालिकाओं ने किया नाम रोशन

कोटा–राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भीममण्डी की विज्ञान संकाय की तीन छात्राओं ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में अमेरिकन अंतरिक्ष कम्पनी (नासा) द्वारा आयोजित एस्टेरॉयड सर्च कैम्पेन में भाग लेकर एक एस्टेरॉयड की खोज की तथा 21 मूविंग

ऑब्जेक्ट ढूंढे। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में अमेरिकन अंतरिक्ष कम्पनी (नासा) द्वारा आयोजित एस्टेरॉयड सर्च कैम्पेन चलाया गया जिसमें 80 देशों ने भाग लिया था। प्रधानाचार्य श्रीमती गीता मीणा ने बताया कि विद्यालय में विज्ञान संकाय में अध्ययनरत तीन छात्राओं आशना मीणा, हर्षिता राठौर व शिल्पा नागर ने टीम लीडर श्रीमती जया शर्मा व्याख्याता जीव विज्ञान के निर्देशन में भाग लेकर एस्टेरॉयड सर्च कैम्पेन में विश्व की कुल 146 प्रोविजनल डिस्कवरी में से एक प्रोविजनल डिस्कवरी एस्टेरॉयड की खोज करके विश्व पटल पर विद्यालय का ही नहीं अपितु पूरे राजस्थान का नाम रोशन किया है। उन्होंने बताया कि छात्राओं ने 21 मूविंग ऑब्जेक्ट ढूंढे जिसमें से 5 ऑब्जेक्ट्स को इंटरनेशनल एस्ट्रोनोमिकल रिसर्च एसोसिएशन द्वारा प्रिलिमनरी डिस्कवरीज में स्थान दिया गया और एक एस्टेरॉइड को प्रोविजनल डिस्कवरी प्राप्त हुई है। छात्राओं ने 5 प्रिलिमनरी डिस्कवरी प्राप्त की हैं, नासा द्वारा सभी छात्राओं को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए हैं। इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए विद्यालय के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि श्रीमती एकता धारीवाल जी द्वारा पूरी टीम को सम्मानित किया गया। कैम्पेन के लिए डीएसटी राजस्थान द्वारा विद्यालय टीम का चयन किया गया। टीम लीडर जया शर्मा ने बताया कि भाग लेने वाली टीमों में सॉफ्टवेयर कुशलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अलावा प्रारम्भिक एस्ट्रोनॉमी की समझ का विकास होता है तथा सूचना प्रौद्योगिकी व नासा द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाते हैं, छात्राओं द्वारा खोजे गए एस्टेरॉयड के आधार पर शोधार्थी अपना शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं।

12 वीं के छात्रों ने स्कूल में भेंट किए तीन स्टैंड पंखे

झालावाड़–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भिलवाड़ी में प्रधानाचार्य सुश्री संजीदा परवेज की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। कक्षा 12 वीं के छात्रों का विदाई समारोह। मीडिया प्रभारी राजेश हरदेनिया ने बताया कि इस अवसर पर कक्षा 12 वीं के छात्रों द्वारा विद्यालय को तीन स्टैंड पंखे भेंट किए गए। प्रधानाचार्य सुश्री संजीदा परवेज ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी भी छात्र के लिए अपने स्कूल से विदाई लेने का क्षण अत्यंत भावुक होता है लेकिन विद्यार्थी कभी भी अपने गुरु के मन व दिल से विदा नहीं होते। एक अध्यापक के लिए सबसे बड़ी खुशी का क्षण वह होता है जब

Rajasthan Education Department

उसका शिष्य उनकी शिक्षाओं के बल पर उच्च मुकाम हासिल करे। मंच संचालन का कार्य जूनियर विद्यार्थियों ने ही किया। विद्यार्थियों ने प्रत्येक अध्यापक के स्वागत में दोहे भी पढ़े जो उनके व्यक्तित्व के अनुकूल थे। अध्यापकों को गिफ्ट प्रदान किए गए। सभी अध्यापकों ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की व उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। जूनियर विद्यार्थियों ने सीनियर विद्यार्थियों के लिए एक विदाई-गीत भी प्रस्तुत किया जिस पर माहौल भावुक हो गया। जूनियरों ने अपने सीनियर्स से गले मिलकर भावी जीवन की शुभकामनाएँ दी तथा गिफ्ट भेंट किए व उनके सम्मान में सामूहिक भोज का आयोजन किया। इस मौके पर समस्त विद्यालय स्टाफ मौजूद रहा।

कक्षा-9 के छात्र ने बनाया डीजे

जयपुर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेड़ारानीवास, तहसील-कोटखावदा, जयपुर के कक्षा-9 का छात्र जयमिनेश मीणा पुत्र श्री कैलाश चंद मीणा निवासी-मंडावरी (जगदीश पुरा) ने लकड़ी, कागज, बैटरी, प्लास्टिक, घड़ी के सैल, डाटा कैबल, विधुत उपकरण आदि के सहयोग से कोरोना काल में बड़े डीजे को देखकर यह खिलौना डीजे तैयार किया, जिसमें जनरेटर में बैटरी का प्रयोग किया तथा अतिरिक्त घड़ी का सैल लगाया, यह डिस होने पर बिजली से चार्ज होता है, इसमें मोबाइल चार्ज की सुविधा भी है। इसे डाटा कैबल से चार्ज किया जाता है। मोबाइल से ब्ल्यू टूथ से जोड़कर म्यूजिक बजाया जा सकता है। जिसकी आवाज बिल्कुल उच्च क्वालिटी की आती है। इसमें चारों तरफ लाइट लगाई गई है जो म्यूजिक के साथ जलती बुझती है। इसकी खिड़कियाँ खुलती है तथा सामान रखने के लिए अंदर स्पेश/जगह भी है। वरिष्ठ अध्यापक डॉ. भगवान सहाय मीना इसे प्रोत्साहित करते रहते हैं। जिससे प्रेरित होकर इसने यह डीजे बनाया है। इस बालक के कार्य से विद्यालय के सभी अध्यापक बहुत गर्व महसूस कर रहे हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में बिखरे काव्य के विविध रंग

कोटा–सेठ आनंदी लाल पोद्दार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भवानी मंडी में राष्ट्रीय सेवा योजना+2 स्तर के सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवे दिन स्थानीय विद्यालय में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें भवानी मंडी के श्रेष्ठतम कवियों में सर्वश्री डॉ. राजेश कुमार जी पुरोहित, राजेंद्र कुमार जी आचार्य, अरुण कुमार जी गर्ग आदि उपस्थित हुए। सर्वप्रथम माँ शारदे की आराधना के पश्चात कवियों का परिचय श्री दौलत राम शर्मा कार्यक्रम अधिकारी के द्वारा किया गया एवं माल्यार्पण कर सम्माननीय कवियों का स्वागत किया गया। सम्माननीय कवियों द्वारा देश भक्ति एवं सेवा से संबंधित अपनी रचनाओं से राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को भाव विभोर कर दिया। अंत में आभार प्रदर्शन कार्यक्रम अधिकारी श्री दौलत राम शर्मा के द्वारा किया। गया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ

बीकानेर–राज्य सरकार के आदेशानुसार दिनांक 8 मार्च 2022 मंगलवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय साईंसर के प्रांगण में वार्षिकोत्सव, भामाशाह सम्मान व पूर्व विद्यार्थी संगम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुख्य अतिथि श्रीमती अनुसुइया (CBEO) पाँचू, संदर्भ अधिकारी श्री ताराचंद पन्नू, भूतपूर्व सरपंच श्री राजाराम सरावग, वर्तमान सरपंच श्री श्रवणराम एवं प्रधानाचार्य श्री गोमाराम जीनगर द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तदुपरांत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए जिसमें लोकनृत्य, लोकगीत, देशभक्ति कविता के अलावा, संस्कृत भाषा में गीत भी प्रस्तुत किया गया और सत्र 2020-21 कक्षा X व कक्षा XII के श्रेष्ठ परिणाम के फलस्वरूप छात्र-छात्राओं को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया, विद्यालय से स्थानांतरित श्री सांवरलाल सुथार व श्रीमती सुमन लोहिया को बुलाकर विद्यालय परिवार द्वारा साफा बंधवाकर शॉल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। पूर्व विद्यार्थी हेतराम (वरिष्ठ अध्यापक) को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया एवं भामाशाह श्री पूनमचंद सियाग (अध्यापक लेवल-1) को सम्मानित किया। CBEO श्रीमती अनुसूइया ने उपस्थित जनसमुदाय व विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए शिक्षा का महत्त्व व वार्षिकोत्सव की उपयोगिता व संकल्पनाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि भामाशाह विद्यालय की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्रिय भूमिका निभाएं और विद्यार्थी व शिक्षकों के बीच सेतु का काम करें। अंत में प्रधानाचार्य श्री गोमाराम जीनगर ने भामाशाह पूर्व विद्यार्थियों व आगंतुक ग्रामीणों का आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों से समय नियोजन करते हुए अध्ययन करने का आह्वान किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन विद्यालय के श्री जसराज पंचारिया (व.अ. संस्कृत) द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। भामाशाह श्री महेन्द्र गिला की तरफ से समस्त विद्यार्थियों को फल वितरित किए गए।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिरामी, (लूणी) जिला-जोधपुर

(श्री छाजेड़ परिवार मंडल भुवाल माता ट्रस्ट बिरामी द्वारा निर्मित)

❒ महेन्द्र सिंह देवल

राजस्थान देश मे अपनी सांस्कृतिक विरासत के कारण एक अनूठी पहचान रखता है। राजस्थान में भामाशाहों की एक अनोखी परम्परा रही है। वे अपनी मातृभूमि जन्मभूमि को प्राणों से भी ज्यादा महत्त्व देते है। उन्होंने अपने प्रदेश के विकास में तन-मन-धन से सहयोग किया। इसी कड़ी में राजस्थान की सूर्यनगरी कहे जाने वाली जोधपुर की धरा के लूणी पंचायत समिति के गाँव बिरामी मे श्री भुवाल माता मन्दिर ट्रस्ट के संचालक अखिल भारतीय छाजेड़ परिवार द्वारा 3 करोड़ 24 लाख रुपये की लागत से अत्याधुनिक सुविधायुक्त नवीन विद्यालय भवन का निर्माण कर विद्यालय संचालन के लिए शिक्षा विभाग को सुपुर्द किया। वर्तमान विद्यालय सत्र 2014-15 तक माध्यमिक विद्यालय के रूप मे सचांलित था। जिसका भवन व्यवस्थित संचालन के लिए अपर्याप्त था। अतः तत्कालीन संस्थाप्रधान श्री भागीरथ बिश्नोई द्वारा ग्रामवासियों से विचार-विमर्श कर श्री भुवाल माता मन्दिर के ट्रस्ट संचालक अखिल भारतीय छाजेड़ परिवार के प्रतिनिधियों से सम्पर्क किया एवं यह निश्चित हुआ कि भूमि ग्रामवासी उपलब्ध करवाएँगे, तो भवन छाजेड़ परिवार निर्मित करवाएगा। इसी कड़ी में ग्रामवासियों ने गाँव के नजदीक खसरा नं 316/1 मे लगभग 9 बीघा भूमि विद्यालय के नाम दान पत्र दिनांक 26.03.2015 को सम्पादित हुआ। इसी दौरान 01.04.2015 को विद्यालय माध्यमिक से उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत हो गया एवं छाजेड़ परिवार द्वारा उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालन की दृष्टि से पर्याप्त भवन निर्माण कराने का निर्णय लेकर उक्त भूमि पर विद्यालय कक्षा-कक्षों एवं कार्यालय आदि की आवश्यकतानुसार मानचित्र बनवाकर 29 मार्च 2015 को भूमि पूजन कर निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया। 3 करोड़ 24 लाख का व्यय कर निर्माण कार्य 2020 तक पूर्ण हो गया, परन्तु लम्बे लॉकडाउन के कारण भवन का लोकार्पण नही हो पाया। अन्त मे छाजेड़

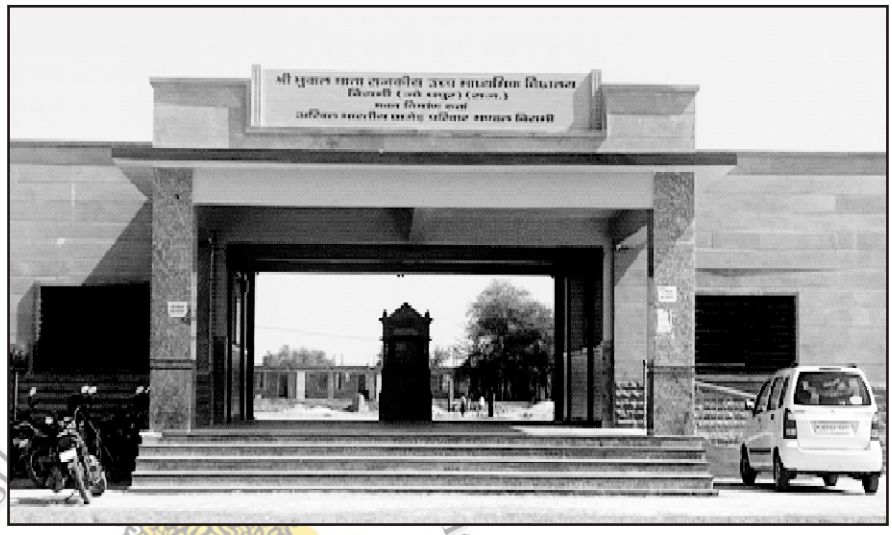

परिवार मण्डल एवं शिक्षा विभाग अधिकारियों ने विचार-विमर्श कर 30 जून, 2021 को भवन के लोकार्पण का निर्णय लिया गया एवं माननीय विधायक महोदय बिलाडा श्री हीराराम मेघवाल, लूणी विधायक श्री महेन्द्र सिंह विश्नोई, बाड़मेर विधायक श्री मेवाराम जैन, माननीय राज्यसभा सांसद श्री राजेन्द्र गहलोत, तत्कालीन मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जोधपुर श्री प्रेमचंद सांखला, छाजेड़ परिवार अध्यक्ष श्री अमृतलाल जैन, महामंत्री श्री सुनील कुमार छाजेड, विद्यालय प्रधानाचार्य श्री महेन्द्र सिंह देवल एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामवासियों की भव्य उपस्थिति में विद्यालय के नवीन भवन का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। वर्तमान भवन मे 14 कक्षा कक्ष, पुस्तकालय हाल, प्रधानाचार्य कक्ष, स्टाफ कक्ष, कार्यालय कक्ष, तीन शौचालय सहित छात्र-छात्राओं हेतु पृथक-पृथक शौचालय सुविधा उपलब्ध है। परिसर की चारदीवारी का निमार्ण ग्राम पंचायत बिरामी द्वारा करवाया गया। इस प्रकार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिरामी पूर्ण सुविधायुक्त स्वच्छ एवं सुन्दर नवीन भवन मे संचालित हो रहा है। श्री छाजेड़ परिवार द्वारा भव्य विद्यालय भवन दान कर शिक्षा विभाग में अनूठी पहल की है, जिसकी शाला परिवार व समस्त ग्रामवासी बिरामी आभार व्यक्त करते है।

जब-जब दानदाता भामाशाहों ने शिक्षा व्यवस्था में अपना योगदान उदारतापूर्वक दिया है तब तब समाज में चमत्कारिक बदलाव को अमलीजामा पहनाया है। स्थानीय विद्यालय जो कि कक्षा-कक्षों की कमी से जूझ रहा था उस समस्या को छाजेड़ परिवार की उदार पहल कर पूर्णत: सुविधायुक्त भवन निर्माण करवा कर एक बेहतर शैक्षिक वातावरण प्रदान करने का सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। वैसे भी छाजेड़ परिवार दानशीलता में हमेशा से ही अग्रणी भूमिका निर्वहन करता है। छाजेड़ परिवार ने मन्दिर हेतु 21 लाख रुपये सहयोग राशि प्रदान की। इसी प्रकार विविध गौशालाओं में छाजेड़ परिवार 1 करोड़ रुपये का दान दे चुका है। स्थानीय विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को भी पूर्व सत्र में 2018-2019 में स्कूल बैग एवं सत्र 2019-2020 में समस्त विद्यार्थियों को जूते वितरण किए जा चुके है।

अखिल भारतीय छाजेड़ परिवार द्वारा बिरामी गाँव में श्री भुवाल माता का भव्य मन्दिर

निर्मित है। जहाँ देशभर से श्रद्धालु आते रहते है। श्रद्धालुओं के ठहरने हेतु सुविधायुक्त आवास व्यवस्था उपलब्ध है एवं हर वर्ष नवरात्रि में मेले का आयोजन होता है। जिसकी समग्र व्यवस्थाएँ छाजेड़ परिवार ही संचालित करता है।

वर्तमान में विद्यालय में कक्षा 1 से 12 तक कुल 486 विद्यार्थियों का नामांकन है तथा 16 स्टाफ कार्यरत है। छात्र सुविधायुक्त भवन में श्रेष्ठ शैक्षिक गुणवत्ता एवं सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को पूर्ण कर सकेंगे एवं समाज को चरित्रवान राष्ट्रभक्त नागरिक प्रदान कर सकेंगे। यह भवन पश्चिमी राजस्थान के शिक्षा विभाग के राजकीय विद्यालयों में एक सुन्दर एवं श्रेष्ठ भवन के रूप में एक अभूतपूर्व पहल है। श्री छाजेड़ परिवार द्वारा आधुनिक सुविधायुक्त सुन्दर व श्रेष्ठ भव्य विद्यालय भवन बना कर शिक्षा विभाग को सुपुर्द कर एक अनूठी पहल की है, विद्यालय परिवार, ग्रामवासी एवं शिक्षा विभाग इनके योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए छाजेड़ परिवार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

विद्यालय का संक्षिप्त विवरण-

स्थापना वर्ष-1959
उच्च प्राथमिक स्तर-1984
माध्यमिक स्तर-2010
उच्च माध्यमिक स्तर- 2015-16
वर्तमान संकाय- कला
कुल नामांकन सत्र (2021-22)- 486
संस्थाप्रधान का नाम- श्री महेन्द्र सिंह देवल
कार्यरत व्याख्याता-03
कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक- 05
कार्यरत अध्यापक- 06
कार्यरत शारीरिक शिक्षक- 01
कार्यरत कनिष्ठ सहायक-01
कुल स्वीकृत पद- 19
कुल कार्यरत पद- 17

स्थानीय विद्यालय का नाम परिवर्तन-श्री भुवाल माता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिरामी करने की प्रक्रिया विभाग को प्रस्तुत की गई है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिरामी,
लूणी, जोधपुर
मो: 9414219830

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-फरवरी 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	RAJGARH SADULPUR NAGRIK PARISHAD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	CHURU	2400000
2	GANESH PRASAD KANDOI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	CHURU	600000
3	SATYANARAYAN KISHANLAL TOSANIWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RASHIDPURA (219824)	NAGAUR	461000
4	PREMSUKH THALORE	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	321000
5	OLIVE TEX SILK MILLS PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DEVIPURA BANI (216073)	JHUNJHUNU	250000
6	OLIVE TEX SILK MILLS PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAMPURA (216075)	JHUNJHUNU	250000
7	JUGAL KISHORE POONIA	GOVT. SECONDARY SCHOOL SULKHANIYA CHHOTA (215265)	CHURU	250000
8	VIRENDRA KUMAR SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SANWATSAR (221533)	AJMER	250000
9	DURGA LAL KUMAWAT	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL GHATIYALI (506983)	AJMER	155000
10	AMAR SINGH	GOVT. SECONDARY SCHOOL BINJAWAS (215239)	CHURU	150000
11	JAIPAL SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHELASI (216037)	JHUNJHUNU	147800
12	MANGI LAL CHAUDHARY	Donated amount in 10 Govt. Schools	JODHPUR	146250
13	RITA BHATIA	SHAHID SHREE AMRARAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JAWLA (219563)	NAGAUR	141000
14	SHIV KUMAR SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHELASI (216037)	JHUNJHUNU	125000
15	RAKESH KUMAR SAINI	SAHID VINOD KUMAR NAGA GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAMPURA DHOD (213258)	SIKAR	120000
16	MANISH KUMAR ALORIYA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL GHATIYALI (506983)	AJMER	120000
17	YOGESH KUMAR JANU	SVATANTRATA SAINANI LET. CHOUDHURY LADURAM GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KISARI (480266)	JHUNJHUNU	111000
18	SHRI BALAJI CONSTRUCTION COMPANY GHANA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GHANA (213193)	SIKAR	100100
19	VEDKOR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHELASI (216037)	JHUNJHUNU	100000
20	SURENDRA KUMAR BALIWAL	GOVT. SECONDARY SCHOOL MALSAR (215636)	JHUNJHUNU	100000
21	KANARAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BOYAL PALI (221167)	PALI	100000
22	CHUNOBA GOLD PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEWARI (221328)	PALI	100000
23	GURMEET SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHERUWALA (211969)	GANGANAGAR	90000
24	CHANDRAPATI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	85000
25	DHARMVEER SINGH POONIA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL GWALISAR (474368)	CHURU	80000

Rajasthan Education Department

26	KISHNA RAM MANDA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BOTHIYAWAS (215466)	CHURU	80000
27	KHUMA RAM BERA	GOVT. SECONDARY SCHOOL JEWALIYAWAS (227188)	NAGAUR	75850
28	RAMESHWAR LAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ROON (220032)	NAGAUR	75760
29	RAMCHANDRA SINGH CHAUDHARY	GOVT. SECONDARY SCHOOL PAYLI (219806)	NAGAUR	75750
30	RICHHPAL GIRI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL SHIVNAGARI (410192)	NAGAUR	66000
31	NIRMALA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL SHIVNAGARI (410192)	NAGAUR	66000
32	THE INDIA CEMENTS LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JHALO KA GADA (225320)	BANSWARA	60000
33	BALRAM SAHARAN	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KAMASAR (419494)	CHURU	60000
34	MUMTAJ ALI RATHOR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHUDDI (215224)	CHURU	60000
35	MADAN LAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KANT (211622)	JHUNJHUNU	52050
36	CHANDRA SINGH DHAKA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DADIYA (213378)	SIKAR	51000
37	HARPHOOL SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DADIYA (213378)	SIKAR	51000
38	CHANDA JANGIR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHADHADAR (213281)	SIKAR	51000
39	SUNITA ARYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DADIYA (213378)	SIKAR	51000
40	VISHAL SINGH RATHORE	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	51000
41	PRATAP SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHALKOI BANIROTAN (215364)	CHURU	51000
42	LAXMAN SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BALI JASSAKHERA (222700)	RAJSAMAND	51000
43	BANWARI LAL SWAMI	GOVT. SECONDARY SCHOOL SURPURA (212375)	HANUMANGARH	51000
44	MAHENDRA SINGH	GOVT. GIRLS SECONDARY SCHOOL CHANGOI - MIKHALA (215164)	CHURU	51000
45	RAMA KANT TANTIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 12 AG MIRJAWALIMER (211160)	HANUMANGARH	51000
46	LOKESH BHATT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ARNOD DISTRICT PRATAPGARH (217792)	PRATAPGARH	50000
47	SUSHILA DEVI	GOVT. GIRLS UPPER PRIMARY SCHOOL SINGHASAN PIPRALI (489934)	SIKAR	50000
48	NIROJ KHANNA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL VALLABH KURABAD UDAIPUR (223286)	UDAIPUR	50000
49	JAYAKRISHNA TAPARIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MUNDRA (215498)	CHURU	50000
50	SANJAY KUMAR BHARGAVA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MITHADI (219948)	NAGAUR	50000
51	RATAN LAL SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HINGORIYA (224220)	CHITTAURGARH	50000
52	SHYAM LAL SHUKWAL	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL PUTVADIYA (465243)	CHITTAURGARH	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–फरवरी 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	209	5633356
2	JHUNJHUNU	209	2131287
3	NAGAUR	208	1691823
4	SIKAR	124	1113538
5	BANSWARA	1021	784242
6	AJMER	110	640683
7	UDAIPUR	479	370457
8	CHITTAURGARH	91	361542
9	PALI	372	344070
10	BARMER	195	325269
11	JODHPUR	84	313810
12	KOTA	118	284938
13	GANGANAGAR	114	269134
14	JAIPUR	82	265024
15	RAJSAMAND	179	263832
16	BUNDI	69	215927
17	SAWAIMADHOPUR	39	196955
18	HANUMANGARH	50	186840
19	TONK	74	181172
20	ALWAR	68	173111
21	BHILWARA	56	172760
22	JHALAWAR	50	171740
23	DUNGARPUR	37	170971
24	PRATAPGARH	25	163250
25	BARAN	35	150220
26	DHAULPUR	41	133500
27	DAUSA	29	108700
28	BIKANER	19	102800
29	BHARATPUR	80	86336
30	JALOR	19	81280
31	KARAULI	35	41600
32	JAISALMER	33	23350
33	SIROHI	7	10560
	Total	**4361**	**17164077**

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थाओं/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्धेश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए। फरवरी 2022 में **22 करोड़ 47 लाख से अधिक की लागत के कुल 28 Projects** स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects में से 01 लाख से अधिक की लागत वाले Projects निम्नानुसार है :-

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/व्यय (लाख में)
1	श्री कल्याण सेवा संस्थान	880	राउमावि फूलिया कलां, जिला-भीलवाड़ा में नवीन विद्यालय भवन का निर्माण	600.00
2	श्रीमती रूमा देवी, ग्रामीण विकास एवं चेतना संस्थान, बाड़मेर	906	राउमावि चवां, बाड़मेर में स्पोर्टस कॉप्लेक्स का निर्माण	232.00
3	श्री जसवंत सिंह बालावत	882	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नरसाना ब्लॉक-सायला, जिला-जालौर में नवीन विद्यालय भवन का निर्माण	230.00
4	श्रीमती शकुन्तला देवी रतनचन्द खिवेसरा चेरिटेबल ट्रस्ट	877	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आकोली, जिला-जालौर में नव विद्यालय भवन का निर्माण	205.00
5	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल लिमिटेड	870	कोटा एवं बारां जिले के कुल 10 राजकीय विद्यालयों में मरम्मत, रंग-रोगन एवं चारदिवारी के कार्य	169.03
6	नागरिक विकास समूह, श्री विजयनगर	900	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री विजयनगर में अतिरिक्त कक्षा-कक्ष, प्रधानाचार्य कक्ष, शौचालय-मूत्रालय इत्यादि निर्माण कार्य	150.00
7	श्रीमती गीता देवी W/o श्री मनरूप जी सोनी	902	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मडिया, जिला-सिरोही में विद्यालय भवन का जीर्णादार/मरम्मत, मुख्यद्वार, फर्नीचर, हरति वाटिका, सी.सी.टी.वी. इत्यादि कार्य	117.75
8	रामकिशन मिशन, न्यू दिल्ली	913	राज्य के 200 कस्तूरबा गांधी व मेवाल आवसीय विद्यालयों में प्रोजेक्टर की स्थापना	94.50
9	जंवरी लाल चैनरूप बैद चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहटी	879	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, परिहारा, रतनगढ़ चुरू के विद्यालय भवन का निर्माण कार्य	94.30
10	श्री महबूब बक्स, प्रेसिडेट रोटरी क्लब रायपुर मारवाड़	888	दरबार सेठ चम्पालाल बोहरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रायपुर मारवाड़, जिला-पाली में 10 कक्षा-कक्ष एवं सीढियों का निर्माण कार्य	80.00
11	मयूर यूनिकोटर्स लिमिटेड, जयपुर	889	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जैतपुरा, जयपुर में कक्षा-कक्ष का निर्माण	76.52
12	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल लिमिटेड	895	कोटा एवं बारां जिले के कुल 48 राजकीय विद्यालयों में कम्प्यूटर लैब का कार्य	56.00
13	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल लिमिटेड	869	कोटा जिले के विद्यालयों में सोलर पैनल, विज्ञान लैब मय उपकरण की स्थापना	43.00
14	श्री मोतीलाल रायचन्द	862	सेठ श्री मोतीलाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लापोद, जिला-पाली में कक्षा-कक्षों का निर्माण	36.00
15	अजमेर राउण्ड टेबल इण्डिया-टेबल नम्बर 291	896	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, चांदियावास (गेगल) अजमेर में 03 कक्षा-कक्षों का निर्माण कार्य	18.00
16	कमलाबने पुंजलाल दवे चैरिटेबल ट्रस्ट	901	श्रीमती रूपीबाई डूगरसी प्रेमजी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रोहिडा जिला- सिरोही में 02 कक्षा-कक्ष का निर्माण	13.50
17	श्री दलीचंद रायचंद जैन (चंदन परिवार)	904	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, विरोल बड़ी, जिला-जालौर में 02 कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य	13.00
18	बिरला कॉरपोरेशन लिमिटेड	760	चित्तौडगढ़ जिले के 06 राजकीय विद्यालयों में भवन, कक्षा-कक्ष एवं शौचालय मरम्मत के विविध कार्य	09.50

Rajasthan Education Department

19	श्री प्रकाश चंद एण्ड कम्पनी	890	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आहोर, जिला-जालौर में टीन शेड एवं मरम्मत का कार्य	06.00
20	श्री शंकरलाल विश्नोई	897	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, किशनपुरा उतराद्धा, जिला-हनुमानगढ़ में प्रधानाचार्य कक्ष का निर्माण	03.25
21	श्री प्रकाश चंद एण्ड कम्पनी	891	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आहोर, जिला-जालौर में प्याउ का निर्माण	03.00
22	श्री रामप्रकाश गुर्जर	881	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाजू जिला-नागौर में कक्षा-कक्ष का निर्माण	03.00
23	आरएक्स लोजिक्स कारपोरेशन इण्डिया लिमिटेड, नोएडा	873	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नावांशहर (नागौर) में 05 कम्प्युटर एवं पेन ड्राइव का सहयोग	03.00
24	श्री कुशालाराम	878	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दुदौली, जिला-नागौर में मुख्य द्वार का निर्माण	02.38
25	श्री अजयराज छाजेड़	871	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आडसर, श्रीडूगरगढ़ में 60 मेज एवं स्टूल का सहयोग	01.31
26	श्री सतीश राम एवं श्री बजरंग लाल	875, 874	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाजू जिला-नागौर में मंच का निर्माण कार्य	01.20

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि. बामसीन, पं. स. समदड़ी को श्री समाराम चौधरी द्वारा विद्यालय को एक सौफा सेट भेंट जिसकी लागत 25,000 रुपये है। श्री जेठाराम प्रजापत से एक स्वचालित विद्युत घंटी प्राप्त जिसकी लागत 21,000 रुपये, श्री खंगाराम सुथार से आफिस टेबल प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री मंगलाराम कोन्दली से एक प्रिंटर प्राप्त जिसकी लागत 22,000 रुपये।

अलवर

रा.उ.मा.वि. माजरा ढाकोड़ा, पं.स. बानसूर में श्रीमती कौशल्या देवी श्रीराम गुर्जर, श्री रामावतार, श्री लेखराम, श्री जसवन्त सिंह पुत्र श्री राम गुर्जर से 6.5 एयर भूमि प्राप्त, श्रीरामपाल पुत्र श्री तेजा गुर्जर 1.75 एयर भूमि प्राप्त, स्व. श्रीमती बादामी देवी को पुत्री श्रीमती कैलाशी देवी पत्नी श्री कैलाश चन्द बजाड़ से 1.75 एयर भूमि प्राप्त, सर्वश्री भगवाना राम, भौरेलाल, नेतराम पंच पुत्र लीलाराम, श्रीमती कौशल्या देवी पत्नी श्री रामनिवास, विक्रमसिंह महिपाल पुत्र रामनिवास गुर्जर से 1.75 एयर भूमि प्राप्त जिसकी लागत मूल्य 25 लाख रुपये से अधिक है।

सवाई माधोपुर

रा.उ.मा.वि. डूँगरवाड़ा तह. बामनवास को श्री कुंजीलाल मीना (I.A.S.) द्वारा अपने माता-पिता की पुण्यस्मृति में विद्यालय में एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट, श्री प्यारे लाल मीना द्वारा 2.50 लाख रुपये की लागत से एक हॉल बनवाया गया, श्रीफल मीना द्वारा विद्यालय में 5 CCTV कैमरे लगवाए जिसकी लागत मूल्य 21,000 रुपये, श्री रामकेश मीना से एक इन्वर्टर प्राप्त हुअस, श्री नाहर सिंह मीना से विद्यालय में 100 वर्ग फीट की मोटी ग्रीन मैटिंग बिछवाई गई, विद्यालय स्टाफ द्वारा 15 लोकर बॉक्स लगवाया गया।

चित्तौड़गढ़

रा.मा.वि. बामनिया को वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती इन्डा त्रिपाठी ने अपने सेवानिवृत्त पर विद्यालय को एक इन्वर्टर एवं बैटरी भेंट जिसकी लागत मूल्य 22,350 रुपये।

झुंझुनूं

हमारे भामाशाह

सेठ खूबचन्द बैजनाथ काजड़िया रा.बा.उ.मा.वि. काजड़ा को सेठ हरनारायण दास ईश्वर दास काजड़िया ट्रस्ट कोलकाता से लेपटॉप एवं प्रिंटर प्राप्त जिसकी लागत 49,000 रुपये, श्रीमती विमला पूर्व प्र.अ. व श्रीमती प्रेमलता पूर्व व.अ. से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 11,500 रुपये। **शहीद राजेश कुमार रा.मा.वि. झांझोत** में श्री कमल सिंह घायल द्वारा मंच पर टीन शैड का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत एक लाख दो हजार रुपये व विद्यालय का मुख्यद्वार का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत एक लाख पाँच हजार रुपए।

भरतपुर

रा.उ.मा.वि. शक्करपुर (रूपवास) में श्री राकेश कुमार शर्मा (अध्यापक लेवल-1) एवं उनकी माताजी श्रीमती प्रेमवती देवी द्वारा कक्षा-कक्ष मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 6,00,000 (छः लाख) रुपये।

पाली

रा.उ.मा.वि. सांगावास में डी.आर. राँका चेरिटेबल ट्रस्ट निमाज हाल मुकाम बेंगलूर द्वारा नव निर्मित पाँच कक्षा-कक्ष (बरामदा सहित निर्माण करवाया गया जिसकी अनुमानित लागत 40 लाख रुपये, मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजनान्तर्गत भामाशाह श्री जोगाराम एकलिया द्वारा 3.60 लाख रुपये व बालूराम भाटी (अणकियर) द्वारा 3.60 लाख रुपये का सहयोग कर दो कक्षा-कक्ष का निर्माण करवाया गया।

नागौर

रा.बा.उ.मा.वि. ईडवा को श्री पवन जी मूँदड़ा के द्वारा 15 अगस्त, 2021 को अपनी स्व. माता की पुण्यस्मृति में विद्यालय को 50 टेबल-स्टूल दानस्वरूप सप्रेम भेंट

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अप्रेल, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा

अप्रेल, 2022

निकिता, कक्षा-7
श्रीमती राधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
बींजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर

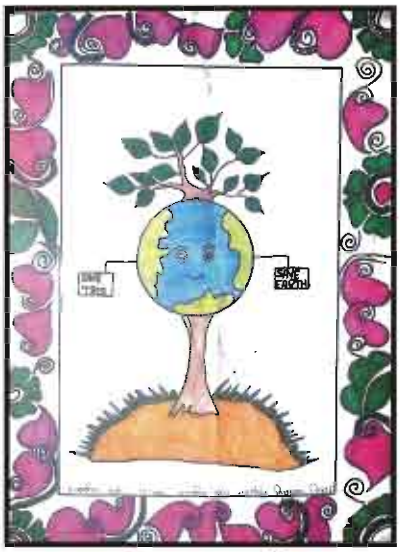

आसमीन, कक्षा-11 वाणिज्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निराधनूं, झुंझुनू

पायल सैनी, कक्षा-11 वाणिज्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निराधनूं, झुंझुनू

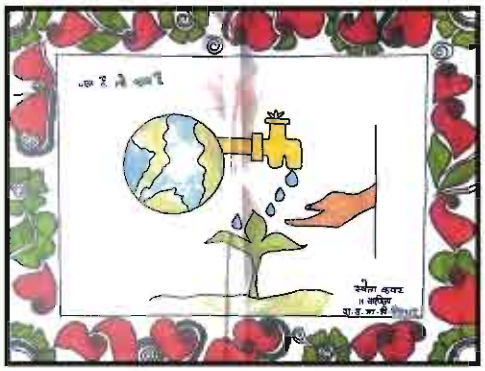

स्वेता कंवर, कक्षा-11 वाणिज्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निराधनूं, झुंझुनू

खुशबू, कक्षा-11 वाणिज्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निराधनूं, झुंझुनू

करुणा, कक्षा-7
राजकीय महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम) माध्यमिक विद्यालय
घरड़ाना खुर्द, झुंझुनू

पायल खत्री, कक्षा-8
राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय रायला, भीलवाड़ा

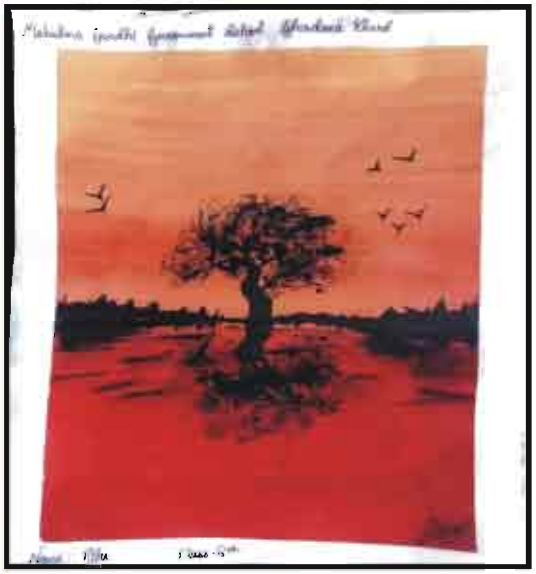

रितू, कक्षा-6
राजकीय महात्मा गांधी (अंग्रेजी माध्यम)
विद्यालय घरड़ाना खुर्द, झुंझुनू

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • अप्रेल, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अप्रेल, 2022 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5–6 तारीख

चित्र वीथिका : अप्रेल 2022

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीरामसर, बीकानेर के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला जी के कर कमलों से पुरस्कार वितरण एवं माननीय मंत्री महोदय द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों का अवलोकन।

श्री पवन कुमार गोयल, शिक्षा निदेशक के रूप में

श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा) के रूप में

सौम्य एवं ऊर्जावान व्यक्तित्व के धनी श्री पवन कुमार गोयल का शिक्षा निदेशक से अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा) तक का संवेदनशील एवं प्रेरणास्पद सफर।

श्रीमती सुन्दर बाई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पीपलिया कलां, पाली के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में श्री काना राम निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए एवं उपस्थित शाला स्टाफ, अभिभावक व विद्यार्थीगण।